मुल्ला वजही

कुतुब मुश्तरी

सम्पादक

विमला वाघ्रे एम. ए.

नसीरुद्दीन हाशमी

दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद

मुल्ला वजही
कुतुब मुशतरी

८१९.११
वज | कु

मुल्ला वजही

●

कुतुब मुशतरी

डा० बाबूराम [illegible]
द्वारा प्रदत्त

सम्पादक
विमला वाघ्रे
नसीरुद्दीन हाशमी

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्तूबर १९५३ को हुई । समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

(१) डाक्टर बी. रामकृष्णराव
(मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष

(२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस.
(शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष

(३) डा० एस. एम. क़ादरी ज़ोर एम-ए. पी. एच. डी.
(मन्त्री इदारे अदबियाते उर्दू) उपाध्यक्ष

(४) श्रीमती विमल वाघ्रे एम-ए. मन्त्री

(५) श्री श्रीराम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा)
(लेक्चरार गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) सदस्य

(६) श्री गोपालराव अपसिंगीकर
(लेक्चरार लॉ कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(७) श्री वंशीधर जी विद्यालङ्कार
(अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए.
(लेक्चरार निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघ्रे बी-ए. एल-एल. बी.
(एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) ,,

(१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी ,,

(११) प्रोफेसर अब्दुल क़ादर सरवरी एम-ए. एल-एल. बी.
(अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीक़ी एम-ए. एल-एल. बी.
(प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१३) प्रोफेसर हुसेन अली खाँ
(भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१४) श्री हमीदुद्दीन शाहद एम-ए.
(लेक्चरार चादरघाट कॉलेज) ,,

(१५) फजलुर्रहमान एम-ए.
(भूतपूर्व शिक्षा संचालक, हैदराबाद) ,,

इस समिति ने निश्चय किया है :—

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपीं उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है। हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त कराने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में २००० रु० दिए हैं और इदारे अदबियाते उर्दू ने ७५० रु.। श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठकों का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं। प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुझाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

विमला वाघ्रे, मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

भूमिका

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास में हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नहीं कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं—सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमों और दूसरी बहुत सी बातों में दोनों अभिन्न हैं—इन दोनों भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह ज़रूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनों का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी को वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली में जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्व-पूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद में दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफ़िया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इदारे अदबियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयों में दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग बहादुर के संरक्षण में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद में प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्त-लिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि "दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति" नाम से हैदराबाद में एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों में उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वांगीण पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है।

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों से हुआ है। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि में प्रकाशित नहीं हुए हैं उन्हें इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनों भाषाओं की शब्दावली में भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की हैं, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य सिद्ध होंगी, वहाँ उन से विशेषज्ञों और साहित्य प्रेमियों का मनोरंजन भी होगा।

मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

डाक्टर बी० रामकृष्णराव
अध्यक्ष
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

निवेदन

वजही, दक्खिनी साहित्य के निर्माताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपनी साहित्य रचना और असाधारण विद्वत्ता के कारण वजही मृत्यु पर्यन्त कुतुबशाहों का प्रशंसा पात्र रहा।

इस ख्यात नामा साहित्यिक के विषय में अब तक विशेष सामग्री प्रकाश में नहीं आई है। कुतुबशाहों के इतिवृत से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि इस वंश के चार शासकों का समय वजही ने देखा। इब्राहीम कुली कुतुबशाह के समय वह जनता के सामने आता है। धीरे धीरे वह दरबार में प्रवेश पाता है। कुतुब वंश का साहित्य प्रेमी शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह गद्दी पर बैठा और ३७ वर्ष की आयु में ही उसका निधन हो गया। मुहम्मद कुतुबशाह के पश्चात् अब्दुल्ला कुतुबशाह गद्दी पर बैठा। अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय में वजही का देहान्त हुआ।

वजही की तीन पुस्तकें उपलब्ध हैं—कुतुब मुश्तरी, ताजुल हक़ायक़ और सबरस। इनके अतिरिक्त एक छोटा सा रिसाला "रिसाला अलीफ़ बे" नाम का मिला है, जिसे पं० श्रीराम जी शर्मा ने नागरी में प्रकाशित किया है। "सबरस" वजही की सब से श्रेष्ठ रचना है। यह कहने में अत्युक्ति नहीं होगी कि उस समय तक हिन्दी गद्य की इतनी अच्छी पुस्तक नहीं लिखी गई थी। यदि हिन्दी का प्राचीन तम विकसित गद्य हमें कहीं मिल सकता है तो केवल 'सबरस' में। 'सबरस' सब से पहले डाक्टर अब्दुलहक़ के प्रयत्नों से सन् १६२४ में 'रिसाला उर्दू' में क्रमशः प्रकाशित हुआ। डा० अब्दुलहक़ ने इसे सम्पादित करके पुस्तकाकार में भी प्रकाशित किया है। अब दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति इसे नागरी लिपि में प्रकाशित कर रही है। 'सबरस' के प्रकाश में आने से उर्दू के विद्वानों का ध्यान वजही की ओर गया। लेखक ने सबरस को सन् १६६३ में समाप्त किया। इस से यह ज्ञात होता है कि वजही १६६३ के बाद भी कुछ दिन जीवित था। इब्राहीम कुतुबशाह २० वर्ष की आयु में १६०७ में गद्दी पर बैठा और १६३७ में उस का देहान्त हुआ। वजही इब्राहीम का सामन्त था। उसने इन्हीं दिनों कुतुब मुश्तरी की रचना आरम्भ कर दी थी। अनुमान लगाया जाता है कि वजही का जन्म १५८८ और १५६१ के लगभग हुआ होगा। इस की मृत्यु १६६३ के बाद हुई अतः वजही १०० वर्ष से कुछ अधिक जीवित रहे।

"कुतुब मुश्तरी" कालक्रम से वजही की पहली रचना है। यह इब्राहीम कुतुबशाह के समय में लिखी गई। कवि को राज्याश्रय प्राप्त था अतः उसने युवराज मुहम्मद कुली को अपने ग्रन्थ का नायक चुना। जब यह पुस्तक लिखी गई उस समय युवराज यौवन के प्रथम सोपान में पग रख चुके थे। उन का समय विलासिता में बीतने लगा

था। इस पुस्तक पर वजही को युवराज से कोई पुरस्कार मिला या नहीं, यह ज्ञात नहीं किन्तु इस में सन्देह नहीं कि वजही को इस पुस्तक के कारण समकालीन साहित्यिकों का आदर प्राप्त हुआ।

वजही को अपनी प्रतिभा और कला पर काफ़ी अभिमान था। क़ुतुब मुश्तरी में एक स्थान पर कवि ने स्वयं लिखा है:—

न मुँज जोड़ना थाँव असमान कूँ,
अजब कुच पहुँच है मेरे ज्ञान कूँ।
हुनर कियाँ हैं यो बारीकियाँ लाफ़ नईं,
वो आदमी नहीं जिस में इन्साफ़ नईं।
हरेक कह के देकने होर ज़ोर,
हमीं इस ते भी ढूँडते कुच होर।

वजही को दक्खन से विशेष प्रेम था। उसने इस पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है:—

दखन सा नईं ठार संसार में,
पंच फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।
दखन है नगीना अंगूठी है जग,
अँगूठी कूँ हुरमत नगीना है लग।
दखन मुल्क कूँ धन अजब साज है,
के सब मुल्क सर होर दखन ताज है।
दखन मुल्क मोतीच ख़ासा अहै,
तिलंगाना इस का ख़ुलासा अहै।

दक्खिनी के अन्य कवियों ने फारसी के प्रेम काव्यों का अनुवाद किया है। बहुत कम ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी रचना के लिए मौलिक कथा चुनी हो। वजही ने क़ुतुब मुश्तरी के लिए स्वतन्त्र कथानक चुना। इस पुस्तक का सारांश इस प्रकार से है:—

आरम्भ में कवि ने ईश्वर की स्तुति की है—उस के बाद हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा में कुछ पद हैं। इस के बाद कवि ने अपने आश्रयदाता इब्राहीम कुतुबशाह की तारीफ की है। ईश्वर, हज़रत मुहम्मद और आश्रयदाता की प्रशंसा के बाद कथा शुरू होती है।

कवि ने अपने नायक मुहम्मद क़ुली के बचपन से कथा शुरू की है। मुहम्मद क़ुली के बाल्यकाल का वर्णन करते हुए कवि ने बताया है कि कैसे मुहम्मद क़ुली पढ़ने लिखने में बहुत चतुर था, यहाँ तक कि वह अपने बाप से भी बढ़ कर था।

कहानी का आरम्भ कवि ने उस समय किया है जब एक दिन राजकुमार मुहम्मद कुली एक महफ़िल बुलाता है। सामन्तों के साथ राजकुमार नृत्य और मद्यपान में पूरी रात बिता देता है। आधी रात बीतने पर युवराज की कुछ आँख लगी ही थी कि उस ने स्वप्न में एक सुन्दर स्त्री को देखा। स्वप्न में उसकी सुन्दरता को देख कर मुहम्मद कुली मुग्ध हो गया। जब नींद खुली तो उस की विकलता का ठिकाना नहीं था। युवराज की इस विकलता का पता जब इब्राहीम को चला तो वह बहुत चिन्तित हुआ। सामन्तों के मश्विरे से इब्राहीम ने एक प्रसिद्ध चित्रकार अतारिद को बुलवाया। अतारिद ने युवराज के स्वप्न का वर्णन सुन कर—बंगाल की राजकुमारी मुश्तरी का चित्र दिखाया। मुहम्मद कुली चित्र को देख कर, अपनी स्वप्न की प्रेमिका को पहचान लेता है और तत्काल उस की प्राप्ति के लिए जाने को उत्सुक होता है। इब्राहीम और उस की पत्नी मुहम्मदकुली को बहुत समझाते हैं पर वह नहीं मानता और अतारिद को साथ ले कर बंगाल यात्रा के लिए चल देता है। मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मार्ग में उस की भेंट एक राजकुमार मिरींख़ ख़ाँ से होती है जो मुश्तरी की छोटी बहन ज़ुहरा को प्राप्त करने के लिए अपने घर से निकला था किन्तु मार्ग में एक जिन का क़ैदी हो गया था। युवराज मुहम्मद कुली उस जिन को मार कर मिरींख़ ख़ाँ की रक्षा करता है और दोनों एक ही मंजिल पर पहुँचने के लिए बढ़ते हैं। आगे बढ़ने पर उनकी भेंट राजकुमारी महताब से हुई। महताब राजकुमार को अतिथि बनाती है। अतारिद अकेला ही बंगाल पहुँचता है और मुश्तरी के महल की सजावट करता है। महल की सजावट करते समय वह एक स्थान पर राजकुमार कुली कुतुब शाह का चित्र भी बनाता है। उस चित्र को देख राजकुमारी मोहित हो जाती है। यह समाचार जब युवराज को मिला तो वह तुरन्त बंगाल चला जाता है। यहाँ वह मुश्तरी के प्रेम में अपनी सुध-बुध भूल जाता है। अतारिद उसे समझाता है। मुहम्मद कुली मुश्तरी से सलाह कर मिरींख़ ख़ाँ का विवाह ज़ुहरा से करा देता है और बंगाल का शासन मिरींख़ ख़ाँ को दे कर वह मुश्तरी के साथ गोलकुण्डा लौटता है और आनन्द से रहने लगता है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह का प्रेम बहुत ही दृढ़ और अविचल था। उस का पिता इब्राहीम कुतुबशाह अपने युवराज के मनोरंजन के लिए अनेक रूपवती स्त्रियों को भेजा करता था। इस का जिक्र कवि ने अपनी मसनवी में इस प्रकार से किया है:—

ब्राहीम कुतुबशाह मजलिस सिंगार,
किए मुस्तइद मो पै इशरत अपार।
जितियाँ ख़ूब ख़ुश शक्ल थियाँ सुन्दरियाँ,
सो करनाटक होर गोर गुजरात कियाँ।

जो चीन होर माचीन के थे बुताँ,
सो ख़ुशतबा ख़ुशफ़हम ख़ुश सूरताँ।
हर यक ख़ूब महबूब बुत फ़ारसी,
बदन ज्यूँ जलती अछे आरसी।

इन हूर परियों में एक भी ऐसी नहीं निकली जो मुहम्मद कुली का मन जीत सके:—

सो नेह शाह कूँ एक का सद हुआ,
मंतर था उनो का सो सब रद हुआ।
के उस शह के दिल में सुधन महर था,
न था महर तो बातिलुस्सहर था।
जो एकस कूँ जिस दिल मने ठार अछे,
ज़रूरत है जो दूसरा वहाँ भार अछे।

जहाँ तक 'कुतुब मुश्तरी' की कथा का सम्बन्ध है वह इतिहास से मेल नहीं खाती। मुहम्मद कुली कभी बंगाल गया यह प्रमाणित नहीं है। मुश्तरी के विषय में भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। कवि ने सारी कथा काल्पनिक ढंग से उपस्थित की है। केवल मुहम्मद कुली ऐतिहासिक व्यक्ति है और सारे पात्र कल्पना के आधार पर तैयार किये गये हैं।

जहाँ तक इतिहास का सम्बन्ध है मुहम्मद कुली का प्रेम दरबार की एक नर्तकी भागमती से था। भागमती, गोलकुण्डा से कुछ दूर चेंचलम ग्राम में रहती थी। इब्राहीम के जीवन काल में मुहम्मद कुली अपनी प्रेमिका से चोरी छिपे मिलने जाया करता था। किन्तु जब वह सिंहासन पर बैठा उसने भागमती से विवाह कर लिया। अपनी इस प्रेयसी के नाम से उस ने मूसा के उस पार एक नगर बसाया जिस का नाम 'भागनगर' रखा। भागनगर शीघ्र ही दक्षिण का बड़ा नगर बन गया। मुहम्मद कुली ने इस नगर के बीचों बीच चारमीनार नाम की इमारत बनवाई जो आज भी अपनी सुन्दरता तथा विशालता के कारण प्रसिद्ध है। मुहम्मद कुली भागमती से कितना प्यार करता था यह इसी से प्रमाणित होता है। कुछ दिन बाद भागमती को "हैदर महल" की उपाधि दी गई, तब भागनगर का नाम भी बदल कर हैदराबाद कर दिया गया। कवि ने "कुतुब मुश्तरी" की नायिका, मुश्तरी को चित्रित करने में इस ऐतिहासिक कथा का आधार कहाँ तक लिया पता नहीं। यह सन्देह होता है कि कवि ने अपनी कल्पना से काम लेते हुए भागमती को ही मुश्तरी के रूप में चित्रित किया हो।

वजही ने इस पुस्तक में अपनी प्रतिभा का परिचय स्थान स्थान पर दिया है।

उस की उपमाएँ देखने लायक हैं। कथानक को वह बड़ी खूबी से आगे बढ़ाता है। पाठक को इस पुस्तक के पढ़ने से काव्य और उपन्यास का आनन्द साथ साथ मिलता है। पुस्तक से उस समय की अनेक सामाजिक रूढ़ियों का पता चलता है।

कुतुब मुश्तरी १६६६ ई० १०१८ हि० में समाप्त हुई। कवि ने अन्त में लिखा है :—

तमाम इस किया दीस बारा मने,
सन यक हज़ार होर अठारा मने।

कुतुब मुश्तरी की दो हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति इण्डिया आफ़िस, लन्दन में और दूसरी डाक्टर अब्दुलहक़ के पुस्तकालय में है। लन्दन वाली प्रति का विस्तृत विवरण श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने अपनी 'यूरोप में दक्खिनी मख़तूतात' नामक पुस्तक में दिया है। डाक्टर अब्दुलहक़ ने इण्डिया आफिस की प्रति के आधार पर १९३९ में फारसी लिपि में "कुतुब मुश्तरी" को प्रकाशित किया। प्रस्तुत पुस्तक इसी आधार पर तैयार की गई है। इस में कुछ अंश बाद में जोड़ा गया है। डा० अब्दुलहक़ ने यह अधिक अंश, अपनी निजी प्रति से लिया है। इस अधिक अंश का सम्बन्ध वहाँ से है जब युवराज मुहम्मद कुली मिर्रीख़ खाँ की रक्षा करता है और उस के साथ आगे बढ़ता है। आगे शहज़ादा दरया की खोज में निकलता है। इस अधिक अंश के पश्चात् ही कथा का सम्बन्ध महताब की भेंट से पुनः जुड़ता है। इस अधिक अंश में कई स्थानों पर डा० अब्दुलहक़ साहब ने रिक्त स्थान छोड़ दिये हैं। आप की निजी प्रति में यह अंश स्पष्ट नहीं है। अतः हमने भी वैसे ही, रिक्त स्थान छोड़े हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के तीन शब्दों के विषय में यहाँ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। पुस्तक के कई स्थानों पर उर्दू के 'लाम' और 'ए' से बना हुआ शब्द आया है जिस का उच्चारण 'ली' होता है। हम ने सभी स्थानों पर इसे 'ली' ही लिखा है। पुस्तक के छपने तक यह पता नहीं चल सका कि 'ली' किस भाषा का शब्द है। जब पुस्तक छप गई तो पता चला ग्रामीण मराठी में 'लइ' शब्द का व्यवहार होता है जिस का अर्थ है 'बहुत'। इस पुस्तक में भी जहाँ जहाँ 'ली' शब्द आया है वहाँ बहुत के अर्थ में ही प्रयुक्त है। अतः पाठक सर्वत्र 'ली' के स्थान 'लइ' समझें।

इसी प्रकार से पुस्तक में प्रयुक्त होने वाले राजवट और दुराई शब्द भी मराठी के हैं। मराठी में राजवट का अर्थ है शासन काल अथवा शासन। दुराई का अर्थ हिन्दी के दुहाई शब्द से मिलता जुलता है। मराठी के कोषकारों ने उसे दुर+हार से बनाया है।

हो सकता है इसी प्रकार की कुछ त्रुटियाँ और रह गई हों जिन के लिए

हम क्षमा प्रार्थी हैं।

अन्त में श्री श्रीराम शर्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने, व्यस्त रहते हुए भी पूरी पुस्तक का अवलोकन किया और आवश्यक सुझाव दिये।

फ़ारसी लिपि से नागरी लिपि में किसी पुस्तक का रूपान्तर करते समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी लिए पुस्तक में कुछ स्थानों पर जाने अनजाने कुछ त्रुटियाँ रह सकती हैं।

बशीरबाग़ रोड़
हैदराबाद दक्षिण.

विमला वाघ्रे
नसीरुद्दीन हाशमी
मार्गशीर्ष कृष्ण १ संवत् २०११
११-११-५४

सूची

क्र. सं.	नाम	पृष्ठ संख्या

भागामती

हम्द

तूँ अव्वल तूँ आखिर तूँ क़ादिर[1] अहै,
तूँ मालिक तूँ बातिन[2] तूँ ज़ाहिर अहै।

तूँ मुहसी[3] तूँ मबदी[4] तूँ वाहिद[5] सच्चा,
तूँ तव्वाब[6] तूँ रब[7] तूँ माजिद[8] सच्चा।

तूँ बाक़ी तूँ मुक़सिम[9] तूँ हादी[10] तूँ नूर,
तूँ वारिस[11] तूँ मुनइम[12] तूँ बिर[13] तूँ सबूर।

तूँ सत्तार[14] होर तूँ सो ज़ब्बार[15] है,
तूँ वहहाब[16] होर तूँ सो कह्हार[17] है।

तूँ रज्ज़ाक़[18] है होर तूँ ही अज़ीम[19],
तूँ फत्ताह[20] है होर तूँ ही अलीम[21]।

तूँ कुद्दूस[22] है होर तूँ ही समी[23],
तूँ क़य्यूस[24] है होर तूँ ही बदी[25]।

तूँ राफ़े[26] अहै होर तूँ ही अली[27],
तूँ जामे[28] अहै होर तूँ ही वली[29]।

तुँ हीं है मालिक[30] होर तुँ हीं सलाम[31],
तुँ हीं है मुहिमिन[32] तुँ हीं नेक नाम।

तुँ हीं है मुइज़्ज़[33] होर तुँ हीं बसीर[34],
तुँ हीं है मुज्जिल[35] होर तुँ हीं खबीर[36]।

---

१ बनाने वाला २ गुप्त ३ गिनने वाला ४ सृजनहार ५ एक ६ पश्चाताप को स्वीकार करने वाला ७ पालनहार ८ श्रेष्ठतम ६ बटवारा करने वाला १० मार्गदर्शक ११ परम्परा को बनाए रखने वाला १२ नेकी देने वाला १३ चमकना १४ अपराध क्षमा करने वाला १५ सख्ती करने वाला १६ दाता १७ गालिब, सब से बढ़ कर १८ अन्नदाता १६ श्रेष्ठतम २० प्रकट करने वाला २१ जानकार २२ पवित्र २३ श्रोता २४ क़ायम रहने वाला २५ आविष्कारक २६ उन्नति करने वाला २७उन्नतिशील २८ जमा करने वाला २६ सहायक ३० बादशाह ३१ रक्षक ३२ निगाहबान, नज़र रखने वाला ३३ इज़्ज़त देने वाला ३४ देखने वाला ३५ जलील करने वाला ३६ ख़बर रखने वाला।

तुँ हीं हाफ़िज़[1] है होर तुँ हीं हबीब[2],
तुँ हीं हक़[3] है होर तुँ हीं मुतीब[4]।

तुँ हीं है खलील[5] होर तुँ हीं करीम[6],
तुँ हीं है अज़ीज़[7] होर तुँ हीं हकीम[8]।

तुँ ही बासिल[9] है होर तुँ ही क़रीब,
तुँ ही क़ाबिज़[10] है होर तुँ ही मुजीब[11]।

तुँ ही है लतीफ़[12] होर तुँ ही ग़फ़ूर[13],
तुँ ही है हफ़ीज़[14] होर तुँ ही शुकूर[15]।

तुँ ही है हलीम[16] होर तुँ ही शदीद[17],
तुँ ही है कवी[18] होर तुँ ही मजीद[19]।

तुँ ही हई[20] होर तूच सत्तार[21] है,
तुँ ही मुही[22] होर तूँच गफ़्फ़ार[23] है।

तुँ ही वाहद है होर तुँ ही अहद,
तुँ ही मुक़्क़सित[24] है होर तुँ ही समद।

तुँ ही है वकील होर तुँ ही शहीद,
तुँ ही है मुईद होर तुँही हमीद।

रूफ़[25] होर रशीद[26] होर माने[27] तुँ ही,
वदूद[28] होर ग़नी होर नाफ़े तुँ ही।

कबीर होर वासद है सुभान तूँ,
करीम होर रहीम होर रहमान तूँ।

---

१ देखने वाला २ मित्र ३ जाहिर और बातिन की खबर रखने वाला ४ अमर ५ मित्र ६ दाता ७ ग़ालिब ८ हुकुम करने वाला ९ अन्नदाता १० परेशान करने वाला ११ दुआ को स्वीकार करने वाला १२ दूरदर्शी १३ बख़शने वाला १४ नज़र रखने वाला १५ शुक्र-गुज़ारों की इज्जत करने वाला १६ सहनशील १७ विशेषतया अधिक करने वाला १८ शक्ति-वान १९ ऊँची जात वाला २० अमर २१ गुनाह क्षमा करने वाला २२ जिन्दा करने वाला २३ बख़शने वाला २४ ताक़तवर २५ महरबान २६ नेक राह पर चलने वाला २७ मना करने वाला २८ मित्र।

मुमीत[1] मतीं[2] मुग़नी[3] होर ज़ार[4] तूँ,
मुक़द्दम[5] मुअख़्ख़र[6] करतार तूँ।

अहै तूँ अथा तूँ अछेगा तुँ ही,
रचे तूँ रच्वा तूँ रचेगा तुँ ही।

हमीं ऐन तूँ इस में है ऐन नूर,
तूँ नज़दीक हमारे हमी तुज ते दूर।

गमे रात दिन यूँ हमन संग तूँ,
कि जू नीर मिल कर अछे रंग सूँ।

तूँ अछता अहे जीव ज्यूँ दिल भित्तर,
हमीं ढूँढ़ते तुज किधर का किधर।

यता तूँ है नज़दीक जाने ना कोय,
क़दीम आशना होर. पछाने न कोय।

तुजे फाम[7] नई फाम का काम नईं,
तेरे काम कुछ फाम कूँ फाम नईं।

यहाँ इश्क़ दायम[8] परेशान है,
यहाँ ख़्याल होर वहम हैरान है।

समा[9] सात सुद सट परेशान हो,
तुजे धूंढ़ते फिरते हैरान हो।

ज़मीन सुस्त हुई यूँ जो हिलती नहीं,
हुए पाँव माँदे जो चलती नहीं।

सूरज चांद तारे ना चुक[10] ठैरते,
तूँ काँ है तुजे ढूडते फेरते।

---

१ मारने वाला २ दृढ़ ३ निश्चिन्त ४ कष्टदायक ५ अनादि ६ अनन्त ७ समझ ८ सदा ९ आकाश—सातों आकाश में १० थोड़ा।

वले कौन जाने के तूँ काँ अहै,
तुँ ही जानता है अपै जाँ अहै।

तेरी कुदरत आँगे है ज़र्रे तें कम,
अर्श[1] होर कुर्सी व लोह[2] व कलम।

अछै तुज समद[3] बीच सीप्याँ समाँ,
धरत[4] सात बुलन्द नौ आसमाँ।

बनाया घराँ इस में बेघात[5] के,
सितार्यां ते आले उत्तम ज़ात के।

अपै पारकी होर अपै मुशारी,
अपै है ग़वास होर अपै जौहरी।

अपै शहर आपीच बाट ज़ार है,
अपै बेच, आपी खरीदार है।

वही एक करता है भोत धात भेस,
कधीं रात होवे कधी होवे दीस[6]।

अपै दीस होर आपीच रात,
अपै झाड़ है होर आपीच पात।

अपै फूल, अपै फल अपै बन अहै,
अपै चाँद अपै सूर अपै खन[7] अहै।

गर्ज़ एक आपीच सब ठार है,
इसी नूर का सब में झलकार है।

खुदा या बड़ा तूँ, बड़ाई हैं तुज,
हमीं सब बन्दे है खुदाई है तुज।

बनाया तूँ आदम कूँ भोत चाव सूँ,
सो खाक होर अगन पानी होर बाव[8] सूँ।

---

१ ईश्वर का निवासस्थान २ तख्ती, स्लेट ३ समुद्र ४ धरती ५ कई प्रकार के ६ दिन
७ खण्ड, पृथ्वी ८ हवा।

मिलनहार यक ठार नईं है यू चार,
तेरे डर ते मिल कर रहे एक ठार।

करे आग कूँ पानी-पानी कूँ आग,
कवे कूँ सो हंस होर हसं कूँ सो काग।

ख़ुदा है तूँ यो काम तुज को सुहाय,
के जीवतें कूँ मारे मुवे[1] कूँ जिवाय।

के बिस देके नईं मारता नाग कूँ,
रख्या है तूँ पानी मने आग कूँ।

बनाया मिश्क़[2] मिरग की नाफ़ में,
दिया रिज़्क़[3] सीमुर्ग़ कूँ क़ाफ़[4] में।

भूँक कूँ ख़ुरश[5] जब तूँ बारा[6] किया।
समुन्दर के तईं आग चारा किया।

भले होर बुरे कूँ दिया रिज़्क़ अपार,
के ज्यूँ नीर बरसे बदल ठार-ठार।

वले मेंहूँ[7] बी कईं पड़े ना पड़े,
तेरा रिज़्क़ सब कूँ सदा आँपडे।

बन्दयाँ कूँ किसी बात का ग़म नहीं,
भर्या है खज़ाना तेरा कम नहीं,

तूँ झाड़ाँ कूँ कपड़े दिया सब्ज़ पान,
मुअल्लक़[8] रख्या हैं ज़मीं आसमान।

दीवा कर चन्दर शमा कर भान कूँ,
दिपायाँ दो जग के शबिस्तान[9] कूँ

---

१ मृत २ इत्र ३ रोज़ी ४ कोहे क़ाफ़ में परियाँ रहती थीं। उस वन में परिन्दों को खाने के लिए कुछ नहीं होता था। वहाँ भी ईश्वर ने सीमुर्ग़ को रोज़ी प्रदान की। ५ दुःखी होना ६ पानी ७ वर्षा ८ निराधार ९ संसार।

पतंग कूँ दिये का पिरत लाया,
कमल पर तूँ भौंरे कूँ लुब्दाया[1]।

दिया बीतें बिज बिजन नार कूँ[2],
छिपा कर रख्या बीज में झाड़ कूँ।

हरेक बन के दुरजक कें तईं जगाधार,
खिज़ाँ[3] कुफ्ल कीता है केली बहार।

तू आदम के फ़र्ज़न्द कूँ खाने मुदाम[4],
धरत होर अम्बर दिया खुश इनाम।

अजब तेरी कुद्रत केरे काम है,
समझने वो कुद्रत किसे फाम है।

तेरा शुक्र वाजिब है दर हम अपार,
किया नेमताँ जग पो नाज़िल[5] हज़ार।

सके कौन तेरा शुक्र सारने[6]
है कुद्रत किसे याँ जो दम मारने[7]।

जकुच है सो तेरी छुपी हिकमताँ,
सके फाम नईं अकल सूँ कोई कहाँ।

अगर जो करम[8] होय तेरा किस उपर,
छुपी हिकमताँ होय अयाँ[9] उस उपर।

सकत है तुजे तूँ जगत का धनी,
किया जाय तुज कूँ धनी होर ग़नी[10]।

निजा दिल की अँखियाँ सूँ देखूँ जिधर,
के तुज बिन नहीं कुच पड़ता नज़र।

---

१ लुब्ध किया २ गर्भ में नार को छिपा रखा है ३ पतझड़ ४ सदा ५ देना ६ तेरा अहसान मानना ज़रूरी है ७ ईश्वर के ख़िलाफ़ कहने का साहस नहीं है ८ कृपा ९ प्रकट १० सम्पन्न।

जे चीज़ अपनी कुदरत ते परगट किया,
सो रहने अपस ठार हर घट किया।

तेरा मारिफ़त[1] जग में भरपूर है,
हरेक ठार रोशन तेरा नूर है।

के तू नईं सो कोई ठार दिसता नईं,
ना यक ठार है तूँ अहै हर कहीं।

बन्दयाँ पर है तेरा करम एक धात,
है तेरी नज़र सब पै हर एक सात।

करम सब बन्दयाँ पर करनहार तूँ,
मया[2] सब पै यक रंग धरनहार तूँ।

किया है तु हीं कर करीमा[3] करम,
बक़ा[4] कूँ बक़ा होर अमद[5] कूँ अदम।

दिखाया बक़ा कूँ अदम में थे तूँ,
बनाया है शादी कूँ ग़म में ते तूँ।

तूँ साहब हुकम सब पै धरता अहै,
जकुछ करन मँगता सो करता अहै।

मुँजे बेनियाज़ी[6] दे दो जग मने,
मुजे सरफ़राज़ी[7] दे दो जग मने।

---

१ इल्म, ज्ञान २ प्रेम ३ कृपा करने वाला ४ अमर ५ नश्वर ६ किसी के आगे हाथ न फैलाने वाला ७ मुझ पर कृपा कर।

दर मुनाजात बारी ताला[1] जल जलालहु

महरबान साहब ग़नी एक तूँ
करम की नज़र सूँ मुंजे देक तूँ।

कमीना बन्दा सब ते कमतर हूँ मैं,
गुहर[2] कर मुंजे तूँ के कंकार हूँ मैं।

अगर नूर तेरा सटे चक पै शाब[3]
अजब नई जो कंकर होय आफताब।

अरे दिल कूँ रौशन कर अप नूर ते
तजल्ली[4] दे अगला चन्दर सूर ते।

नही मुज कूँ आधार तुज बाज[5] कोय,
मयावन्त[6] दाता तुज बाज कोय।

खुदाया मुंजे खैर दे शर सते,
निडर कर बड्याँ के बड़े डर सते।

निडर सबते कर डर तूँ अपना दिला,
दो जग में मुंज अपना तूँ जपना दिला।

इलाही इलाही गुनागार हूँ,
गुनाहाँ में अपने गिरफ्तार हूँ।

गुना की गिरफ्तारी थे दूर कर,
सवाबाँ सूँ तूँ मुंज कूँ पुर नूर कर।

असल का तो नई गंज कुछ मेरे पास,
वले तेरी बक़शीश की है भोत आस।

गुनागार बन्दे हमीं थार थे,
भर आयें क्यों तेरे उपकार थे।

---

१ ईश्वर से प्रार्थना करना २ मोती ३ 'शहाब' अरबी का शब्द है, चमकने वाला ४ चमकनेवाला ५ तेरे सिवा ६ माया युक्त, ममतावाला।

जो तूँ बोल भेज्या सो सब साच है,
हमीं नईं सुने चूक[१] हमराच है,

खलासी[२] दे मुज जग के जंजाल ते,
तूँ ग़ाफिल नको अछ मेरे हाल ते,

गुनागार हमीं सब गुनागार हैं,
जकुच तूँ करे सो सज़ावर[३] हैं।

सच्चा एक साहब है सुभान तूँ,
के माँ बाप थे है महरबान तूँ।

गुनाहाँ ते मेरे मुँजे रुच[४] नहीं,
जो तूँ बख्शने आय तो कुच नहीं।

जो जोश आय दरया तेरे प्यार का,
गुना धो सटे तिल में संसार का।

हमन पाप ते पुन तेरा ज्यास्त है,
नहीं शक कुच इस में के यो रास्त[५] है।

खुदा कूँ जकुच काम भाता अहै
सो मुँज हात ते नईं हो आता अहै।

तूँ बख्शयाँ है भी होर बख्शाएगा,
गुनागार कूँ बहिश्त में ल्याएगा।

मुराद है हरेक खूब[६] होर जिश्त[७] का,
के देखें तमाशा तेरी बहिश्त का।

दिला मुँज मेरे दिल के मकसूद[८] तूँ,
के मौला सच्चा होर माबूद[९] तूँ।

तेरा शुक्र हमना ते क्या होएगा
तू धोया गुनाहाँ सो भी धुएगा।

---

१ त्रुटि २ छुटकारा ३ लायक ४ इच्छा ५ सत्य ६ अच्छे ७ खराब ८ इच्छाएँ
९ पैदा करनेवाला ।

तु ही एक आपीच सब का अधार,
तु ही एक साचा है परवरदिगार।

तु ही एक प्रगट है हर शै मने,
तु ही एक अछता[1] अहै लई[2] मने।

रह्या यूँ तूँ आदम के दिज तंग में,
कि ज्यूँ आग पिनाहाँ[3] अछे संग[4] में।

इबादत की चकमक वक्फ़ सिद्क़ अपार,
मिला क़ल्ब के संग सूँ एक ठार।

जो तीनो यो मिल कर अछे ढंग सूँ,
छुपी आग परगट दिसे संग सूँ।

दीवा दिल, बत्ती दम, मन्धिर[5] जिस्म है,
अगन जीव होर तेल तुज इस्म[6] है।

बुरी बाव ते यक कधन[7] रख इसे,
जतन रख जतन रख जतन रख इसे।

के सब कूँ सम्भालनहारा है तूँ
दो जग जीव का पीव प्यारा है तूँ।

खुश आवाज़ नई कूँ किया है तु ही,
सो निर्जीव कूँ जीव दिया है तु ही

अगर नई कूँ जीव नई तो क्यों बोलती,
छुपे राज़ के पर्दे क्यों खोलती।

समज देक ऐ दिल तूँ टुक फिक्र सूँ
नको गाफिल आछ उस केरे जिक्र सूँ

किसे जियूँने का नित पितयारा[8] अहे,
के जियू जिस कूँ कहते सो बारा अहे।

---

१ सजता है २ चन्द्र के चारों ओर की गोलाई ३ गुप्त ४ पत्थर ५ मन्दिर ६ नाम ७ आंधी ८ विश्वास।

नको भूल तूँ जग के इस चात्र पर,
पितयारा किया नईं कने बाव उपर।

दग़ा देने शैतान इस शहर में
शकर कूँ मिला कर रख्या ज़हर में

भुलाती है दुनिया भोत साज़ सूँ,
नको जीव ला इस दग़ाबाज़ सूँ।

वफ़ा नईं करे यो अछों किस सते।
के हर्गिज़ वफ़ा नईं हुआ इस सते।

दाग़ देगी तुज कूँ दग़ा कूँ खान को
मुसल्लम[१] उसे सोंच जीव ला नको।

जो जीव लायगा तू खुदा सूँ लगा।
मुहम्मद नबी मुस्तफ़ा सूँ लगा।

दो दिन इस दुनिया में तूँ अच्छ इस उसूल,
के तुज ते खुदा खुश अछे होर रसूल।

अरे दिल तूँ ग़फलत में ते भार हो,
केता सोयगा टुक तूँ हुश्यार हो।

तुज इस पन्त[२] में क्यों नींद आती अहै,
दुनिया रह गुज़र उम्र जाती अहै।

तूँ मस्त है दुनिया का खबर नईं तुजे,
खबर ले खबर यो अगर नईं तुजे।

तूँ गाफ़िल है आ चल मेरी बात में,
सँपड़ता है की हिर्स[३] के हाथ में।

हवा हिर्स जो दूर करते अहै
बड़ा मर्तबा सब में धरते अहै

---

१ पूरा २ मार्ग ३ स्वार्थ।

जो तुज हुक्म महताबेमा है अछे,
सुलेमान[1] की पादशाही अछे।

नको तूँ ग़रूरी से मग़रूर हो,
हवा हिर्स के हाथ ते दूर हो।

हमीं बाटसारन निमन याँ अहै,
रनावाँ हमारे घराँवाँ अहै।

बिकट घाट सँन्भाल उस घट में,
कने घर किया नई अभू बाट में।

दुनिया बाट माया सो ईमान है,
वहाँ बाट पाड़ो सो शैतान है।

छुपा कर जतन रख तूँ ईमान कूँ,
सँचरने नको वाँ दे शैतान कूँ।

तूँ वो काम कर जो तुज काम आय,
के पछता कर जो आखिर तूँ हैफी[2] न खाय।

दुनिया में तूँ आया तो कुछ फ़ाम कर,
ख़ुदा कूँ जो भाता है सो काम कर।

के दायम[3] रहने का नईं ठार याँ,
नहीं कोई आया है दो बार याँ।

जकुच याँ ते संगात ले जाएगा,
दुगन तिर्गुन उसका तूँ वाँ पाएगा।

सकेगा तूँ कोशिश कर उस बात में,
जकुच ख़ूबी आवे तेरे हात में।

तूँ उसकी इबादत में दिनरात अछ,
तूँ उसका च हो उसके च संगात अछ।

---

१ सुलेमान एक पैगम्बर थे जो इन्सानों के साथ जानवरों पर भी हुकूमत करते थे २ अफ़सोस
३ सदा।

नको छोड़ साहब की ख़िदमत तूँ कर,
के ख़िदमत ते होता है प्यारा नफ़र[१]।

मुशारे[२] कूँ हाज़िर हो नौबत चुकाय,
नफ़र चाकरी छोड़ क्या काम आय।

ख़ुदा हक़ है हक़ कूँ नको तूँ बिसार,
के मरना है हक़ होर जीना उधार।

ख़ुदाया तूँ मुंज पर दया दिश्ट[३] धर,
तेरा प्यार यक धात है सब उपर।

सरफ़राज[४] सब कूँ करनहार तूँ,
के धरता मया[५] होर धनहार तूँ।

तु ही हुस्न कूँ जग में नियजाय कर,
कर्या इश्क़ कूँ आशिक़ उस उपर।

छुपाया है यो दो में अपना तूँ राज़,
यकस कूँ दिया नाज़ यकस कूँ नयाज़[६]

जो आशिक़ सचा होर जाँ बाज़ है
अयाँ उस उपर यो छुपा राज़ है।

दे मुँज इश्क़ मजनूँ से दीवाने का,
पिला मय मुहब्बत के मयख़ाने का।

मुहब्बत केरा मय जो पीता अहै
मर्ग उसकूँ नईं जम[७] व जीता अहै।

मुहब्बत के मय कूँ पिला तूँ मुँजे,
नको मार दायम जिला तूँ मुँजे।

जो जग में सदा काल जीता अछूँ,
मुहब्बत केरे मय कूँ पीता अछूँ।

---

१ फ़ौज का सिपाही २ तनख़ा ३ नजर ४ दान ५ स्नेह ६ नाज नख़रे ७ जमशीद से जम लिया गया है। ईरान का बादशाह जमशीद था जिस का जामेजम मशहूर है।

नात

मुहम्मद नबी नाँव तेरा अहै,
अर्श के उपर छाँव तेरा अहै।

के चौदा मुलक का तूँ सुलतान है,
अली सा तेरा घर में परधान है।

असी होर यकलाक पैगम्बर आए,
वले मर्तबा कोइ तेरा ना पाए।

छुप्या नूर सब काँ तेरे नूर अंगे,
कें ज्यूँ तारे छुपते अहै सूर अंगे।

मसीहा बन्दा आज तुज राज़ का,
मुअल्हिनम[1] अहै नूह[2] तुज भाज़ का।

ख़ुदा सें गुमे तूँ जहाँ से ख़लील,
ना ईसा व्हाँ आये ना जिब्रील।

अर्श कुर्सी तुज घर है दर आसमाँ,
तूँ सूरज है बादल तेरा सायेबाँ।

मलायक[3] अहैं जितने आसमान में,
रहें रात दिन सब तेरे ध्यान में।

तूँ सुलतान मुसहफ़ इल्म है तेरा,
नबियाँ होर वलियाँ सब चश्म है तेरा।

अवल होर था दीन अब होर हुआ,
मुहम्मद ते यो दीन वर जोर हुआ।

---

१ गुरु २ कहा जाता है कि एक बार प्रलय आया था। समस्त संसार नष्ट हो गया था और चारों ओर जलराशि ही थी। उस समय नूह नामक पैगम्बर जिन्हें आदम के बाद दूसरा पैगम्बर मानते हैं शेष रह गए थे और नाव में बैठ कर बच गए थे। उन्हीं से दूसरी सृष्टि का संचार हुआ ३ फ़रिश्ते।

बन्दे हो के ख़िदमत करे तेरे घर,
अज़ल[१] होर अबद[२] होर क़ज़ा[३] होर क़दर[४]।

तेरा दीन जिस दिन ते परगट हुआ,
सो उस दिन ते सब कुफ़र तलपट[५] हुआ।

मुहब्बत मुरव्वत वफा होर हिलम[६]
हलीमी[७] सलीमी[८] अमल होर इलम।

तूँ पैदा हुआ यो हवैदा[९] हुए,
अवल यो न थे तुज ते पैदा हुए।

पतयाँ खसलताँ खूब है किस मनें,
गज़ब होर गुस्सा नहीं जिस मने।

नवद नौ[१०] हैं तुज नाँव यक नाँव नई,
तूँ रब[११] छाँव है छाँव कूँ छाँव नई[१२]।

तूँ नूर होर नूरिच तेरा नाँव है,
तूँ चँदना तुज चन्दर केरा छाँव है।

जो दिन छाँव तेरा उजाला अछै,
ना निस तूँ के तुज छाँव काला अछै।

के तूँ नूर तुज छाँव भी नूर है,
अंधारा उजाले सते दूर है।

उजाला सो दीस होर रात अन्दकार,
नहीं मिल कर अछते यो दो एक ठार।

उजाला है जाँ, वाँ अंधारा नहीं,
अंधारा है जाँ उजाला नहीं।

---

१ सृष्टि २ प्रलय ३ तदबीर ४ तक़दीर ५ नष्ट ६ दया ७ कृपा ८ नेकी ९ जाहिर १० ९९ नाम हैं ११ ईश्वर १२ मुहम्मद स्वयं ईश्वर की परछाईं है, अतः परछाईं की फिर छाया कैसे होगी ? कहा जाता है कि मुहम्मद की छाया नहीं होती थी। हिन्दुओं में भी विश्वास है कि देवताओं की छाया नहीं पड़ती।

तेरा छाँव वो है जो कुहतूर[1] ते
निकलते झमक्य अधिक सूर ते।

तेरी छावँ का नूर जग देक कर,
खबर सुन के मूसा हुआ बेखबर।

जो देखे तेरी छाँव का ज़र्रा नूर,
पड़े मस्त हो भुईं पो अंबर ते सूर।

उमीदवार है जग तेरे प्यार का,
बख्शाये[2] तूँ पाप संसार का।

शफ़ाअत[3] करन हार सब को तुँ हीं,
अपैं लाड़ला एक रब का तुँ हीं।

१ मूस ने इच्छा प्रकट की थी कि वे ईश्वर को साक्षात् देखना चाहते हैं। ईश्वर के 'ना' करने पर भी वे जिद करते रहे। अन्त में ईश्वर उन्हें तूर के पहाड़ पर आने की आज्ञा देते हैं। मूसा जब पहाड़ पर पहुँचते हैं तो ईश्वर के प्रज्ज्वलित प्रकाश से बेहोश हो जाते हैं और तूर पहाड़ भस्म हो जाता है २ क्षमा करे ३ ईश्वर से सिफ़ारिश करनेवाला।

जिक्र मेराज़[1]

सिफत कर तूँ मेराज की रात का,
के जाग्या अहै बख़्त[2] तुज बात का।

अथा उस रैन कूँ अजब कुछ नूर,
के लाखाँ ते चंदाँ करोड़ाँ ते सूर।

मुल्क ज़रगराँ[3] ज़र ले कर सूर का,
मुलम्मा[4] अम्बर कूँ किए नूर का।

नबी आते हैं कर सुने जब या बात,
सँवारन लगे नौ अम्बर धात धात।

मलायक मिले थे नौ असमान के,
मुक़रब[5] बडे पाक भूमान[6] के।

जो जिब्रेल ते पाये खुश यो खबर,
बजाने लगे सब तबल अर्श पर।

नबी थे अझूँ आपने घर मने,
जो ग़ोग़ा[7] किये क़ुदसी[8] अम्बर मने।

नबी आज हमारे यहाँ आयँगें,
हमें सब उनों का दरस पायँगें।

मलायक उछलने लगे जौक़ सूँ,
सो हज़रत के दीदार के शौक़ सूँ।

फ़रिश्ते सूरज चाँद तारे तमाम,
नौ असमान के रहन हारे तमाम

क़दम बोसी के शौक़ ते धाय कर,
रहे पैले असमान में आय कर।

---

१ सीढ़ी। यहाँ मुहम्मद का ईश्वर के पास जाने से भाव लिया गया है २ भाग्य ३ सुनार
४ सोने का पानी ५ इज्जतवाले ६ मर्यादा के ७ शोर ८ अफसरा।

जुदा थे मिल कर सभी एक ठार,
खुशियाँ ऐश करते अथे बेशुमार।

जो वैसे में जिब्रेल[1] उतर आय कर,
बशरत[2] सो हज़रत कने ल्याय कर।

बग़ल म्याने ग़ाशा[3] ले कर खासेदार,
हुआ जिब्रेल होर पाकड्या तखार।

नबी कूँ सारा कर भोत धात सूँ,
नज़ीक आकर बोल्या मिठी बात सूँ।

कहा तुज खुदा ने किया है सलाम,
बुलाया तुजे आज अपने मुक़ाम।

बड़ी रात है आज मेराज की,
मुबारक अछो रात तुज आज की।

नबी बात यो सुन कहे जायाँ चल,
छुप्याँ नेमताँ ग़ैब[4] कियाँ पायँ चल।

सवारी के खातिर नबी की वसाक़[5],
ले कर आए संगात तेज़ी बुराक़[6]।

बुराक़ आज खुश गर्म ज्यूँ बर्क़ है,
के सर पाँव लग नूर में ग़र्क़[7] है।

चड्य पीट पर उस की वो माहताब[8],
लग्या उड़ने असमान पर ज्यूँ शहाब[9]।

फ़रिशते यकायक उठे देख कर,
खुदा के नबी कूँ वो सब नेक कर।

---

१ एक फरिशते का नाम जो मुहम्मद को ईश्वर का सन्देश देता था २ खुशखबरी ३ क़ालीन ४ गुप्त ५ साथ ६ घोड़े और ऊँट की शक्ल का एक पशु जो बहुत तेज़ जाता है ७ डूबा हुआ ८ चाँद पर यहाँ मुहम्मद से भाव लिया गया है ९ टूटता हुआ तारा।

अवल बेग जा पाँव पड़ने के तईं,
आपस में अपै लागे पड़ने के तईं।

जो एकाएक आकर पड़े पाँव सब,
खड़े रहे अदब सात एक ठाँव सब।

नबी खिंग[1] कूँ वाँ ते आगे चलाय,
मलक सब नबी सात अम्बराते आय।

मलायक सभीं आए थे हाल में,
सो वैसे पड़े फिर को ग़ल ग़ाल[2] में।

पड़ी किस की छाँव जूँ फर्श पर,
उछलती वो जा कर खड़ी अर्श पर।

शफ़क़ गाशिया होर तुरंग बंज है,
तुरंब बीच हुआ सार सो रंज है।

न रहे ठैर नौ आसमाँ में नबी,
गसे लाम काँ के मकाँ में नबी।

खड़े रहे बज़ाँ जिब्रेल होर बुराक़,
न था ज़री इतना उनों में निफाक़[3]

निदा[4] ग़ैब[5] ते आके हज़रत कनें,
बुला ले गया वाँ ते ख़िलवत[6] मने।

किसे फ़ाम[7] खिलवत में वाँ क्या हुआ,
ख़ुदा होर हज़रत में वाँ क्या हुआ।

मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज हुई,
न. था दूसरा वाँ अली बाज कोई।

उनो तीनों कूँ बात यो फ़ाम है,
समझना वो चौथे का नईं काम है।

---

१ घोड़े २ गड़बड़ ३ जुदाई ४ आवाज़ ५ आकाशवाणी सी ६ राज़ की जगह ७ मालूम।

मक़बात[1]

तूँ जग का प्यारा तूँ जग का अधार,
ख़ुदा का तूँ हमदम, नबी का तूँ यार।

तूँ हत खड्ग ले जब किता कुफ्र धोय,
तूँ मसजिद मने दीन की बांग होय।

किया मोमिनाँ काफिराँ मार मार,
कुफ्र का दंदी दीन का दोस्तदार।

मुसलमां के सफ़[2] कूँ तुज ते है नाम,
वो सफ़ जूँ है तस्बीह तूँ ज्यूँ इमाम[3]।

ख़बर सब अहै नेक होर बद की तुज,
सुहाती है जागा मुहम्मद की तुज।

छुड़ाया अहै दीन का बन्द तूँ,
ख़ुदा की ख़लक़[4] कूँ दिया फन्द[5] तूँ।

अथे यार सब यार बन्द भोत कर,
भरोसा नबी का अथा तुज उपर।

किया कुफ्र सब ख़ार[6] पामाल[7] कर,
नबी का रख्या दीन सँभाल कर।

मुहम्मद की जागा किने पायेना,
तुज अछते किसी होर कूँ आयेना।

बड़ा यार याराँ मने यार तूँ,
के पाया मुहम्मद केरे[8] ठाँव तूँ।

---

१ प्रशंसा करना २ जमात, गिरोह ३ तजबी के समय जो दानों की माला फेरते हैं उसके अन्त में एक लम्बा दाना होता है उसे इमाम कहते हैं भाव है कि सब मुसलमान उन छोटे दानों की तरह हैं और ईश्वर इमाम की तरह ४ ख़ुदा की पैदा की हुई सब चीजें ५ शिक्षा ६ काँटे ७ ख़राब चीजों को समाप्त कर देना ८ के पास।

ख़ुदा रहम तुज पर है रहमान का,
तूँ प्यारा है प्यारा है सुभान का।

नौ असमान सारे की हस्त है तारे,
ज़बर्दस्त सब ज़ेरदस्त[1] है तेरे।

रहे घर में छुप रुस्तमाँ से सवार,
निकलते नहीं कोई दर[2] ते बहार।

किसे है कलेजा तेरे सम होने,
किसे ज़ोर है तुज सूँ हम तुम होने।

तूँ एक है तुजे कोई जोड़ा नहीं,
के ली है शुजाअत[3] यो थोड़ा नहीं।

जो कामाँ किया है शुजाअत के तूँ,
ख़बर नई है रुस्तम की अरवाह[4] कूँ।

गनी दीन सब्र कुफ्र क़ल्लाश[5] हुआ,
शुजाहत तेरा जग में यूँ फ़ाश[6] हुआ।

के रुस्तम की अरवाह तुज धाक ते,
उछल कर पड़ी मार आ ख़ाक ते।

तूँ मारा है कुफ़्फ़ार[7] कूँ आ के जाँ,
झड़ी लहू की अजूँ उबलती है वाँ।

तेरा खड्ग मुर्ग में अजब रीज़[8] का,
के चारा चढ़े दंद[9] के सीस का।

दँग्या पर जो तूँ खड्ग जो खींच धाय,
छुटे जल कूँ थंड आग कूँ ताप आय।

अजब अज़दहा है तेरा ज़ुल्फ़क़ार[10],
एक दम सूँ जाल्या है सालिम[11] कुफ़्फ़ार।

---

१ अधिकार में हैं २ द्वार ३ वीरता ४ रूह का बहुवचन, आत्मा ५ फ़क़ीर ६ प्रकट हुआ ७ क़ाफ़िर की जमा ८ मैदान ९ शत्रु १० हज़रत अली की दोधारा तलवार का नाम ११ सब।

हुआ कुफ़र काला इसी दम सते,
के मार्या अहै दम उने हम[१] सते।

जो ख़ूँरेंज़[२] तुज हात में खड्ग है,
सो वो खड्ग कुफ्फ़ार का मर्ग है।

जो चक तुजे ग़जब[३] बहर[४] ऊपर होय,
तो ख़ुश्क होय कर बहर ज्यूँ बर[५] होय।

बड्या है तेरा धाक नौखनी[६] मने,
तूँ वो शेर दिल है के नईं बन मने।

जो आया नज़ीक अज़दहा चौक कर,
सट्या दो तरफ़ उस कूँ दो टूक कर।

अगर अर्श कूँ कोई सटे ठेल कर,
तूँ ज्यूँ गेंद अमानत लेवे झेल कर।

जो सीमुर्ग़ सम[७] होय ढीनाइ ते,
करे टुकड़े बारीक तूँ राइ ते।

अगर नारा मारे तूँ ऐ शेर जान,
हदर कर जमीं पड़े आसमान।

सूरज कूँ जो घूरे तूँ टुक डाट कर,
चढ़े अर्श पर धाक तें न्हाट[८] कर।

जो कुल्लाब अछता ज़मीं के दुम्बाल,
तो असमान पर उस को सटता उछाल।

लहा तुज अंगे मोम ज्यूँ नर्म है,
के गुस्सा तेरा आग ते गर्म है।

जो उलठे हो नौ खम पड़े पुश्त सूँ,
रखे थाँब कर एक अंगुश्त सूँ।

---

१ मुक़ाबले २ खून करने वाला ३ क्रोध ४ दरिया ५ पृथ्वी ६ नौ आसमान ७ सम्मुख ८ दौड़ कर।

अम्बर धरत[1] ने हाल तुज ज्यास्त दाव,
के गेंदाँ सो बहराँ हैं चौगान बाव।

अगर ज़ोर वो ज़ोर मंद शह करे,
घड़ी कर नौ असमान कूँ तह करे।

इसी धाक ते शाह मरदान के,
पड्या लहू कलेजे में असमान के।

जो हँस ले सटे तेग़[2] तूँ ढेर कर,
ज़मीं कूँ दो वसली[3] करे चीर कर।

अगर हाक मारे तूँ आ हाल[4] में,
छुपे अर्श जा डरते पाताल में।

किया रद समीं कुफ्र के काम कूँ,
दिया जोर फिर कर तूँ इस्लाम कूँ।

क्यों मौतक़द[5] होय सब जग तेरा,
के हज़रत खवे पर लिए पग तेर।

खुदा जानता हक़ के यो रास्त[6] है,
के तुज हिल्म[7] तुज गुसे ते ज्यास्त है।

सिफ़त क्या करूँ मैं तेरे हिल्म का,
शुजाअत अमल[8] बख़्शिश होर इल्म का।

लग्या तुज हुकम बीच जल थल होने,
तूँ आख़िर हुआ सब ते अव्वल होने।

वही बल है आख़िर जो कुछ बल होवे,
जो आख़िर हुआ वोच अव्वल होवे।

ख़िलाफ़त ते ऊँचा तेरा ठार था,
खिलाफ़त तुजे बैसना आर[9] था।

---

१ पृथ्वी २ तलवार ३ एक प्रकार का चिकना काग़ज़ जिस पर लिपिक लिपि सुधारने को लिखता है ४ क्रोध से ५ श्रद्धालू ६ सत्य है ७ शान्ति ८ अच्छे काम ९ बेकार।

बड़ा तूँच आख़िर बड़ा तूँ असल,
तूँ ज़ाहिर में आख़िर है बातिन अवल।

न था दिल तेरा ख़ुसरवी[1] पालने,
ख़िलाफ़त किया दीन सँभालने।

तेरा मरतबा ऊँच ते ऊँच है,
अवल तूँ है आख़िर कूँ बी तूँच है।

बड़ा तूँ बड़े है तेरे सब यो काम,
ख़िलाफ़त हुई ख़त्म तुज पर तमाम।

अली का मुहब नईं जकोई सच तूँ जान,
हरामी पने का वही है निशान।

---

१ बादशाही

दर सिफ़ते[1] इश्क़ गोयद

बड़ा इश्क़ का सबते दर्जा अहै,
के यक जा नहीं इश्क़ हर जा अहै।

अगर इश्क़ कुछ बिलबिलाँ कूँ जो नईं,
तो की आह नाले करे फूल तईं।

अगर इश्क़ नईं है तो की शमा पर,
पतंगा अपसे जाले सितम आय कर।

अगर नईं है आशिक़ चकोर चाँद का,
तो राताँ कूँ क्या सबब जागता।

के लैला व मजनूँ जो कहवाये हैं,
सो इस इश्क़ ते नाँव यूँ पाये हैं।

जो यूसुफ की आशिक़ ज़ुलेखा न हुई,
ना करता उसे आज लग याद कोइ।

अयाज़ होर महमूद जो वो अहैं,
सो मशहूर इस इश्क़ ते वो अहैं।

जहाँ दो हैं वाँ इश्क़ बिन् कुच नहीं,
नहीं इश्क़ कुच जिसमें वो कुच नहीं।

इसी इश्क़ ते आशिक़ है सरफ़राज़[2],
पछें या हक़ीक़त अछो या मजाज़[3]।

---

१ प्रशंसा २ प्रसन्न होना ३ मजाजी।

दर शरह शेर गोयद

कता हूँ तुजे पन्द[1] की एक बात,
के है फायदा इस मने धात[2] धात।

जो बेरब्त[3] बोले तूँ बेताल पचीस,
भला है जो यक बैत बोले सलीस।

सलासत[4] नहीं जिस केरे बात में,
पड्या जाय क्यों जुज़[5] ले कर हात में।

जिसे बात के रब्त[6] का फ़ाम नईं,
उसे शेर कहने सूँ कुछ काम नईं।

नको कर तूँ लट्ट बोलने का हवस,
अगर खूब बोले तो यक बैत बस।

हुनर है तो कुछ नाज़ की बर्त्तयाँ,
के मोटाँ नहीं बांदते रंग कियाँ।

वो कुच शेर के पन में मुश्किल अछे,
के लफ्ज़ होर माने यो सब मिल अछे।

उसी लफ्ज़ कूँ शेर में ल्याएँ तूँ,
कि ल्याया है उस्ताद जिस लफ्ज़ कूँ।

अगर फ़ाम है शेर का तुज कूँ छन्द,
चुने लफ्ज़ ल्या होर माने बुलन्द।

रख्या एक माने अगर ज़ोर है,
वले भई मज़ा बात का होर है।

अगर खूब महबूब ज्यूँ सूर है,
संवारे तो नूराँ[7] अली नूर[8] है।

---

१ नसीहत २ प्रकार-प्रकार के ३ बिना अभ्यास ४ सुन्दर पद ५ पुस्तक ६ सलीक़ा
७ चमकने वाला ८ ज्यादा चमकदार।

अगर लाक ऐबाँ अछे नार में,
हुनर हो दिसे खूब सिंगार में।

हुनर मुश्किल उस शेर में योच है,
के थोड़े अछें हर्फ़ माने सो ले।

जो माने हैं माशूक़ भोत धात का,
पनाया हूँ किसवत उसे बात का।

न निपजे न निपज्या है गुन ग्यान में,
सो तूती मुँज ऐसा हिन्दुस्तान में।

के बाताँ यो सुन कर मेरी शान कियाँ,
रह्या ठक् हो कुमर्याँ[1] ख़ुरसान[2] कियाँ।

जिते शायराँ शयर हो आयँगे,
सो मुँचते तर्ज़ शेर का पायँगे।

के फ़ेरोज़[3] महमूद[4] अछते जो आज,
तो इस शेर कूँ भोत होता रिवाज।

के नादिर थे दोनों बी इस काम में,
रख्या नईं किने बोल अभूँ फ़ाम में।

यो सब शेर कहते यो सब शेर नहीं,
के बोलाँ किधर होर माने कहीं।

शेर गरचे ली[5] लोग जोड़े अहैं,
बुरे भोत होर खूब थोड़े अहैं।

दो जग जिस उत्तम हीरे का मोल है,
वो हीरा सो हरएक मेरा बोल है।

रतन बे बदल यो मेरे जाँ बिकायँ,
वहाँ चाँद सूरज दलाली न पायँ।

---

१ कबूतर की तरह का एक पक्षी २ स्थान का नाम ३ प्रसिद्ध बहमनी शासक फ़ेरोज़ शाह ४ प्रधान मन्त्री महमूद गवाँ ५ बहुत।

बचन मोती यो देक निपट लाजते,
समद पानी गुल कर हुआ लाजते।

के मानक मोती यो उत्तम ज़ात के,
नहीं देख्या मैं कई उस धात के।

जो कोई जौहरी है सो पैछान कर,
मंगेगा रतन कूँ क़दर जान कर।

परख देक तूँ काच होर पाच कूँ,
बराबर न कर दूध होर छाच कूँ।

जहाँ पाच अछेगा वहाँ काच क्या ?
जहाँ दूध अछेगा वहाँ छाच क्या ?

न यो बात हर एक के सात है,
ज कोई आरिफ़ है उस सूँ यो बात है।

तू फल चाख देख होर लज्ज़त कूँ फ़ाम,
न कर मोल सब का सगट[1] तीन दाम।

जो करता यकस का हुनर देख कर,
हुनर वन्द उसे नईं कते हैं हुनर।

नवा दिल ते ल्याना है मुश्किल कना,
के आसान है देक कर बोलना।

जकोई यूँ करे इस में कुच फ़ाम नईं,
हुनर देक सकता बड़ा काम नईं।

हुनरवन्द उस कूँ कह्या जायगा,
जकोई अपने दिलते नवा ल्यायगा।

फ़र्क़ है अवल होर आख़ीर में,
तफ़ावत[2] अहै नीर होर शीर[3] में।

---

१ एक साथ २ फ़र्क़ ३ दूध।

हुनर देख सकता है उस्ताद का,
फ़हम[1] चोर है आदमी जाद का।

कहीं पन्द की बात इस धात में,
यू पन्द है यहाँ करने की बात नईं।

अगर किसते तिल ख़ास कुच जानता,
उसे दिल में उस्ताद कर मानता।

न होसी हुनर इस बज़ा किस सते,
न कुर्सी क़दम कोई अंगे इस सते।

अगर कोई ज्ञानी चतुर ज्ञान है,
यदी याँ च गो[2] याँ च मैदान है।

दिसे परगट हो इज्ज़त इस बात का,
के दर्पन निभाये कंगन हात का।

दखन में जो दखिनी मीठी बात का,
अदा नईं किया कोई इस धात का।

अदा यूँ अताल होय तो क्या अजब,
के आलम सुन्या है यो चौफेर[3] सब।

जो आक़िल है यो बात माने वही,
क़दर इस अदा की पछाने वही।

दिवाना हूँ मैं इस रँगी बात का,
के हर दिल में जो हो करे ठार आ।

कहाँ बात वो चंचल होर चुलबली,
के दिल कूँ नहवाँ सू करे गुदगुदी।

मेरी बात सुन बात इस धात बोल,
के जीव कूँ खुशी हो होर दिल कूँ कलोल।

---

१ शक २ गेंद, गोला ३ चारों तरफ।

यो निर्मोल है बात उसे मोल नईं,
हरेक बोल है वही[1] यो बोल नईं।

सुखनगो[2] वही जिस की गुफ्तार ते,
उछल कर पड़े आदमी ठार ते।

यो बोल्या हूँ सब गंज[3] ना रंज है,
अझूँ मेरे दिल में बहुत गंज है।

जो लग बरस कोई सर लेवे रंज कूँ,
न पावें कधीं इस छुपे गंज कूँ।

हुआ जीव जब शेर यू बोलने,
खज़ीने[4] लग्या ग़ैब के खोलने।

रतन यो अथे दिल केरे खान में,
वहाँ ते ले आया हूँ दुक्कान में।

गुहर यू मेरे यूँ लगे झमकने,
के पानी हो गए मोती सीप्याँ मने।

अगर ग़ोते लग[5] बरस[6] ग़व्वास खाय,
तो यक गौहर इस धात अमोलक[7] न पाय।

यो मोती नईं वो जो ग़व्वास पाय,
यो मोती नहीं वो जो किस हाथ आय।

ग़व्वसाँ किते ग़ोते खा खाय कर,
मुर्ए[8] हैं सो इस समर में आय कर।

अपी हो के ल्याना सो है झूट सब,
खुदा ग़ैब ते देवे तो क्या अजब।

के हंस नमने बिच समद यक जाय तूँ,
मरे डूब तल सिर उपर पाँव हो।

---

१ ईश्वर की दी हुई जानकारी २ बात कहनेवाला ३ खज़ाना ४ खज़ाना ५ एक ६ वर्ष
७ अमूल्य ८ मरे।

नको बोल मज़मून तूँ होर का,
के काला है दो जग में मूँ च़ोर का।

जिता चोरी कर चोर अपै साव होय,
दग़ाबाज़ उच्चक्के कूँ माने न कोय।

चुरा कर चुराता न की चोर कोइ ?
यो बाताँ समजते सो हैं होर कोइ।

न मुँज कुच बड़ाई न मुँज लाफ़ है,
वले आरिफ़ाँ पास इंसाफ़ है।

जनम गर दंदी[1] रश्क ते तलमले,
इनायत के कामाँ सते क्या चले।

दखन में अथ्या लप लै तरह होर मैं,
दिया यूँ सलासत[2] कूँ भी ज़ोर मैं।

के फ़ेरोज़[3] आ ख़ाब में रात कूँ,
दुआ दे कर चूमे मेरे हात कूँ।

कहया है तू यूँ शेर ऐसा सरस,
के पढ़ने को आलम करे सब हवस।

तूँ यू कर के खसलत[4] यू तुजं आय ना,
के तूँ ख़ुश अछे होर किसे भाय ना।

तूँ ऐसी तरज़ दिल ते निपंजा[5] नवी,
के दुसरे करें तेरी पैरवी।

'वजही' तेरा ज़हन ज्यूँ बर्क़[6] है,
तुजे होर बाज्याँ में ली फर्क़ है।

तेरा शेर सुन दिल पिगलता है यूँ,
के पानी ते अबलोज[7] गलता है ज्यूँ।

---

१ शत्रु २ ठीक-ठीक शब्दों का प्रयोग ३ एक प्रसिद्ध कवि ४ स्वभाव ५ पैदा किए
६ बिजली ७ मिश्री।

तूँ 'वजही' कह्या शेर कइ धात का,
हुआ ज्यास्त तुज ते मज़ा बात का।

शेर बोलना गरचे अपरूप[1] है,
वले फ़ामना कहने ते खूब है।

१ जिस की बराबरी का कोई न हो।

वजही तारीफ़ शेर खुद गोयद

कता हूँ सुनो कान धर लोग हो,
कहावत मने बात जो आप सो।

अगर शेर कोई कहे नवा कर जो ल्याय,
तो ख़ावाँ कूँ सुन रश्क अलबत्ता आय।

अपस में अपै देख सकते नहीं,
यकस का सो यक मान रकते नहीं।

अगर कुच का कुच किधर का किधर,
कहे तो कते हैं इसी हीन्च कर।

उड़ाने मिले उस कूँ चौंधेर ते,
फ़ज़ीहत[1] करें पाँव लग सीर सते।

अगर खूब जो बोले तो वो अहै,
वगर जो बुरा बोले तो यों अहै।

हुआ शेर का इस वज़ा काम जब,
तो अब शेर कहना छुटे क्या सबब।

वले जीव रहता नई कहे बाज यो,
अजब सरकश है अब जो दे राज यो।

शेर खूब कह कर जो ल्याना अहै,
अपस पर बला एक बिसाना अहै।

हुनर में हुनर कोई जोता[2] नहीं,
तरक करने गए तो भी होता नहीं।

यू बलवन्द बचन इस में बलभोत है,
समज थोड़ी लोगाँ में छल भोत है।

---

१ बुराई करना २ खोजना।

जिते अकल दौड़ाए अंदाज़ सूँ,
क्या नईं किने[१] बात इस नाज़ सूँ।

तूँ झूटे ते झूटे नको अछ शाद[२],
के झूटे में अछसी[३] न हर्गिज़ सवाद।

न कईं देख कर किसते पाया हूँ मैं,
यो ताज़ा तरह[४] दिल ते ल्याया हूँ मैं।

जकोई फ़हम[५] में टुक हपनाँ[६] (?) अहें,
सो दुसर्यां के वो खुश चैनाँ अहें।

न मुँज जोड़ ना थाँब[७] असमान कूँ,
अजब कुच पहुँच है मेरे ज्ञान कूँ।

अगर टुक जो दौडूँ बलन्द धाँव कूँ,
उडूँ जग कूँ सब बांध कर पाँव कूँ।

हुनर कियाँ हैं यो बारीकियाँ लाफ़[८] नईं,
वो आदमी नहीं जिस में इन्साफ़ नईं।

के इन्साफ़ देवे वही रास्त[९] है,
के इन्साफ़ ताअत[१०] ते बैज़्यास्त है।

न कर बात तूँ ना समज आमना,
बहुत मुश्किल है बात कूँ फामना।

हरेक कह के देकने होर ज़ोर,
हमीं इसते भी ढूँडते कुच होर।

झुते ना समज झुंजल्या[११] शोर क्या?
समझने जो समजे के है होर क्या?

अता[१२] कुतुब की मदह[१३] कर अख़्तियार,
जो रहे यो क़यामत तलक यादगार।

---

१ कहे २ प्रसन्न ३ होता ४ प्रकार ५ अक्ल ६ नया (?) ७ स्तंभ ८ झूठी प्रशंसा ९ सही १० ताईद में ११ क्रोध १२ अब १३ प्रशंसा।

मदह इब्राहीम कुतुबशाह गोयद

इब्राहीम कुतुबशाह राजाधिराज,
शहंशाह है शाहशाहाँ में आज।

अदल बख़्शिश होर दाद[1] उसते अछे,
सदा खल्क़[2] सब शाद[3] उसते अछे।

जिते पादशाहाँ हैं संसार के,
भिकारी हैं सब उसके दरबार के।

सुलेमाँ[4] ते फ़ाज़िल है उस बख़्त[5] बल,
परी, देव, जिन, सब हैं उस हुक्म तल।

अपस अदल[6] के बल ते वो जग अधार,
रख्या बाग बकरी मिला एक ठार।

धरे हुक्म हिक्मत सूँ चौंधेर से,
जहाँ सब ल्या वो जहाँगीर[7] से।

तो यूँ अदल अब जग में होने लग्या,
के भुईं का भूँक भार डूबे लग्या।

ऐसे शाह आदिल के गुस्से ते डर,
लिया है गगन कूँ पौन पीट पर।

यता बल है उस अदल के फ़न मने,
के बिजल्याँ खड्याँ काँपतियाँ खन मने।

अम्बर ते हैं यूँ बिजलियाँ ज़ेर बन्द,
तो बरसाते हैं महूँ बदल रंग खण्ड।

यता दाद इन्साफ़ होर अदल था,
के मुर्ग़ा बी कूँ बाज़ का डर न था।

---

१ इन्साफ़ २ जनता ३ प्रसन्न ४ कुरान में जिक्र मिलता है कि सुलेमान एक ऐसे पैगम्बर हुए हैं जो मनुष्य के साथ देवों और जिन्नों पर भी शासन करते थे ५ भाग्य ६ इन्साफ़ ७ संसार भर का विजेता।

कबूतर अव्वल के दन्दाँ[1] सारने
सो बहरी[2] कूँ लाताँ लगे मारने।

अगर राजोट[3] चक फरिशत्याँ सूँ लाय,
तो नौखन की गुडक्याँ सो केल्याँ मंगाय।

सदा पादशाही वो धरत है शै,
अनन्द ऐश, इशरत जो करता है शै।

सो भोतेक उमीद होर आस ते,
मंग्या एक फ़र्ज़न्द ख़ुदा पास ते।

के फ़र्ज़न्द ते नावँ अछता अहै,
अपै गए तो भी नावँ अछता अहै।

यही बात फिर-फिर के कहता अछे,
इसी ध्यान में नित वो रहता अछे।

जो एक दीस उस शह को फ़र्ज़न्द हुआ,
वो फ़र्ज़न्द उसका सो दिलबन्द[4] हुआ।

इने तेज़ ल्याया वो अपने संगात,
सिकन्दर के ताले ख़िज़र[5] की हयात।

बदन सीम[6] क़द सरो ज्यूँ रास्त है,
के सूरत में युसुफ़[7] ते कई ज्यास्त हैं।

---

१ शत्रु २ एक पक्षी ३ हुकुमत ४ स्नेही ५ खिजर सिकन्दर की फौज का एक सिपाही था। कहा जाता है एक बार सिकन्दर अपनी सेना के साथ आबेहयात पीने जाते हैं और मार्ग में ही सेना तितर-बितर हो जाती है। तब खिजर को भाग्यवश आबेहयात मिल जाता है, जिससे वे आज तक जीवित हैं। मुसलमान विश्वास करते हैं कि खिजर अमर हैं ६ चाँदी ७ मिश्र के एक पैग़म्बर हुए हैं। आपकी सुन्दरता सर्वप्रसिद्ध है। युसुफ़ जुलेका की अनेक कथाएँ फ़ारसी में प्राप्त होती हैं।

तारीफ़ सिफते फर्ज़न्द गोयद

छुप्या सू यो उसके मुखनूर[1] अंगे,
के ज्यूँ चांद छिपता अहै सूर अंगे।

ज़ुल्फ़ लाम अलिफ क़द दहन मीम है,
यो ख़ूबी सो उसकी च तक़सीम है।

उजाला पड्या आज यूँ नूर का,
के हाजत[2] नहीं चांद होर सूर का।

दो जग आज नूरन अलोनूर[3] है,
ज़मीं चांद असमान सो सूर है।

जो नादान बालक नह्ना लाड़ का,
नवा फूल अहै शाह के झाड़ का।

लग्या देखने फ़ाल अम्बर रमाल[4],
सूरज चाँद के फाँसे[5] नियत[6] सूँ घाल।

कह्या इल्म में देकना वो आप ते,
के फर्ज़न्द यो बख़्तवर बाप ते।

रखे नाँव करतार[7] कर्न[8] मँग पनाह,
सुलक्खन मुहम्मद कुली कुतुबशाह।

पड़े हाथजाँ इस बख़्तवार का,
सुना होय माटी सो उस ठार का।

सितारे जड्या सर शफ़क़ रंग कुला[9],
हुआ झुनझुना खेलने सुंबला[10]।

दिसें नक़श ज्यूँ नज्म चन्द होर भान,
के दूरांही कहकशा[11] करे आसमान।

---

१ मुख २ आवश्यकता ३ बहुत ज्यादा प्रकाश मय ४ ज्योतिषी ५ किरण ६ शोभायमान ७ ईश्वर ८ से ९ मिला कर तेलुगु शब्द 'कल्पू' से १० एक नक्षत्र ११ आकाश गंगा।

सुरज बाप होर चाँद सो माय हो,
गँवारा[1] अम्बर होर बदल दाय हो।

अर्श कुर्सी कुलाबरे[2] ये थीर कर,
के कुदरत कूँ बादे हैं ज़ंज़ीर कर।

तरफ चारपाई तरफ़ चार हैं,
मलायक[3] उसे जर्म[4] जुलनहार हैं।

सो पखवे[5] में शह दाय की यूँ अछे,
कचा मोती सींपी मने ज्यूँ अछे।

अजब दूध उस दाय मन मीत का,
के हर बुन्द कूँ तासीर है अमरोत का।

सदा जग में बालक वह जीता अछे,
के इस धात का दूद पीता अछे।

जो भुई पर सटे दूद चख पीव कर,
अजब क्या जो मुर्दे उठें जीव कर।

जकोई दूद इस धात पीता अछे,
सदा जग में वो क्यों न जीता अछे।

बड़े कोई दिस होर कोई मास कूँ,
बड़े शह हरेक तिल हरेक तास कूँ।

करो जम दुआ जीव सूँ जग मिल उसे,
हयात होती है ज्यास्त तिल-तिल[6] उसे।

१ भूला २ जंजीर, कोई भी ऐसी चीज़ जिससे किसी चीज़ को लटकाया जाय ३ फरिश्ते ४ सदा ५ गोद में ६ क्षण-क्षण में।

सिफ्ते मेज़बानी

खुशियाँ सूँ जो शह मेज़बानी किनाय,
सो तिरलोक के लोग महमान आय।

अजब तुहफ़े कुदरत ते आने लगे,
के देक इस मुल्क रश्क़ खाने लगे।

छुपा था जकुच ग़ैब[1] में आज लग,
सो परगट लग्या देखने अब दो जग।

नवियाँ नेमताँ नौ फ़लक बीच भर,
ले कर आये ढो कर मलिकशह के घर।

के शह कूँ ख़ुशी यू बड़ी आज है,
अनन्द पर अनन्द काज पर काज है।

म्या पंजतन[2] का मदद ल्याय कर,
सो तौफ़ीक़[3] करतार[4] ते पाय कर।

महल शह सिंगारे यूँ उस काज कूँ,
सँवारे थे ज्यूँ अर्श मेराज कूँ।

हरेक महल का जो छज्जा अर्श है,
बदल बाजू असमान सो फर्श है।

महल ज्यूँ है काबा धरे जोत साफ़,
नौ असमान करता है निस दिन तवाफ़[5]।

अजायब तबक़[6] है धरत बान का,
के ढाँके है सरपोश असमान का।

तेरी बज़्म[7] में शह अजब नूर है,
के किरनाँ बत्तियाँ, शमां सो सूर है।

---

१ गुप्त २ पाँच तन मुहम्मद, अली, फातेमा, हसन और हुसैन ३ मदद ४ ईश्वर ५ चक्कर करना ६ तशतरी ७ महफ़िल।

जो शह शमा रोशन किये सूर का,
मलिक तेल ल्या कर सटे नूर का।

सूरज शमा होर थाल घन हफ्त[१] रंग,
दिवा[२] चंद पुनम का सितारे पतंग।

कलंक चाँद में है सो दिस्ता है यूँ,
के सुन्ने की प्याली में हैं मिश्क[३] ज्यूँ।

दुनिया में दो कन[४] लोग फिरने लगे,
सिफ़त शह की सब जग में करने लगे।

के महमानी इस धात की आज कोय,
न कर सके दुनिया शहबाज़[५] कोय।

---

१ सात २ दीपक ३ कस्तूरी ४ हर तरफ़ ५ बादशाह की तरह।

बख्शीश करदन[1] इब्राहीम कुतुबशाह

मलायक जो ख़िदमत करन आए थे,
नबियाँ नेमताँ ग़ैब कियाँ ल्याये थे।

मदन भोगी शह मस्त मतवाला हो,
ख़ुशियाँ पर ख़ुशियाँ देख ख़ुशहाल हो।

यता कुछ दिये शह फ़रिश्ताँ कूँ दान,
के बाँदे सुने काँ नवा आसमान।

खुल्या नईं यो हद का मेरी जान कूँ,
दिए शह कड़क हस्त असमान कूँ।

अम्बर दान पाया है ज़र बेशुमार,
तो ढूँढता है रखने कूँ दिन रात ठार।

भरे बदरे[2] शह जो दिए माल भर,
सो धरती उचाले[3] चली पीट पर[4]।

दिए धरत कूँ दान यूँ प्यार ते,
के गुडग्याँ पै आया झूँक भार ते।

यता कुछ शहंशाह बख़्शे हैं धन,
ज़मीन ठार मंगती है असमान कने[5]।

दिए दान सब जग कूँ दिए मान अनन्त,
जवाहर सूँ खेले शहंशा बसन्त।

करम की नज़र कर मिठी बात सूँ,
हरेक आदमी कूँ हरेक धात सूँ।

किए कोट बख़्शिश अदिक लाक तें,
तो अरज़ाँ[6] हुआ यूँ सुना ख़ाक तें।

---

१ करना २ मुट्ठी भर-भर कर ३ उठा कर ४ शाह के दान के भार से धरती पीठ के बल गिर पड़ी ५ से ६ सस्ता।

जगत अब गुहर यो बिखरने लग्या,
के ख़ुश्की में हंस आके चरने लग्या।

बख़्शने लगे शाह यूँ हम सते,
तो पीला हुआ सब सुना ग़म सते।

ख़यालाँ यो देक शह तेरे दान के,
हुए लोग हैरान असमान के।

घरे घर ख़ुशी होर अनन्द काज हुआ,
के फ़रज़न्द इस राज कूँ आज हुआ।

यती दास हुआ दीस होर रात का,
अनन्द ऐश इशरत देख इस धात का।

ख़ुशियाँ यूँ लगे करने आकाश पर,
के पाताल के लोग पाए ख़बर।

नको जानो भाड़ाँ कूँ है भाड़ कर,
के पाताल लोग आए हैं फाड़ कर।

तमाशा देखें शह के घर आज का,
अनन्द सुख बधावे ख़ुशियाँ काज का।

किए ऐश यूँ शह हरेक बात में,
के देखा नहीं कोई अभूँ ख़ाब में।

जो पढ़ने सटे शह कूँ मकतब मने,
हुनर सीक हुनरवन्द हुआ सब मने।

जो वस्ताद देवे सबक़ बे तलक,
पढ़े ज़हन सूँ शह अपी ते तलक़।

यता[१] ज़ोर था ज़हन शहज़ाद कूँ,
के तालीम फिर देवे उस्ताद कूँ।

---

१ इतना।

जो अवल ल्या शह अलिफ़ का सबक़,
धरत सात हुए कशफ़[1] होर नौ तबक़[2] ।

सो वो जान सुभान अपस ग्यान ते,
हुआ ज्यास्त हिकमत में लुक़मान[3] ते ।

अम्बर नई सिक्या शह के चक धाँवँ[4] कूँ,
वो उस्ताद-उस्ताद था नाँवँ कूँ ।

के मक़तब में शह बैट सब देस बीस,
हुआ आलिम व शायर व ख़ुशनवीस ।

---

१ प्रकट होना २ जमीन के नौ भाग ३ कुरान में लुक़मान का जिक्र है जो सर्वज्ञानी बताया गया है । यहाँ कवि कहता है कि शाह लुक़मान से भी अधिक ज्ञानी हो गया था ४ तरीक़ा ।

सिफ्त शबाब[1] शहज़ादा

जवानी के दरया कूँ आया अधान,
मुहम्मद कुतुबशाह हुआ अब जवान।

यता ज़ोर था उसके यक दस्त[2] सूँ,
उचा कर पछाड़े मते हस्त कूँ।

अजब जान मैमन्त माता है वो,
के बागा सूँ पंजा मिलाता है वो।

चले ज़ोर कर हम सूँ जिस नीत उन,
ज़मीं में घुँसे पाँव गुडग्याँ लगन।

दोनों खेज़ औतार भुज-बल ग़रूर,
मुकियाँ सूँ पहाड़ाँ करे चूर-चूर।

अगर शाह खंजर लेवे हात में,
उधेड़े पकड़ बाग कूँ बात में।

अगर सख़्त पौलाद ते हुए झाड़,
सटे पेड़ ते उस कूँ नहों[3] सूँ उपाड़।

करे ज़ोर तालीमखाने[4] मने,
वो तन्हाच[5] था उस ज़माने मने।

शहनशाह कूँ ज़ोर पर लाफ़[6] है,
के खन[7] नाल[8] होर नील[9] कुहकाफ़[10] है।

जिते लाफ़ धरते अथे बल मने,
हुए आजिज़ उसकी सँपड़ गल मने।

---

१ जवानी २ हाथ ३ नख, अर्थात् झाड़ों को भी कोमल नख की तरह उखाड़ फेंकता है ४ मल्लशाला ५ अकेला ६ गर्व ७ आकाश ८ जूते के बराबर ९ पानी (तेलुगु 'नील्लु' से) १० बड़े-बड़े पहाड़।

सिफ्त मजलिस तर्ब[1]

शहंशा मजालिस किये एक रात,
वज़ीराँ के फ़रज़न्द ते सब संगात।

हरयक खूब सूरत हर एक खुश लक़ा[2],
सो हर एक दिलकश हर एक दिल रुबा।

महाबत[3] के सामाँ में जम-जम है ज्यूँ,
शुजाअत[4] के कामाँ में रुस्तम[5] है ज्यूँ।

हर एक खुश तबा होर आक़िल अछे,
हर एक खुश फ़हम होर फ़ाज़िल अछे।

नदीम[6] होर मुतरिब[7] सुगढ़ फ़हमदार,
अथे शह सूँ मिल कर यो सब एक ठार।

सुराही प्याले ले हाताँ मने,
नदीमाँ ते मशगूल बाताँ मने।

लगे मुतरबाँ गाने यूँ साज़ सूँ,
के धरती हिली मस्त आवाज़ सूँ।

जो मुतरिब वो सहरा में इस धात गाय,
तो फिर इन कूँ इस शौक़ ते हाल[8] आय।

कने ताल सूँ यूँ लय खुश होताँ,
के सुन कर समाँ[9] देवें नौ आसमां।

जो गावें व शह कूँ गुमाते अथे,
सुराँ पै वो रागा जमाते अथे।

नदीमाँ लताफ़त में जो चक आयँ,
तो रोत्याँ कूँ खुश कर घड़ी में हँसाय।

---

१ गाना २ ऊँचा ३ धनी ४ वीर ५ ईरान का एक वीर योद्धा प्रसिद्ध है ६ मुसाहब
७ गवैये ८ मस्त हो जाना ९ ताल देने लगे।

शराब होर सुराई नुकुल होर जाम,
होय मस्त मजलिस के लोगाँ तमाम।

जो हुई रात आधी पछे दो पहर,
ख़बरदार याराँ हुए बे ख़बर।

बिसर गइ नदीमा तरज़ बात का,
गँवाए ख़बर मुतरिबाँ ज़ात का।

जो आक़िल अथे वो सों सब हिच हुए,
दो प्याले चढ़ा कूच का कुच हुए।

न मिलते न खोली झगड़ते कहीं,
यकस के उपर एक पड़ते नहीं।

लगे मस्त हो सटे मस्ती सँगात,
यकस के सो पावाँ उपर एक हात।

सो यूँ कुच वो याराँ हुए बेख़बर,
के पानी पिते थे शराब है ककर[1]।

यकस कूँ बुला एक अडनाँव[2] सूँ,
गले लगते थे मस्त हो छाँव सूँ।

बजावो जो कई तो उन्हें गाय कर,
मसे मुतरिबाँ ख़ुश ख़ुशी पाय कर।

सुराही प्याले सूँ हमदस्त हो,
कराँ करते थे वो दोनों मस्त हो।

यता मस्त साक़ी हुआ सुद गँवाय,
के प्याला मंगे तो सुराही कों लाय।

वो मद पी के मतवाल अब सख़्त हुआ,
उठा के चिल्लाने केरा वक़्त हुआ।

---

१ कह कर २ दूसरे नाम से।

देखे शाह मजलिस हुई इस वज़ा,
किसी कूँ अछो घर किसे दी रज़ा।

किए शह कू शाद[1] उस वक्त पर,
गये ज्यास्ती सब रहे मुख़्तसर।

दिसे चार बालिश्त में शाह यूँ,
के चौथे बुरज[2] में अछे माह[3] ज्यूँ।

सो वैसे में टुक शाह कूँ नींद आय,
वो नींद आ तमाशे अजब कुच दिखाय।

दिखे ख़ाब में शाह के एक बन अहे,
वो बन नईं जमीं के उपर खन अहे।

फिरें चाँद सयाँ सुन्धरियाँ उस मने,
सितारे नईं कयाँ परियाँ उस मने।

हिलावे जो टुक लट की जंज़ीर कूँ,
दिवाना करें तिलमने नीर कूँ।

दिवाने हो कर झाड़ फिरते अथे,
पटापट फुलाँ मस्त हों पड़ते अथे।

अथा हौज़ होर वाँ अथियाँ[4] सुन्दरियाँ,
के पानी किनारे खड़ियाँ थियाँ परियाँ।

के गुंचे सों खुल फूल झड़ते अथे,
पंखी आके बेसुद हो गिरते अथे।

चमन दर चमन सरो दुरस्त थे,
कलियाँ सर ख़ुश होर फूल सो मस्त थे।

सो झाड़ाँ कूँ मेवा यता बार था,
के डाल्याँ कूँ पेड़ाँ कने ठार था।

---

१ प्रसन्न २ घर, चेत्र ३ चाँद ४ थीं।

अथा महल वाँ एक ऐसा बलन्द,
पवन सार ना हो सके सट कमन्द।

अजब पानी उस ठार का साफ़ था,
के अमरीत पर भी उसे लाफ़[१] था।

यकायक उस महल पर एक नार,
कितक[२] छन्द सूँ आई अपसे सिंगार।

जो दिखलाय आ मुख काबा सो धन[३],
सरो सर निवाये थे सजदा करन।

दिसे यूँ धन उस महल के फ़र्श पर,
सूरज सार हुआ है मगर अर्श पर।

दो कुच दो मुफ़रह[४] की कांसे[५] है ज्यूँ,
दो जुल्फ़ाँ दो धर सरक पासे हैं ज्यूँ।

पड़े जी कोई इस सरक[६] काँस्या मने,
सटे हत मुफ़रह के काँस्याँ मने।

चंचल का जो लब लाल याकूत है,
सो आशिक़ के वो जीव का कूत[७] है।

रंगा रंग[८] चमनाँ मने फूल थे,
नवल शाह तमाशे में मशगूल थे।

पड़ी अवचर्ती[८] दश्त उस नार पर,
अक्ल गुम हुई शाह हुआ बेख़बर।

सो इस बेसुदी में बी थे वो च धुन,
के लुब्दाय[९] थी भोत जोराँ सो मन।

जो देखा अथा ख़ाब में माह कूँ,
हुआ ख़ाब में ख़ाब उस शाह कूँ।

---

१ गर्व २ थोड़ीदेर में ३ स्त्री, औरत ४ आनन्ददायी ५ काँच के प्याले ६ जाल
७ भोजन ८ अचती, अच्छी लगती ९ लुब्ध करती थी।

जो उस नींद में ते हुआ टुक हुश्यार,
न थी उस सबूरी न था उस क़रार।

न भुईं पर दिसे वो, न असमान में,
रह्या शह उसी नार के ध्यान में।

लग्या तलमलाने बहुत धात सूँ,
कह्या जाय ना बात वो बात सूँ।

न यो बात हर एक कूँ फ़ाम होय,
वही जाने जिस पर जो यो काम होय।

कधीं चक हँसे होर कधीं चक रोय,
कधीं सुद पावे कधीं सुद खोय।

उसी धात दिन रात रहता अछे,
अपस मैं अपै यूँ वो कहता अछे।

पड़ी तल खुले तन बिरह बस सती,
गुलालाँ लगे झड़ने नरगिस सती।

भुलाय चंचल धन वो यूँ शाह कूँ,
के लुब्दाय ज्यूँ कहरुबा[1] काह[2] कूँ।

उठे होर फिर सोय शाह जाय कर,
के वो नार बी ख़ाब में आय कर।

जो हर बार यूँ ख़ाब में यार आय,
तो आशिक़ कूँ बिन ख़ाब ही कुच न भाय।

परेशान हैरान बेताब था,
न कुच उस को आराम ना ख़ाब था।

---

१ चुम्बक २ कुश, घास।

ग़ज़ल

पीव अपने कूँ टुक आज मैं निस सुपने देखी सोय कर,
जब पीव चल्या सट सेज मुँज तब सोती उठी रोय कर।

हट बिरहा अपना सार ने मुँज चंचल लाग्या मारने,
न जानूँ साईं कारने मुई अजूँ क्या-क्या होय कर।

न पूछूँ बहमन जोतिषी कब मिलना पीव सूँ होय,
ग़म बिरहा सब में सोयसी ना जाने दुःख यो कोय कर।

क्यों टालूँ बिरहा झाल सकी नई सकती हूँ सम्भाल सकी,
अब क्यों कर पाऊँ लाल सकी जो बैठी हत ते खोय कर।

यकता में सहेली मरना दिल दूजे पर ना धरना,
उस पीव कूँ अपना करना इस पापी जीवँ कूँ खोय कर।

लग्या शह उसासाँ भरन आह मार,
के नज़दीक नई हैं वो गुनवन्त नार।

कधीं बेखबर होय कधीं होय हुश्यार,
कधीं पीव-पीव कइ कधीं यार-यार।

यों सुन मुतरिबाँ सब खबरदार होय,
जो मस्ताँ थे वों सो हुश्यार होय।

भोत धात सूँ बात समजाय कर,
कहे शह कूँ नज़दीक यूँ आय कर।

के "ऐ शह तूँ जम[1] शाद[2] खुर्रम[3] हुआ च,
नहीं ग़म तुजे कुच तूँ बेग़म हुआ च।

जकुच तुज कूँ होना सो हाज़िर है सब,
उसासाँ जो भरता सो तूँ क्या सबब।"

---

१ हमेशा २ ख़ुश ३ आनान्दित।

कह्या शह "यू दिल मनीच धरना भला,
किसी पास ज़ाहिर न करना भला।

के यो ख़्याल होर ख़ाब होर वहम है,
ख़ुदा कूँ मेरा हाल सब फ़हम है।

किसी कूँ के मुँज इश्क़ उसका अहै,
वही जाने मुँज इश्क़ जिस का अहै।

जकोई राज़ यो बाब[1] कन खोलेगा,
दीवाना हुआ कर मुँजे बोलेगा।

नहीं बात कहने की यो खोल कर,
के समजाऊँ अब किस कूँ मैं बोल कर।

अभूँ सेज पर मौज[2] ज्यों आब में,
के चटका लगा गई सकी ख़ाब में।"

जिता मुतरिबाँ शह कूँ समजा कहे,
तग़ाफल[3] किये शाह होर चुप रहे।

किते किये के मस्ती के चाले हैं यो,
किते किये परन के उलाले[4] हैं यो।

किते किये उसे कुच्छ औछट हुआ,
किते किये उसे इश्क़ का चट हुआ।

छुपी बात के पर्दे कूँ खोलने,
अपस में अपै यूँ लगे बोलने।

जो वैसे में मुतरिब ख़ुश आवाज़ नाम,
अथा शाह का एक खासा ग़ुलाम।

सूरज सा जलाजल[5] लेकर हात में,
लग्या ज़हरा[6] ज्यूँ गाने इस रात में।

---

१ द्वार २ लहरें ३ अनजान बन कर ४ छाले ५ एक यंत्र ६ एक नक्षत्र, कहा जाता है ज़हरा एक सुन्दर गायिका थी।

दुआ कर सता[1] कर मना कर अवल,
पढ्या शह के आँगे पिछें यो ग़ज़ल।

ग़ज़ल

चलो ना जाय ऐ सहलियाँ हमारा लाल जाँ अछता,
वले कोई जानता नईं है के भोंदू वो कहाँ अछता।

निशाँ नईं, बेनिशाँ है वो निशाँ उसका न कर मुँज कूँ,
सकी उड़ जाएँ पंखी हो अगर उस कईं निशाँ अछता।

वो तन के बोल रे सब ऐ अरी ऐ बाव[2] ना चुप रह,
अगर तुज फ़ाम है तो कह मेरा वो पीव काँ अछता।

किसे मैं अन्त देऊँ मेरा .खुले अब बख़्त क्यों मेरा,
न होता हाल यूँ मेरा, अगर वो महरबाँ अछता।

हुए लब ख़ुश्क नैनाँ तर कहे जग मुँज कूँ आशिक़ कर,
के मस्ती होर यह नेहा होर छर[3] सकी यो नईं निहाँ[4] अछता।

---

१ प्रशंसा २ पगली ३ छल ४ गुप्त।

आगाही याफ़तन× इब्राहीम अज़ इश्क़ मुहम्मद कुली क़ुतुब शाह

छुपी रात उजाला हुआ दीस का,
लग्या जग करन सेव परमेस का।

शफ़क़[1] सुबह का नईं है असमान में,
के लाले[2] खिले सुम्बुलिस्तान[3] में।

जो आया झमकता सुरज दाट कर,
अंधारा जो था सो गया न्हाट[4] कर।

सूरज यूँ है रंग आसमानी मने,
के खिल्या कमल फूल पानी मने।

हर यकस कूँ हर एक कुन्च काम था,
नवल शाह कूँ उस नार का फ़ाम था।

कह्या शाह अब हाल नईं मुँज मने,
भला है जो गंज[5] हो अभूँ कुंज मने।

अपस में अपै फ़िक्र कुछ गूँद[6] कर,
रह्या गुंचे के नमने मुख मूँद कर।

के धरता हूँ दिन में जकुच बात मैं,
करूँ जाके वो बात किस सात मैं।

न कोई यार दिल सोज़ महरम[7] है मुँज,
नईं को हम नफ़्स[8] होर हम दम है मुँज।

अपस सूँ अपीच आज महरम हूँ मैं,
अपस सूँ अपीच आज हम दम हूँ मैं।

जिते इस ज़माने मने यार हैं,
दग़ाबाज़ ऐबाँ चुनन हार हैं।

× प्राप्त होना १ उषा की लाली २ एक फूल ३ स्थान, बाग़ का नाम ४ भाग कर ५ हाथी ६ विचार कर के ७ जिस से कोई बात गुप्त न रहे ८ साथी, मित्र।

उनो कूँ पत्या[1] बात बोल्या न जाय,
उनो के कने दिल कूँ खोल्या न जाय।

पत्याना उनो कूँ कहो क्यों ककर,
के दिल में बुरे, खूब हैं मूँ उपर।

यो यारी में किस धात का क़हर[2] अछे,
जो मूँ में शकर दिल मने ज़हर अछे।

जकोई यार याराँ मने नेक है,
ज़बान होर दिल दोनों उस एक है।

चलन्त[3] देक कर तूँ हरेक कूँ समज,
के धोता सुलक्खन है बैस्या सो लज।

न मैं भाई में हूँ न मैं माय में,
के तालिब कूँ है लाफ़ तन्हाई में।

जो कोई घर में मशगूल अछे यार सूँ,
नहीं काम कुच उस कूँ बाज़ार सूँ।

जो मश्ताक़[4] आशिक़ है दीदार का,
ग़नीमत है उस याद भी यार का।

जिसे यार का ध्यान नित यार है,
दो आलम की सुहबत ते बेज़ार है।

पिरत शह कूँ डाट्याँ बहुत ज़ोर सूँ,
हुवा फ़ारिग़ इस जग के शर शोर सूँ।

किया लोग नज़दीक के दूर सब,
नदीम[5] होर मुतरिब बुरे सब अजब।

अँझूँ लाल मद नैन प्याला हुआ,
नदीम आह मुतरिब सो नाला हुआ।

---

१ भूत काल की बातें २ क्रोध ३ चाल-चलन ४ इच्छुक ५ मित्र।

जो दहलीज़[१] दे शह सुता घर मने,
पड़े मुतरिबाँ शोर होर शर मने।

रोने ते आवाज़ सुन आह का,
कहे हाल तग़य्युर[२] हुआ शाह का।

अपै है गम्भीर होर मन थीर नईं,
हमीं क्या करें अब के तदबीर नईं।

इब्राहीम शह कन कहन मुतरीब आय,
के क़िस्सा यो शह का च पाया न जाय।

कहे शह कूँ शहज़ादे का हाल सब,
के यूँ हाल उसका है पामाल[३] सब।

निकली हरयक आह यूँ शाह ते,
के नौ खन कबाब होयँ उस आह ते।

चमन सेज पर आप सीस पाड़[४] कर,
सख्या कपड़े जूँ फूल सब फाड़ कर।

शहंशा सुन्या बात यूँ सर बसर[५],
चल्या फ़िक्रवन्द हो हरम[६] के अधर।

कह्या माय कूँ बाप वो आय कर,
के फ़रज़न्द कूँ देक टुक जाय कर।

के फ़रज़न्द का कुच्च ख़बर नईं तुजे,
ख़बर ते ख़बर यो अगर नईं तुजे।

न दिन टुक क़रार[७] उस न निस ख़ाब है,
के आरम नईं होर बेताब है।

अपस में अपै आह भरता अहे,
दीवाना हो कर शाँद (?) करता अहे।

---

१ चौखट २ बदल गया ३ बरबाद ४ डाल कर ५ सिल-सिले से ६ मकान का जनानी हिस्सा ७ चैन।

सुनी बात इस धात जब माँ जनी,
जो सारी थी सो फ़िक्र सूँ हुई खनी।

वो माँ बाप बेहोश हो, भर उसास,
चले मिल कर अपने सो फ़रज़न्द पास।

जो उस हाल सों देखे फ़रज़न्द कूँ,
बिसर गए अपस के सुख आनन्द कूँ।

महरबान माँ बाप वो दो सगे,
सो शहज़ादे के पाँवो पड़ने लगे।

कहे "शह न कर ग़म तूँ खुश हाल अछ,
सदा सुर्खरु[1] ज्यूँ तूँ गुल्लाल अछ।

नको दिल कूँ अपने फ़िक्रवन्द कर,
फ़िक्रवन्द की[2] है तू अनन्द कर।

दोनों मिल के लाक आरज़ू होर चाव,
कहे शह तेरा दर्द हमनाँ कूँ आव।

अपस दिल की तूँ गाँट अब खोल शह,
तेरा हाल यूँ की हुआ बोल शह।

उठ्या शाँह तब आह पर आह मार,
कह्या बाप होर माँ कूँ बेशक़ पुकार।

अजब एक दर्द मुँज है दारु नहीं,
समद पूर है होर कोई उतारु नहीं।

दवा करने याँ आदमी काम नईं,
के यो दर्द आदमी कूँ च कुछ फ़ाम नईं।

मुहब्बत के भवँर[3] में हिलग्या हूँ मैं,
दीवाना हूँ यारी कूँ बिलग्या हूँ मैं।"

---

१ खुश रहना २ क्यों ३ पानी का भँवर।

जो देख्या था ख़ाब उस रात कूँ,
सो उस ख़ाब के राज़ की बात कूँ।

कधीं दिल में राखे कधीं मूँ में ल्याय,
कधीं कुच बोले कधीं कुच छुपाय।

बराहीमशह जाँ पैछान कर,
कह्या शाह का हाल सब जान कर।

के यो हाल नौखेज़[1] होर फ़र्द है,
भौतेक उसे इश्क़ का दर्द है।

मुहब्बत तो ली गर्म धरता अहै,
वले कहने कूँ शर्म करता अहै।

कहे शह के तदबीर यो सहल है,
अगर ना करे तो बहुत जहल है।

१ नया।

मश्वरा मादर व पिदर शहज़ादा[1]

ब्राहीम कुतुबशाह मजलिस सिंगार,
किए मुस्तइद[2] मो पै इशरत[3] अपार।

जितियाँ खूब खुश शक्ल थियाँ सुन्दरियाँ,
सो करनाटक होर गोर गुजरात कियाँ।

जो चीन होर माचीन के थे बुताँ,
सो खुशतबा खुशफ़हम खुश सूरताँ।

हर यक खूब महबूब बुत फ़ारसी[4],
बदन ज्यूँ जलती अछे आरसी।

जो सहेल्याँ वो झमकायँ मुख नूर कूँ,
दीवाना करें चाँद होर सूर कूँ।

अगर देकता जोत उनन नूर का,
फरिश्ता न करता सिफ़त हूर का।

जो आवें चमन में सकियाँ साज सूँ,
फुलाँ गुंचे हो जाएँ फिर लाज सूँ।

मिलियाँ आज नारियाँ सो संसार कियाँ,
अंखियाँ लालें घुंचियाँ[5] हर यक नार कियाँ।

मजालिस अजब शाह आली किए,
के हूराँ कूँ ल्या बहिश्त खाली किए।

परियाँ सुन्दरियाँ होर अंचल पराँ,
चंदा मुख है चन्दना सो तन गोहराँ[6]।

अजम्भा किए काम शह जग अधार,
परियाँ होर हूराँ मिल्या एक ठार।

---

१ शहज़ादे के माता पिता का परामर्श करना २ तैयार ३ आनन्द ४ ईरान के ५ गुमची ६ मोती।

कहे शाह कूँ लेव भुला कर तुमें,
अपस में अपै मिल रिझा कर तुमें।

कुतुबशाह कूँ जे कोय रीझायगी,
बड़ा मर्तबा सब में वो पायगी।

बड़ी नार वो है जो भावे उसे,
किसे बख़्त है जो रिझावे उसे।

तद्बीर तसकीन शहज़ादा[1]

बुला शाह कूँ शाह भेज्या वहाँ,
परियाँ होर हूराँ मिलियाँ थियाँ जहाँ।

रज़ा[2] हुई थी ज्यूँ शाह आलम सते,
अपस में अपै त्यूँ सकियाँ हम सते।

रिझाने लग्या शह कूँ मन में शिताल[3] (?),
परियाँ छन्द[4] भर्या छन्द सूँ सब लग दुम्बाल[5]।

कधीं कोई खड़ी रहती आ सामने,
कधीं शह उपर करती कई आमने।

कधीं बन्द पकड़ती थी कोई नाज़ सूँ,
कधीं दौड़ कोई झाड़ती साज़ सूँ।

कधीं कोई खिलाती अथी पान आ,
कधीं कोइ पकड़ती थी पीकदान आ।

कधीं गुड़[6] देने कोई आती अथी,
कधीं नेह सूँ कोई जीव लाती अथी।

कधीं कोई प्याला पिलाने कूँ आये,
कधीं कोई नुक्ल ल्याके शह कूँ चकाये।

कधीं फूल सट्ती[7] थी कोई बिरमने,
कधीं कोइ बुलाती अथी घर मने।

कधीं कोइ दिखाती सिना खोल कर,
कधीं कोइ रिझाती थी बचन बोल कर।

कधीं कोइ दीवानी हो फिरती अथी,
कधीं कोइ बेसुद हो गिरती अथी।

---

१ राजकुमार को सान्त्वना देने का प्रयत्न २ इच्छा ३ शिताब (?) जल्दी ४ फ़रेब, धोखा ५ एक के पीछे एक ६ चुम्बन ७ फेंकती।

किल्याँ सुद सव्याँ होर किल्याँ जीव दियाँ,
रिझाने कूँ तक़सीर[1] नईं कुच्च कियाँ।

शहंशा पे जीव भोत धरतियाँ अथ्याँ,
इशारत अँखियाँ मार करतियाँ अथ्याँ।

छन्दाँ होर नाज़ाँ के कारी मंतर,
सकियाँ चंचल्याँ फूँक्याँ शाह पर।

सेनेह[2] शाह कूँ एक का सद[3] हुआ,
मन्तर था उनो का सो सब रद हुआ।

के उस शह के दिल में सोधन महर[4] था,
न था महर वो बातिलुस्सिहर[5] था।

जो एकस कूँ जिस दिल मने ठार अछे,
ज़रूरत है जो दुसरा वहाँ भार अछे।

सो वैसे मने शाह वो अथ कर,
गले सूँ लगा शह कूँ समजाय कर।

कह्या प्यार सूँ शाहज़ादे कूँ शह,
"तेरा जीव इतन्याँ में किस पर है कह।"

दिया शह कूँ यूँ शहज़ादा जवाब—
के "ऐ शह नको कर तूँ मुज पर इताब[6]।

हरेक नार इस ठार औतार है,
सुघर होर चतुर चौसार[7] है।

वले कोई मेरे दिल कूँ भाती नहीं,
किसी में सो वो तोक आती नहीं।

अगर नार अछती वो उस ठार पर,
तो भुलतियाँ सकियाँ सब वो उस नार पर।

---

१ अपराध २ स्नेह ३ सौ ४ प्रेम ५ मंत्र को तोड़ना। बातिलुस=तोड़ना; सिहर=मंत्र
६ क्रोध ७ हुश्यार।

दीवानी हरेक उसकी यूँ नार हुइ,
के सर ते मुँजे रश्क़ का ठार हुइ।

जो यो देकत्याँ उस कूँ चक नैन भर,
तो पानी पित्याँ उस उपर वार कर।

जो धन मुंज कूँ लुब्दाई सो याँ नहीं,
यतियाँ[1] हैं वले एक वो याँ नहीं।

इनो में किसी पर मेरा दिल नहीं,
इनो ते मुँजे कुच हासिल नहीं।

जो पंखी देखे चाँद कारन जफ़ा,
सितारे झमकने ते उस किया नफ़ा।

के आशिक़ अहै शमा का जो पतंग,
न भावे उसे फूल का कूच संग।

कमल फूल तालिब जो है सूर का,
वो मुहताज नईं चाँद के नूर का।

मुँजे उस सकियाँ का सो यो छन्द न भाय,
समन्दर कूँ अमरीत क्या काम आय?

सो धन बाज शह किस पै जीव नईं धरे,
के हंस मोती खाता है ना कंकरे।

ज़रूर अब हुआ भेद यू बोलना,
मुअम्मा[2] जो है सो उसे खोलना।

केता बात मा-बाप ते मैं छुपाऊँ,
किसी होर दुसरे कूँ दरम्यानी ल्याऊँ।

अपस कूँ अपच्च हो के रखता सम्भाल,
अपस का अपै हाल कहता अताल।

---

१ इतनी २ गुप्त।

बिनसता अहे काम कुच लाज ते,
मुँजे बात यो फ़ाम हुई आज ते।

इसी बात पर काम ल्याया उने,
बडियाँ ते जो यो पन्द पाया उने।"

सो राज़ाँ की गुंचियाँ कूँ कर फूल तब,
कह्या ख़ाब देख्या सो शह पास सब।

सुन्या बात जब शह ने उस धात की,
उड़ी सब ख़बर शाह की ज़ात की।

कह्या शाह "शह का अजब हाल है,
के क़िस्सा यो सब ख़ाब होर ख्याल है।

मबादा यो आख़िर दीवाना हुए,
किधर का किधर याँ ते जाना हुए।

खुदाया दे तूँ सब्र व आराम उसे,
पिला धन केरे वस्ल[1] का जाम उसे।"

---

१ मिलन।

मशवरा बा अतारद[1]

अजब एक उस वक्त पर मर्द था,
हुनरवन्द आक़िल जहाँ गर्द था।

दुनिया के अपीं बन्द ते आज़ाद हो,
फिरे शर्क़[2] ते गर्ब[3] लग बाद[4] हो।

कधीं रूम में था कधीं शाम[5] में,
के वुस्ताद था वो हरेक काम में।

अतारद सो नक्क़ाश का नाम था,
भला होर बुरा सब उसे फ़ाम था।

हरेक मुल्क ऊपर गुज़र था उसे,
हरेक शहर का सब खबर था उसे।

हरेक ठार ऊपर उसे ठार था,
के खुश तबा मिसकीं[6] अदबदार था।

हरेक शहर फिरने हवस था उसे,
हरेक काम करने कूँ जस[7] था उसे।

सो नक्क़ाश हँस मुख ज्यूँ वरद[8] था,
अजब कुच शीरीं जबाँ मर्द था।

धरे काम में लाफ़ मानी[9] उपर,
करे बात यूँ नक्श पानी उपर।

अगर ख्याल दौड़ाय वो दूर का,
अँखियाँ मूँद सूरत लखे हूर का।

जहाँ खूब खुश शक्ल देखे सुंधर,
लिखे नक्श उसका वो नक्क़ाश कर।

---

१ अतारद, एक प्रसिद्ध चित्रकार था उस से विचार विनिमय २ उत्तर दिशा ३ दक्षिण ४ हवा ५ सीरिया ६ शान्त स्वभाव ७ कीर्ति ८ खुश तबियत ९ ईरान का प्रसिद्ध कलाकार।

जित्याँ खूब थियाँ सुन्दरियाँ जग मने,
रख्या था उनन नक्श लिक अप कने।

करे जिन्दगानी वो इस धात सूँ,
सिरा ना सके कोई उसे बात सूँ।

यो नक्क़ाश की शह ख़बर पाय कर,
उसे अपने खिलवत[1] मने ल्याय कर।

संगात अपने बिटला उसे चाव सूँ,
लगे करने ताज़ीम[2] बहू भाव सूँ।

कहे "तू जो देख्या जित्याँ सुन्दर्यां,
सुलक्खन छबेल्याँ चंचल छुएड भर्यां।

तुजे कौन इतन्याँ मने खुश आइ है,
तुजे कौन कह सुन्धरी भाइ है?"

सुन्या शाह ते बात यो कान धर,
अथा शाह कूँ नक्क़ाश तसलीम कर।

के "खूबाँ तो शाहा भोत खूब है,
यकसते सो यक खूब महबूब है।

किसे बास है और किसे रंग है,
किसे बास होर रंग भी संग है।

फुलाँ होर खूबाँ यक ज़ात है,
के यक रंग यक रूप यक धात है।

किसी में सो छन्द बन्द होर नाज़ भोत,
किसी में सूरत शक्ल का साज़ भोत।

किसे मैं बड़ा कउँ किसे मैं सरावूँ,
के खूबाँ है शह खूब सब अपने ठावूँ।

---

१ एकान्त स्थान पर २ खातिर तवाजो।

नहीं बास सुम्बुल[1] की नरगिस मने,
जो इस में अहे सो नहीं उस मने।

न यक जिन्स लक जिंन्स महबूब है,
जो भावे अपस कूँ वही ख़ूब है।

जो आशिक़ लुब्दता देक आस ते,
वो कुच ख़ारिज है रंग होर बास ते।

जनम सब घटा शह इसी काम में,
जो तू पूछता तो मेरे फ़ाम में।

यते मुल्क देख्या वले कोई नार,
न देख्य कहीं मुश्तरी नार सार।

परियाँ सुन्धरियाँ सुधन हूर है,
के बाकी सो चाँदाँ वो ज्यूँ सूर है।

नवे छन्द होर नाज़ तिल-तिल न पाय,
के फ़ितने अहे बाप ग़मज़ा सो माय।

सो सिंगार कर आए धन साज सूँ,
सितारे ते गुम होए अजत[2] लाज सूँ।

झमक खन में झमकाय मुक नूर का,
शरम खाय ख़ूबी में धन हूर का।

जो बाताँ में वो नार टुक आएगी,
हथेली में ले आ बहिश्त दिखलाएगी।

अजब कुच सो ख़ूबी है उस धन मने,
के फिरते उसे देख टुक बन मने।

रहे इश्क़ से फूल लहू घूट कर,
मरें झलते गुंचे सिना फट कर।

---

१ एक फूल २ फ़ौरन।

गिरफ्तार हुए फूल धन क़हर[1] में,
तो यूँ टाँगते सियासत[2] कर शहर में।

सो बिजल्याँ सुधन सम हो आती अहैं,
शिकम[3] दर्द ते तलमलाती अहैं।

अखियाँ लाल उस नार नाराँ कियाँ,
के मोती उपर ज्यूँ जड़े माँनकियाँ[4]।

अछे मोल बीच नैन वो झमकने,
के मछलियाँ हैं सूरज के चश्मे मने।

तमाशे दिसे उस मने धात-धात,
ग़ज़ब ज़हर होर लुत्फ़ आबेहयात।

दिसे पुतली यों नार की आँख में,
के बैठ्या भँवर आँब[5] की फाँक में।

जो आशिक़ हो कर जीव उसे साथ लाय,
गुसे ते मरे प्यार ते जीव पाय।

जिसे हूर कहते सो धन छाँव है,
दुनिया में झूठी हूर का नाँव है।

जो बंगाले का सिहर जी घात है,
सो उस मुश्तरी नार की बात है।

बंगाले शकर कूँ जो याँ लाते हैं,
सो उसके अधर उस कूँ निपजाते हैं।

बंगाले शकर कूँ जो मीठाई है,
सो मीठाई धन लब ते वो पाई है।

अपस सेज़ दिखला के वो शूख़ नार,
सूरज चाँद तारे मिला एक ठार।

---

१ क्रोध २ न्याय कर के ३ पेट ४ मनके ५ आम।

सँपर[1] सहर मन्तर के दावाँ तले,
उभालाँ लड़ें उसके पावाँ तले।

अँचल उस मुसल्ला[2] है जिबरील[3] का,
सिया तिल सो सुभा सिराफील[4] का।

रखे नार वो नाज़ सूँ पग जहाँ,
सूरज चांद सिजदा करें आ वहाँ।

लग्या नईं अझूँ हाथ किस ग़ैर का,
के नईं रूह कूँ ठाँवँ वाँ सैर का।

बंगाले में है ठार उस नार का,
ना है चाँद ना सूरज उस सार का।

धरे नार वो मुशतरी शाह नाम,
कते बादशाहाँ हैं उसके ग़ुलाम।

लेवे ना नाँवँ किन मर्द का उस अँगे,
नहीं कोई ऐसा जो उस कूँ मंगे।

बंगाले की उस पादशाही अछे,
उसी नार की वाँ दुराही[5] अछे।

उसे एक[•] ज़ुहरा सगी भान है,
सो दाऊद[6] ते वो ख़ुश इल्हान[7] है।

बड़ी हूर है ज्यूँ नहनी ज्यू परी,
सो ज़ुहरा अहै यक, दूजी मुशतरी।

अगर उस सकी का तुजे आस है,
तो उसकी सूरत अब मेरे पास है।

---

१ फंस कर २ नमाज़ पढ़ने की दरी ३ जिब्रेल एक फरिश्ता था जो ईश्वर का सन्देश पैग़म्बरों को देता था ४ एक फरिश्ता, कहा जाता है कि सृष्टि को नष्ट करने के लिए वह क़ियामत के दिन बुगुल बजाएगा ५ हुकूमत, तेलुगु शब्द दुरा = राजा से ६ एक पैग़म्बर जो मधुर गायक थे ७ ध्वनि।

अगर तूँ मंगेगा तो मैं लाऊँगा,
तुजे उसकी सूरत सो दिखलाऊँगा।"

कहा शह "मुँजे बेग दिखला अताल[1],
के मुंज में रह्या नईं है अब कूच हाल।

अगर सूरत उसकी जो दिखलाएगा,
तो तूँ दिल के मक़सूद[2] सब पाएगा।

अताल उसकी सूरत दिखाना भला,
वो सूरत कहाँ है सो ल्याना भला।"

अतारद लगा उस कूँ समजाय कर,
शहंशाह कूँ बाताँ में टुक लाय कर।

जो धन का सूरत शह कूँ दिखलाइया,
सों शह लुब्दी कूँ सरते लुब्दाइया।

सो धन का सूरत कुतुबशह देक कर,
पछाना के वई है यो मनहर सुन्धर।

निशाँ उसके इस में जो पाने लग्या,
सो चुम चाट छाती सूँ लाने लग्या।

"उसे मेरे दिल के भितर ठार है,
दीवाना करी मुंज सो यो नार है।

दग़ा दे गई थीं वले आय भी,
लग्या था मेरा जीव होर लाय भी।

अजब हूर खसलत[3] अहे यो परी,
के सपने में आ मुंज दिवाना करी।

सो धन ख़ाब में जानी मुंज बल नहीं,
यो ओकल बिरह की है उस कल नहीं।

---

१ अभी २ इच्छित इनाम ३ चरित्र।

जनम सब उसी धन कूँ जपता हूँ मैं,
उसी धन की ख़ातिर सो तपता हूँ मैं।

मेरे ख़ाब में आई सो योच है,
मुँजे यूँ जो लुब्दाई सो योच है।

यही नार उस महल पर आई थी,
यही नार वाँ अपसे झमकाई थी।

इसी नार कूँ देक मैं सुद सट्या,
उसी नार के इश्क़ में यूँ घट्या।

मेरा दिल ले कर गई है यो सुन्दरी,
परेशान की है मुँजे यो परी।

चितारा जो धन रूप ल्याया चितार[१],
तो टुक आज मेरा है ख़ातिर क़रार।

नहीं तो मेरा हाल मुश्किल अथा,
के मोतीच बेताब यो दिल अथा।"

सों नक़्क़ाश का भोत उपकार जान,
करुड़ होर लाखाँ दिए उस कूँ दान।

के याक़ूत अलमास[२] हीरे, रतन,
दिए बेहिसाब उस कूँ शह माल धन।

नहीं अन्त कई कुच उस दान कूँ,
गुलिस्ताँ किए शह बयाबान कूँ।

पड्या शह के ख़ुशहाल हो कर वो पग,
सुने में हुआ ग़र्क़ सिर पाँव लग।

जो धन की सूरत शह देखी शौक सूँ,
पड़ी उस वक्त यो ग़ज़ल जौक़[३] सूँ।

---

१ उतार कर, चित्रित कर के २ हीरा ३ शौक़ से।

ग़ज़ल

दिसें धन मुख बीच नैनाँ के मोती थाल में ढलते,
लटाँ छूट तन उपर यूँ है भुवंग ज्यूँ नीर पर झुलते।

बदल रंग स्याम खन कुण्टल नयन अबलक़[1] निपट अचपल,
के काले डोंगराँ के तल बचे हरनाँ के उछलते।

लम्बी लड़ अप-अपस कित की निपट सर ज़द अदिक हटकी,
छुड़ाले नाग तुज लट के सँपारे देक कर झुलते।

देखत धन नयन झल खा कर मछ्याँ दावा कियाँ आ कर,
तो सब जग यो पकड़ ल्या कर कड़ाई बीच ल्या तलते।

नैन दो मस्त चंचल के अछे बीच मुख निर्मल के,
कंवल पर बुन्द ज्यूँ जल के सो रह-रह बावते हिलते।

दसन ते जगमगी जोती अमोलक ढाल गंज मोती,
दरया देक रश्क़ ते रोती सितारे हसद ते जलते।

दुबुल धन पैने कानाँ में के सुर पन फूल पानाँ में,
सूरज चाँद आसमानाँ में बिचारे लाज ते गलते।

तिलक फुन्द नाना साजे क्यों के मुंग मोत्याँ की लढ़े यूँ,
क़जल मखमल कननल पर ज्यूँ सो मोती आज झल झलते।

× × ×

अतारद कूँ शह हाल सब बोल कर,
कहे ख़ाब देखे थे सो खोल कर।

के "उस धन सूँ मुंज इश्क़ इस धात है,
कह्या हूँ तुजे मैं जकुच बात है।

के आशिक़ अहै तो अपी दर्द मन्द,
तुजे फ़ाम उस काम की सब है छन्द।

---

१ मिश्री।

अताल उसके मिलने की तदबीर कर,
तूँ बेग हो नको काम ताख़ीर[1] कर।

जो दिखलाएगा तूँ सो धन कों मुजे,
जकुच तूँ मँगेगा सों देऊँगा तुजे।

संगाती तुज ऐसा कहाँ पाऊँगा,
जिधर तूँ लेजागा उधर आऊँगा।

के मैं यार तेरा मेरा यार तूँ,
ले चल जाँ है वो धन मुंज उस ठार तूँ।"

अतारद यो सुन बात हैरान हो,
अपस में अपै टुक पशेमान[2] हो।

कह्या शह कूँ "यो काम मुश्किल अहै,
करन काम इस धात किस दिल अहै।

के यू काम अन्देश करना भला,
अगर सच पूछे तो बिसरना भला।

तूँ देख्या नहीं दर्द अझूँ दूक[3] का,
तूँ नईं जानता कुच क़दर सूक[4] का।

तूँ आक़िल है शह टुक अपस में बिचार,
नको हो तूँ इस काम पर अख़्तियार।

कधीं टुक यकेला रह्या नईं है तूँ,
अझूँ दुख दर्द ग़म सह्या नईं है तूँ।

के यो काम हँसी खेल का काम नईं,
फ़न इस काम का हर किसे फ़ाम नईं।

तूँ जिस मुल्क जाने कूँ है अख़्तियार,
परी देव जिन पन्त में ठार-ठार।

---

१ देरी २ दुःखी ३ दुःख ४ सुख।

कहीं बात में ख़ैर कई शर अहै,
कहीं आस उमीद कई डर अहै।

तू नौ खेज़ होर जान मग़रूर है,
बुढ़ियाँ का अन्देशा भोत दूर है।

जवानी दिवानी अख़लवन्द नहीं,
जवानी यों बेबन्द उसे वन्द नहीं।

तूँ अपनी जवानी में शह गर्क़ है,
कच्चे होर पुख़्ते में ली[1] फ़र्क़ है।

सिकन्दर पड्या था जो ज़ुल्मात में,
रह्या था बला के सँपड़ हात में।

बुढ़ियाँ सोंच उने तो बिचार्यां चिचार,
बुढ़ियाँ की च हिकमत ते निकल्या बहार।

बुढ़ियाँ कूँ जो अवलीच[2] ते पूचता,
तो हरगिज़ उसे दुख न होता येता।

जवानाँ की सुन है सो शरशोर है,
बुढ़ियाँ की सों तदबीर कुच होर है।

पके बाज[3] रंग खूब पानाँ में नईं,
बुढ़ियाँ में जकुच है सो ख़ामाँ[4] में नईं।

दुनियादार साहब जो सकते अहैं,
बुढ़ियाँ कूँ नज़ीक अपने रखते अहैं।

गम्भीर हैं बुडे नित गम्भीराँ कने,
जवाँनाँ दुआ मंगते पीराँ कने।

बुड्ढे खूब मक़बूल हरेक बाब,
बुढ़ियाँ की दुआ होती है मुस्तेजाब[5]।

---

१ बहुत २ पहले ही ३ बिना ४ कच्चे अर्थात् जवानों में ५ स्वीकृत होना।

नहीं झूट यो सच है सच जान तूँ,
बुढ़ियाँ की यो पन्द ख़ूब है मान तूँ।

के है घात[1] भो घात[2] हर घाट में,
के थण्ड धूप होर बाद है बाट[3] में

दखन ते बंगाला भोत दूर है,
बन्दा ऐसे कामाँ ते माज़ूर है।"

सो यो बोल उस शह कूँ भाया नहीं,
अदा बे रोश कुच ख़ुश आया नहीं।

सो ख़ातिर पे टुक माँदगी[4] ल्याय कर,
कह्या शाह ग़ुस्से मने आय कर।

"तूँ सुस्त होर बाताँ बी तेरियाँ है सुस्त,
दुरुस्त नईं तो कहता है सो ना दुरुस्त।

नियत में क्या हुआ उधर जाने का,
नहीं हाज़त[5] अब तेरे सिकलाने का।

बुढ़ियाँ कूँ सो नहनवाद की अक्ल है,
किताबाँ में लिखे से यो नक़ल है।

बुढ़ियाँ कूँ कहाँ अक्ल संपूर है,
के साटे व बुंद न्हाने मशहूर है।

बुढ़ियाँ कूँ न कुच अक्ल ना फ़ाम है,
बुढ़ियाँ का झुटे नाँव बदनाम है।

जफ़ा पीरी[6] होर नातवानी[7] मने,
हरेकस कूँ लज़्ज़त जवानी मने।

बुढ़ियाँ के सो कामाँ में अब रुच नहीं,
बुढ़ियाँ में अम बाज़ भी कुच नहीं।

---

१ चालाकी २ बहुत तरह से ३ मार्ग ४ बीमारी ५ आवश्यकता ६ बुढ़ापा ७ कमज़ोर।

बुढ़ियाँ में सो कुच ज्ञान का बल नहीं,
दुरस्त है बुढ़े झाड़ कूँ फल नहीं।

बुढ़े बैस कर खाने कूँ खूब है,
बुढ़े पुंगड़ी[1] फुसलाने कूँ खूब है।

तर्ज़ इश्क़ का तूँ न पैह्चानना,
हमें की तो भी आप ना जानना।

यो क़िस्सा वो मसला हुआ दक्खनी,
भरोसे केरे भैंस कड़ा[2] जनी।

तूँ इतनेच में यूँ हुआ सहम सूँ,
यते मुल्क देख्या सो किस फ़हम सूँ।"

किने कई न थी बात यो उस संगात,
वले मसलिहत[3] कूँ कही शह यू बात।

"तूँ आकिल है कर तुज पत्याया हूँ मैं,
तुजे अपने नज़दीक ल्याया हूँ मैं।

लगे दिल कूँ आशिक़ के ना तोड़ना,
टुट्या गर अछेगा तो भी जोड़ना।

हिम्मत कर तूँ तक़वे[4] की छोड़ता ?
जुड़्या दिल मेरा क्या सबब तोड़ता ?"

अतारद कह्या "शह तूँ शादाँच[5] मुदाम[6],
तूँ साहब मेरा मैं हूँ तेरा गुलाम।

तुजे इश्क़ में आजमाता अथा,
सितम बात इस धात लाता अथा।

सदा राज कर होर जी जग में जम,
सचा पाक आशिक़ तूँ साबित क़दम।

१ बच्चा २ पड़ा ३ विचार करने के बाद ४ परहेज़गारी ५ खुश ६ हमेशा।

जुकोई यार सूँ अख़्तियार होयगा,
तो उस यार सूँ अख़्तियार होयगा।

अगर यार दिलदार होर अह्ल[1] हैं,
तो यो काम करना भोत सह्ल है।

जो शह तुज सो धन का येता फ़ाम है,
तो यूँ काम करना मेरा काम है।"

सो यूँ बात सुन शाह ख़ुशहाल हुआ,
जो पीला हुआ था सो फिर लाल हुआ।

जो तालिब के मनमेंच मतलूब[2] है,
बुरा होने की ठार उसे ख़ूब है।

कह्या शह "अतारद मेरे पास है
अताल उस के मिलने की मुँज आस है।"

हुआ शह सो धर पंत में अख़्तियार,
के बन्दे ते कोशिश ख़ुदा करनहार।

सो गुनवन्त चतारा[3] भोत धात धात,
कह्या शह कूँ समजा के भो धात धात।

के "चलने कूँ अब मुस्तैद मोप[4] कर,
शहंशाह कूँ बेग दे तूँ खबर,

जो संगात हर जिन्स का ले कुमाश[5]।
के आलम में ना होय यो बात फ़ाश[6],

अगर काम करता तो यूँ कर यो काम,
के दुश्मन को ना होय यो काम फ़ाम।

ले शह आज सौदागरी का लिबास,
के तेरे दंदी[7] आस ते होय निरास।

---

१ अच्छा २ इच्छित वस्तु ३ चतुर का बहुवचन ४ तैयारी कर ५ स्वभाव के प्रकार
६ गुप्त बात का प्रकट होना ७ शत्रु।

सो यो जायँ अब शह के जाने ना कोई,
हमें कौन हैं यो पछाने न कोई।

फिराकर अपस के सो इस भेंस कूँ,
यो सट देस चल जाय परदेस कूँ।

जो मँगता है शह यूँ के मक़सूद पायँ,
तो बाट अब हमीं सट को अड़बाट जायँ।

कैना था सो कह्या तुजे मैं बिचार,
अताल अहै शहंशह तेरा अख़्तियार।

अंगे बाईं[1] है होर पीछे कुआ,
अन्देशा नको कर हुआ सो हुआ।

दोनों मिल के यक दिल हो कर राजवट[2],
किए काम उधर जाने का आज घट।

अगर ना नचना नच है तो घूंघट है क्या,
निकल जायँ चल बेग याँ हट है क्या।

---

१ बड़ा कुआ २ राजनीति, राज-पथ।

इज़ाज़त ख़्वास्तन मुहम्मद कुली कुतुबशाह अज़ पिदर व मादर[1]

छुपा राज़ परगट हुआ शाह का,
के आशिक़ अहै शाह उस माह[2] था।

छुपी बात नई बूजता शह छुपाय,
के इश्क़ होर मस्ती छुपाया न जाय।

किया बात ज़ाहर वो उस बात में,
किता कोई रखे आग कूँ हात में।

जो यक घर मने ऊद[3] कूँ कोई जाय,
तो सौ घर लग उस ऊद का बास जाय।

के फूल केवड़े का जो बास है छिनाल,
न रख सकी हरगिज़ इसे कोई सम्भाल।

पिरत कूँ छुपाने कहीं ठार नईं,
पिरत बावली है छुपन हार नईं।

जदाँ ते जो पैदा हुआ है यो जग,
पिरत कोई छुपा नईं सक्या आज लग।

पड़ी खल्क़[4] मुख बात यो फाँक कर,
रख्या जाय असमान क्यों ढाँक कर।

जवाहर अजल[5] सीस भर सरनबिश्त[6],
जो जल गुज़रे जिस सिर ते हो सर गुज़िश्त।

मुहब्बत अवलीच तूँ कर नको,
करेगा तो रुसवाई[7] ते डर नको।

मुहब्बत किते है सो रुसवाई है,
यो रुसवाई आशिक़ कूँ हो आई है।

---

१ माता-पिता से मुहम्मद कुली कुतुबशाह की अनुमति माँगना। २ चाँद ३ एक सुगंधित पदार्थ, ऊदबत्ती ४ जनता ५ मौत ६ भाग्य का लिखा ७ बदनामी।

वहीं यार भाता अहै यार कूँ,
मश्क़्क़त सूँ ढोवे यार की भार कूँ।

मुहब्बत लग्या है जिसे पीव का,
नहीं कुच परवा उसे जीव का।

अवल जीव ते हात धोते अहैं,
पछे आशिक़ाँ आशिक़ होते अहैं।

सुहाती है रुसवाई यारी मने,
के आशिक़ कूँ इज़्ज़त है ख़ारी[1] मने।

यहाँ पादशाही ग़ुलामी अहै,
यो बदनामी नईं नेकनामी अहै।

मुहब्बत में होता जहाँ जग असीर[2],
बराबर है वाँ पादशा होर फ़क़ीर।

नदीम[3] अपने कूँ शह बुला भेज कर,
यो क़िस्सा कह्या इस कने सर बसर।

कह्या "मैं कह्या ज्यूँ तुजे त्योंच तूँ,
कह यो बात भो धात इस शाह सूँ।

रज़ामन्द भेज्या शह शहंशाह कन,
के जाता हूँ अब मैं बँगाले के धन।"

कह्या जब नदीम उस कूँ जा कर यो बात,
अन्देशा लग्या करने शह मुख दे हात।

कह्या "कोई कहो मेरे फ़रज़न्द कूँ,
के सुन कान धर बाप की पन्द कूँ।

तूँ सूर है नकों दूर हो असमान ते,
तूँ हीरा अहै ना बिछड़ खान ते।

---

१ बदनामी २ क़ैदी, शिकार ३ मुसाहब।

तूँ फूल होर है ठाँव तुज फूलबन,
तूँ सरो होर जागा है तेरा चमन।

तूँ शाही केरे बज़्म[1] का शमा है,
तूँ जम जीव तुज थे मेरा जमा है।

नको कर परेशाँ दिल जमा कूँ,
नको तूँ बुजा झमकती शमा कूँ।

जिसे यार कहते सो कईं यार नईं,
अगर है तो भी कोई वफ़ादार नईं।

वफ़ादार सो यार करतार है,
तूँ उस सात हो यार अगर यार है।

अपै उस सूँ होर वो अपस सूँ अछे,
तूँ वो ऐन[2] होर ऐन दो तूँ अछे।

निकल ऐसे कामाँ ते आना भला,
मुहब्बत ख़ुदा सूँ लगाना भला

तूँ जिस सात जीव लाने कूँ जायगा,
तुजे सट वो दुसर्या सूँ जीव लायगा।

के कामिल[3] मिसल कह गये यूँ अंगे,
मँगूँ दीद[4] मैं दीद सो धनक[5] कूँ मंगे।

न यारी के लायक़ हरेक यार है,
हज़ाराँ में यक कोइ वफ़ादार है।

हरेकस कूँ जीव यो के लाया न जाय,
ज़माना बुरा किस पत्याया न जाय।

के जिस कूँ पतिया कर तूँ जीव लायगा,
उसी ते तूँ आखिर दग़ा खायगा।

---

१ मजलिस २ आँख ३ अक़लमन्द ४ दीदार, आँखें ५ चमकना।

अपस घर में अछ् ना निकलना भला,
बुरा वक्त है देक चलना भला।

नहीं ख़ाब यो ख़्याल तूँ बेग सट,
नको कर तूँ इस काम के ताईं हट।

मेरा जीव होर दिल है तुज पर फ़िदा,
नको हो तूँ बुडप्पन[१] में मुंज ते जुदा।

नको न्हास[२] जा तूँ मेरे पास ते,
न कर मुंज निरास इस उमीद आस ते।

किया बाप शह तुज सूँ कह क्या बुरा,
के तूँ आज होता है उस ते जुदा।"

नदीम इस जिन्स की ख़बर ल्याय कर,
कह्या शह कूँ यो निच समझाय कर।

ख़बर इस ते इस धात जो शह पाय,
नदीम को झड़क सट के गुस्से में आय।

के "नेह का ख़बर नईं यो धरते अहैं,
झूठी बात चुप के च करते अहैं।

तूँ यारी हरेकस सूँ ना जोड़ियो,
तूँ दिल कूँ नको मोकला[३] छोड़ियो।

यो दिल नहीं बिला ग़ैब के कुच अहै,
दिवाना इश्क़ बाज़ होर हुच[४] अहै।

किए इश्क़ अवल ते यूँ इश्क़ बाज़,
के मन्धर[५] हक़ीक़त है सीड़ी मज़ाज़[६]।

सिड़ी उस उपर पाँव रख बाद अज़ाँ[७],
तूँ मन्धर में जा जीव मंगता जहाँ।

---

१ बुढ़ापे २ भाग ३ ख़ली, ढीला ४ बेकार ५ मन्दिर ६ साधन ७ के बाद।

के जिस यार कूँ यार सूँ ग़र्ज़ है,
यो दुःख सूसन[1] उस उपर फ़र्ज़ है।

जफ़ा नईं मुँज इश्क़ के बन्द ते,
नफ़ा नईं है कुच जग केरे पन्द[2] ते।

सुने नईं के मजनूँ दुखी तब सिया,
सो लैला की खातिर वो क्या क्या किया।

सुने नईं के फरहाद से यार ने,
दिया जीव शिरीं के कार[3] में।

मुहब्बत के मारग नहीं जानते,
झूटे चुप के की[4] मुँज कूँ रंजानते?

मुँजे उस चंचल धन के तईं जीवन देव,
जो होता सो मेरे उपर होन देव।

लग्या नईं है यो जीव उस घात सूँ,
जो टूटे यकायक किस बात सूँ।

खुदा आशिक़ाँ के लिख्या भाग में,
के जलना अहै इश्क़ की आग में।

मैं राज़ी हूँ अपने इसी भाग ते,
समद्दर[5] को नईं खौफ़ कुच आग ते।

मुँजे उस ते शादी अहै ग़म नहीं,
के दुख इश्क़ का सुक ते कुच काम नईं।

खुशी है वले इश्क़ का दर्द काँ,
जिसे दर्द यो है सो वो मर्द काँ।

यो ऐसा दरद नईं जो होवे हर किसे,
बड़े बख़्त उसके खुदा दे जिसे।

---

१ पाना, प्राप्त करना २ नसीहत ३ काम में ४ क्यों ५ सागर।

मना करनें पिरीत पड़्या जग गले,
जु कोइ समजे ना उस सते क्या चले ?

न कुच्च मुज कूँ हाजत[1] है पन्द सात यूँ,
समजने तो ना बोलते बात यूँ।

जो आशिक़ पिरत फन्द में बन्द है,
उसे दाग़ पर दाग़ यो पन्द है।

के आशिक़ सचा होर जाँ बाज हूँ,
पन्दाँ ते यो लोगाँ की मैं वाज़ हूँ।

यूँ अज़मा के देख्या हूँ मैं बार बार,
के आशिक़ कूँ नईं होती पन्द साज़गार।

रुबाई

मैं ना रह सकूँ उस शहर तलक जाये बिन,
चंचल सकी का चक[2] दरस पाये बिना।
इस जीव दिवाने कूँ क्यों होवे क़रार,
उस नार कूँ इस ठार ले कर आये बिन।"

रज़ा बाप जाने कूँ जो नईं दिया,
मना कर मना कर मना जो किया।

सो शह माँ के नज़दीक जा बैस[3] कर,
निपट अजिज़[4] सूँ पाँव पर सीस धर।

जिसे इश्क़ उछाले वो क्यों चुप रहे ?
सो उस मावली पास शह यूँ कहे।

"मुँजे सूल है उस धन के दीदार का,
मुँज सूल है उस छन्द भरी नार का।

---

१ आवश्यकता २ जरा सा ३ बैठ ४ आजिजी से।

मुँजे सूल है उस धन के दो नैन की,
मुँजे सूल है उसके मीठे बैन की।

मुँजे सूल है उस रंग भरे गाल का,
मुँजे सूल है उस मिश्क़[१] रंग बाल का।

पर-पर पड़े न बूजे, जिस पर पड़े सो बूजे,
क्या पर करूँ कहो हौं कूम्त्रर (?) मुँजे न सूजे।

के मैं शहर बंगाले कूँ जाऊँगा,
ख़ुदा ले ल्याये तो बेग फिर आऊँगा।"

जनी माँ अपन मिहर[२] सूँ आय कर,
कही शाह तूँ यूँ सवाँ[३] खाय कर।

सुनी न जो यो बात शह पीव ते,
डरी शाह के नाज़ नई जीव ते।

मबादा[४] अपस पर करे घात कुच,
के सुनता नहीं किस की यो बात कुच।

उसे इश्क़ उस नार का ज़ोर है,
दीवाना हुआ फ़िक्र उसे होर है।

जो माँ कीं भी नई बात शह टुक सुन्या,
हज़ारों नक़श नासिहाँ[५] पर चुन्या।

हुआ शह को मालूम ख़ूबी च अताल,
के शहज़ादे कूँ कोई न रखसी सम्भाल।

रुबाई गुफ्तन[६] इब्राहीम शाह

आशिक़ है जकोई पन्द उस मासी ना,
सिर है मलक[७] इस बाट में ते जासी ना।

---

१ सुगन्धित इत्र २ ममता से ३ सौगन्ध ४ सन्देह ५ नसीहत करनेवाले ६ कही हुई ७ फरिश्ता।

किया काम मना इश्क़ ते करते हैं उसे,
हरगिज़ किसी के कये मने वह आसी ना।

कहे शह कूँ तोशा देना बाट कूँ,
कहे जाता है शह इश्क़ के हाट कूँ।

किये दूर शह दिल में ते कोप सब,
लगे मुस्तइद[१] करने अब मोप सब।

सो दिलदार ग़मखार याराँ मिले,
शहंशाह के दोस्तदाराँ मिले।

जो तोशा पका कर दिये शह अपै,
चुरा खाने कूँ लोग उसे ली जपै[२]।

झुटाले सो तोशे कूँ चोर आय कर,
के उस ठार शह बेग फिर आय कर।

तमाशाँ के बन्द ले दिये बेशुमार,
हतियाँ की अम्बारियाँ[३] उपर का अम्बार[४]।

ग़ुलाम होर बाँद्याँ नदीम होर क़वाल,
दिये शह कूँ खिदमत के खातिर दुम्बाल।

गले शाहज़ादे कूँ शह लाये,
जकुच शाहज़ादा मंग्या सो दिये।

के फ़र्ज़न्द सफ़र करने जाता अहै,
खुदा जाने भी फिर को आता अहै।

खज़ीना[५] दिया शह कूँ शह शाद[६] कर,
सौ ऊँटाँ उपर शह चले लाद कर।

उठ्या नाद खाँतियाँ केरा सर बसर,
फ़रिश्ते जो थे सब उठे जाग कर।

---

१ तैयारी २ छिपे ३ हाथी पर बाँधे जानेवाली ज़ीन ४ भरना ५ खज़ाना ६ खुश कर।

रैन का सो तिसरा दूपारा अथा,
के निकल्या सुबह का सितारा अथा।

हशम[1] की सो चौंधेर ते फौजाँ उठियाँ,
दखन के सो दरया ते मौजाँ उठियाँ।

अलम यूँ दिसें शाह के साज़ सूँ,
के खूबाँ लिये दूर उचा नाज़ सूँ।

---

१ क़िला।

रुख़सत शुदन शहज़ादा[1]

खड़े साद शह देक महर[2] सते,
चल्या भार सब बाँद कर घर सते।

लगे करने मा-बाप शह कूँ दुआ,
"ख़ुदा देवे शह तुज तेरा मद्दुआ[3]।

पुनम चाँद ज्यूँ दोनो घटने लगे,
सितारे अँख्याँ में ते टुटने लगे।"

कहे शाह मा-बाप कूँ फिर यो बात,
के "मैं दिल के हात में न दिल मेरे हात।

निकलना किसे घर ते भाता अहै,
मुँजे दिल यो सितमी ले जाता अहै।

केता मैं रखूँ दिल कूँ रहता नहीं,
यो क्या भेद है कोइ कहता नहीं।

भौत मुज़ कूँ लगता अहै यो अजब,
के आदम पै ग़ालिब[4] है दिल क्या सबब।

मुँजे याँ रहना भोत मुश्किल अहै,
के इतना क्या सब सो यों दिल अहै।

हुआ राम[5] में दिल मेरा राम नईं,
यो दिल क्या करेगा मुँजे फ़ाम नईं।

किसे बल है जो हिर्स कूँ डाल कर,
रखे अपने इस दिल कूँ सम्भाल कर।

उसे आज सम्भाल रकसी न कोय,
जो सिर ज़ोर है लड़ने सकसी[6] न कोय।

---

१ शहजादे की बिदाई २ मुहब्बत ३ इच्छा पूर्ण हो ४ किसी को अधिकार में कर लेना
५ रम्य, खुशी ६ सकेगा।

शहाँ अजिज़ है दिल केरे ज़ोर ते,
तो क्या होयगा अब किसी होर ते।

पंखी होर परी होर देव होर जिन,
यो सब दिल की ख़िदमत करे रात दिन।"

सो मा-बाप कूँ शह दिलासा दे कर,
चल्या अपने माशूक़ के शहर उधर।

तो अँपडावने[१] आये मंज़िल तलग,
फिरे शह के मा-बाप पड़ शह के पग।

चले शाह मंज़िल कूँ यूँ दाट दाट[२],
के यक दीस में जाएँ महीने की बाट।

हरेक डग में शह धन कूँ जोता[३] अथा,
तिलें तिल पिरत ज्यास्त होता अथा।

मुहब्बत के कामाँ में सारा हो कर,
लग्या फिरने सहरा[४] में यारा हो कर।

अबीर[५] उस सुधन-पंथ का धूल था,
अनीदार[६] काँटा उसे फूल था।

जिसे इश्क़ की आग जाली अहै,
लहाफ़ उस गगन भुई न्हाली[७] अहै।

सट्या राहत अपना निपट दिया का,
के जूँ हक़ है त्यूँ पन्त चल्या नेह का।

---

१ पहुँचाने २ जल्दी ३ देखता ४ रेगिस्तान ५ गुलाल ६ नोकीला ७ बिछाने की चादर।
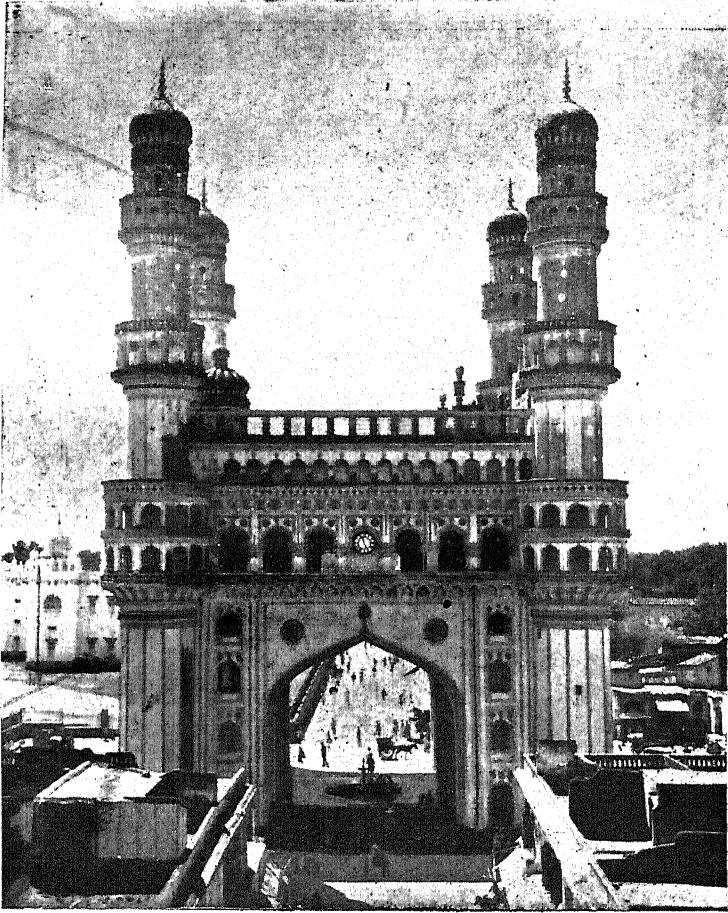
चारमीनार

मुहम्मद कुली कुतुबशाह

गज़ल गुफतन मुहम्मद कुली कुतुबशाह

मद इश्क़ में पिया सो चड्या है असर मुँजे,
सद-अक्ल-फ़हम छीन किया बेख़बर मुँजे।

धन मुख अगन में पड़ने समंदर हुआ हूँ आज,
तूती नहीं हूँ मैं के जो भावे शकर मुँजे।

फुसला के ख़ूबी सूँ च ले जाता बुलाय कर,
साँदे यो इश्क़ आज किधर का किधर मुँजे।

हातिफ़[1] ख़बर दे बेग अगर दोस्त है मेरा,
किस रात आ मिलेगी वह चंचल सुन्धर मुँजे।

बादल हो बाव नाद[2] फिरूँ दश्त मैं उताल,
न भावे संग चक[3] किसी का न घर मुँजे।

हातिफ़ मुजे ख़बर दे अगर दोस्त है मेरा,
किस रात आ मिलेगी वह चन्चल सुन्धर मुँजे।

अप भावता हुआ हूँ सभीं भावतियाँ कूँ छोड़,
धन भावते वो खींच ले अपने इधर मुँजे।

१ वह फरिश्ता जो गुप्त स्थान से आवाज देता है २ तरह ३ थोड़ा भी।

गुशतन[1] मुहम्मद कुली अजदाह

लगा आस उमीद सुभान सूँ,
जो शह बाट चलते अथे ध्यान सूँ।

यकाएक इस बाट में दूर ते,
नूरानी सुनैनाँ केरे नूर ते।

देखी गर्द अन्दकार है बे शुमार,
कहे यो अब हालाँ रहने का है ठार।

इसी सात शह दिल में कुच ल्याय कर,
सो नज़दीक इस फाड़ के आय कर।

कहे शह अतारद कूँ के "क्या है यो,
के अन्दकार दिसता है इस धात सो।"

अतारद दिया शह के तईं यूँ जवाब,
"के अहै शह जहाँगीर आली जनाब।

बुलन्द गड़ यो बी मिस्ल घन सार है,
देवाँ होर साँपाँ का यो ठार है।

बनी आदम इस ठार नईं ठारता,
पंखी पंक इस ठार नईं मारता।

अंबर ते बी ऊँचा है ऊँचाई में,
धरत ते बी चौड़ा है चौड़ाई में।

जो यक संग सटे इस फडे[2] पर ते कोय,
तो भुई होर अस्माँ मिल एक होय।

'बिकट फाड़' इस फाड़ का नाँव है,
यो असमान इस फाड़ का छाँव है।

---

१ मुठभेड़, सामना २ पहाड़।

के टुक फ़हम इस पर जो चड़ता अहै,
तो मान्दा हो इस ठार पड़ता अहै।

अन्देशा न चड़ लंग[1] हो पकड़े कमर,
नज़र ठेंस खा खा पड़े उस उपर।

न उस फाड़ पर संगरेज़े[2] अहें,
लूहवे[3] ख़ंजराँ होर नेजे अहें।

जो इस फाड़ पर जाने अछूता महाल,
तो तुकड़े हो पड़ता फ़लक ज्यूँ अभाल[4]।

जो हिलती नहीं है जमीं ठार ते,
सो इस फाड़ संगीन के भार ते।

जो शह देकते थे नयन लाय कर,
यकायक यक भेस सूँ आय कर।

बुलन्द एक बंडा पड़ा वाँ नज़र,
दो मशाल झमकते अथे उस उपर।

दो रंग थे उसे रंग सिया होर सफ़ेद,
कधीं होय परगट कधीं होय न पैद।

जो बंडा वो था सो यका एक वहाँ,
लग्या दिसने चिंग्याँ सूँ मिल कर धुवाँ।

कहे इस अतारद कूँ शाहेजहाँ,
"किने आग रोशन किया है यहाँ।"

जवाब उस दिया यूँ अतारद फिरा,
बड़ा एक रहता है याँ अजदहा।

बंडा नई यो उस अज़दहा का है तन
दो मशाल हैं उस अजदहा के नयन।

---

१ लंगड़ा २ साथी ३ तलवार ४ बादल।

के जबड़ा सो ज्यूँ ग़ार महकम अहै,
धुवाँ नईं यो उस साँप का दम अहै।

अथी आग शोले शफ़क़ ख़ुम[1] सते,
सो उस नाग के आतिशी दम सते।

निकलता है शोल्याँ सूँ दम नाग का,
के बादल बरसता है मेहूँ आग का।

चल ऐ शह फिरें अब हम इस घाट ते,
सलामत गया नईं कोई इस बाट ते।

जो दीखे नहीं बाट अंगे जाने कूँ,
लगे करने तदबीर फिर आने कूँ।

कहे शह के मरदाने मरदाँ कहीं,
अंगे का पछें पाँव रखते नहीं।

मर्द वो जो मरदाँ मने नाँव कर,
चले इश्क़ की बाट सर पाँव कर।

मुंजे काम नईं किस की तदबीर सूँ,
के राज़ी हूँ मैं उसकी तक़दीर सूँ।

तवक्कुल[2] ख़ुदा पर जो करता अहै,
वो हरगिज़ नहीं किसते डरता अहै।

मर्द नें पकड़ना बड़ा काम दस्त,
के लौटे तो भंडार मारे तो महस्त।

कही बात यो शह अतारद कने,
यकायक आ कर सो वैसे मने।

जो उट अजदहा शह के सन्मुक चल्या,
के महशर[3] के बारे ते डूँगर हिल्या।

१ बहुत २ विश्वास ३ प्रलय।

यता कुच दो धरता अथा नाग बल,
के असमान कूँ मारता फन उचल।

जो नज़दीक आया वो टुक डाट कर,
गए लोग संगात के न्हाट कर।

इल्ली वली थे मददगार वाँ,
ख़ुदा बिन न कोई शह कूँ था यार वाँ।

जो हमला कर आया वो शह के इधर,
खड़े रहे वहाँ शह फ़रंग[1] खींच कर।

सो शह हात का एक उसे घाव लग,
दो टुकड़े हुआ सीस ते पाँव लग।

जो जुलाब चक[2] वो सट्या कहर ते,
जमीं सब हरी हो रही ज़हर ते।

नज़र ज़हर ते इसकी ना होय क्यों,
के नहूँ शाह के ज़हर मुहरा हो ज्यों।

हर एक ज़हरमुहरा सो परचीत का,
के करता अहै काम अमरीत का।

फरंग लाल सब लहू में हुई सर बसर,
के बिजली पड़ी जा शफ़क़ के भितर।

कहे सब के रुस्तम है शह रास्त तूँ,
शुजाअत में इस ते बी है ज्यास्त तूँ।

मदद जम तुजे शाह यासीन है,
के तूँ एक लाखाँ पै संगीन है।

हशम सब पड्या पाँव इस बात कूँ,
लग्या गुड़ देने शाह के हात कूँ।

---

१ तलवार २ जरा सा।

हँसे शाह उस वक्त ख़ुशहाल हो,
चले लोग सब शह के दुंबाल हो।

नैन भिकारी दर्स कें और नित उठ माँगे भीक,
फुटो रे नैनन लहरीस (?) वा जिनों न लागे सीक।

जो यक ठार उतरे थे इस ठार ते,
पड्या शाह के दश्त[1] कूँ चारते।

सूरज ताब सब शाह सूँ जगमग्या,
सो यक पंजर सी कोट दिसने लगया।

के वो कोट शह देक हैराँ हुवे,
बुला कर अतारद कूँ नज़दीक कहे।

के "यो कोट दिसता सो किस का अहैं,
तुजे फ़ाम है कह तूँ जिसका अहै।"

कह्या शह कूँ राकस[2] है इस ठार पर,
नहीं वाँ कहीं आदमी का गुज़र।

ख़न्दक़ सात हैं सात समन्दर समाँ,
हरेक बुर्ज उसका है ज्यूँ आसमाँ।

कंगूरे बुलंन्द जो दिसे दीस कूँ,
कंगोई करते थे सूर के केस कूँ।

सौ नैन उसके दो चाह ग़द्दार हैं,
के सर तीन होर हात सौ चार हैं।

वो राकस बी ऐसा है काला बलाय,
जो शैतान देखे तो उस न्हास[3] जाय।

ख़न्दक़ बेबदल वो अजब ग़ार है,
के भुई के भुवन का मगर ठार है।

---

१ जंगल २ राक्षस ३ भाग।

वो राक़स के बालाँ है साँपाँ है यूँ,
चचुन्दे[1] पड़े अछते बेलाँ में ज्यूँ।

सुबह उठ निहारी करे नौ हती,
के मलऊन[2] है वो बड़ा निकबती[3]।

बुरा है वो दज्जाल ते सौ हिसे,
ख़ुदा मूँ न दिखलाय उसका किसे।

न कोई सकसी[4] उस सात दन्द सारने,
अजल[5] का नहीं काम उसे मारने।

मौत मुश्किल है सब से योच ठार,
के वो भर है चौंधेर को चार-चार।

नही बाट अंगे शाह जाने किधर,
सो हमना कूँ यो कोट उलगे बग़ैर।

अभूँ याँ ते फिर जायँ तो ख़ूब है,
के हैफ़ी[6] अंगे खायँ तो ख़ूब है।

के कोई देव सूँ दन्द बिसाया नहीं,
हतियाँ सूँ किने गाँडे[7] खाया नहीं।

न कोई सकसी अब इस सूँ दन्द सारने,
के उस कूँ अजल नई सकी मारने।

कहे शह डरालू अहै तूँ अजब,
डराता है इतन्याँ कूँ सो तूँ च सब।

तेरे डरने ते सब यो डरते अहैं,
फ़िक्र न्हासने[8] के यो करते अहैं।

संगाती के लोगाँ तेरी बात ते,
निकल जायँगे यकदिन हात ते।

---

१ एक सब्जी जो साँप के आकार की होती है २ शैतान ३ हिकमती ४ सकेगा ५ मृत्यु
६ अफसोस ७ गन्ना ८ भागने।

न डर कर किसी ते निडर होइना[1],
अगर डर अछे तो बी डर नईं करना।

जो लोगाँ कूँ तक़वा[2] होय इस बात ते,
जो ना जाएँ डर कर वह संगात ते।

बुड़ा है तूँ यो बात नईं तुज कूँ फ़ाम,
के मरदाँ की हिम्मत ते होता है काम।

ज़िरह हेच है तन शह बुलन्द भाग का,
के शोला लहवे में पड्या आग का।

मकर[3] है मकर देव काले मने,
के या बाग[4] बैठा है जाले मने।

दिसे शाह झगड़े के मैदान में,
के शरज़ा[5] खड़ा है बियाबान में।

अतारद सूँ बात कर शह जवाँ,
मंगा तीर तरकस तुरंग[6] होर कमाँ।

के क़ौसो क़ज़ह[7] फ़तह बख़्श है कमाँ,
शहाबाँ तीराँ होर तरकश आसमाँ।

सोनेज़ा है कह कश के खंजर हलाल,
सिपर हात मा दे अछे ज्यूँ अभाल।

सिले ख़ूब है जिस कूँ इस घात का,
उसे डर नहीं कुच किसी बात का।

पत्यारे के ले सात बारह नफ़र[8],
चले शाह इस पंजर सी कोट उधर।

ख़ुदा होर मुहम्मद अली का ले नाँव,
रखे कोट में शाह बेशक पाँव।

---

१ स्पर्द्धा करना २ भरोसा ३ ढोंग ४ शेर ५ शेर ६ घोड़ा ७ इन्द्र धनुष (?) ८ नौकर।

हुए जीव सूँ सब शह संगात अख़्तियार,
लगे फिरने इस कोट में ठार-ठार।

देखे एक वाँ आदमी ज़ाद था,
परेशान हैरान नाशाद था।

जो देख्या वो शह कूँ उठ्या आह मार,
कह्या की "तुमें आय हैं ऐसी ठार ?

ली एक बदबख़्त राकस है याँ,
पकड़ता है आदमी कूँ देकता जहाँ।

तुमें पादशह हैं भूटे याँ न आव,
के यो ठार कुछ ख़ूब नईं बेग जाव।

अगर शह सुनेगा तो मेरी यो बात,
ग़ुलाम हो के मैं आऊँगा तुझ संगात।

रख्या है यो राकस मुंजे बन्द कर,
नहीं जाने देता है यक तिल किधर।

यकेला हूँ मैं याँ किधर न्हाट जाँऊ,
के कई न्हाट ने नईं सपड़ती है ठाँऊ।

अगर तूँ न आता तो मुंज क्यूँ होता,
ख़ुदा जिस कूँ मँगता उसे यूँ होता।

मुंज इस वक्त तुज सा मिल्या शह गम्भीर,
के दरमाँदे कूँ है ख़ुदा दस्तगीर।"

कह्या शाह उस आदमींज़ाद कूँ,
फ़क़ीर होर मसकीन नाशाद कूँ।

"तूँ आया है काँ ते तेरा ठाँव क्या ?
के तूँ कोन है होर तेरा नाँवँ क्या ?"

कह्या शह कूँ वो भोत जारी सते,
अज़ीज़ होर मुहब्बत सूँ यारी सते।

"यकायक अँपड्या हूँ मैं तुज लगन,
कता हूँ मेरा हाल मैं शाह सुन।

हलब में जो शहशाह सरतान है,
जो परधान उसका असदख़ान है।

असदख़ान जो है शाहे सरतान का,
सो फ़रज़न्द हूँ मैं असदख़ान का।

न मुंज भान ना मुंज कूँ भाई अहै,
असदख़ान बाप होर यक माय अहै।

बन्दा मैं तेरा हूँ मुंजे तूँ पछान,
के है नाँव मेरा सो मरीख़ ख़ान।

अनन्द ऐश सुख घर में धरता अथा,
जुकुच जीव मँगता सो करता अथा।

यकायक यक रात मनहर सुन्धर,
दीवाना हुआ ख़ाब में देक कर।

सो परदेसी यक कोई मेरा यार था,
हर यक इल्म ते वो ख़बरदार था।

कहा ख़ाब में यो उसे खोल कर,
बशारत दिया उन मुंजे बोल कर।

सो ताबीर उसका उने यो कह्या,
के ज्यूँ मैं जो देख्या अथा त्यूँ कह्या।

के दो शाहज़ाद्याँ है बंगाले में,
सो उस्ताद है नाज़ होर चाले में।

यकन जुहरा है दूसरी मुशतरी,
यकस ते अहै ख़ूब यक सुन्दरी।

मुँजे जो भुलाई सो जुहरा अहै,
के इस नार कूँ हुस्न धर्या अहै।

भौत ज़ुहरा पर शाह मेरा जीव है,
वही जीव मेरा वही पीव है।

निपट जीव मंगता है उस पीव कूँ,
किता मैं रखूँ लालची जीव कूँ।

जुकोई बुलहवस[1] होर तमादार है,
जहाँ जायेगा वो वहाँ ख़ार है।

जिसे कुच तमा[2] नईं है वो ख़ार[3] नईं,
भला है वही जो तमादार नईं।

तमा ते जो हुरमत[4] कूँ नुक़सान है,
तमा भौत अदमीन कों ज़्याँ है।

वले जिन क़बाहत (?) कूँ ना फ़ाम है,
उसे ऐसी बाताँ सूँ क्या काम है?

मुंजे याद बिन उसके कुच काम नईं,
मुंजे यकतिल उस बिन आराम नईं।

लुटा जीव मेरा हैबत इस ठार का,
न अछता अगर याद उस नार का।

जो जिवता हूँ मैं देक दुख घात-घात,
के इश्क़ इस सकी का है आबेहयात।

जो शह मैं बंगाले कूँ आने किया,
मना कर मुंजे बाप बी पन्द दिया।

भोत घात समजा कह्या ख़ूब नईं,
इश्क़ बाज़ी करते नहीं यूँ कहीं।

जेता बाप कह-कह मुंजे सर धुन्या,
सो उस बाप की बात मैं नईं सुन्या।

---

१ लालची २ तृष्णा ३ दुःखी, अपमानित ४ प्रतिष्ठा।

चल्या वोंच बंगाले के शहर उधर,
सो मा-बाप की बात कूँ ठेल कर।

सो धन इश्क़ के मद सूँ माता अथा,
पकड़ बाट मैं अपनी जाता अथा।

यो राकस ने आ बन्द पकड़्या मुँजे,
कहीं जाने ना दे जकड़्या मुँजे।

संगाती जो लोगाँ अथे आस कर,
यकेला मुँजे सट के गए न्हास कर।

सो ऐसे ख़राबे में याँ आज कोई,
नहीं दूसरा भी ख़ुदा बाज कोई।

तूँ याँ क्या सबब शाह आया अहै,
तुजे कौन इस ठार ल्याया अहै।

यो राक़स के आने केरा वक्त है,
तूँ जाता नहीं जीव क्या सख़्त है।"

कहे शह के "ऐ गुनवन्त गुनसिंघार,
तूँ दिसता है मेरा भौत दोस्तदार।

तेरा होर मेरा सो यक हाल है,
दो मछलियाँ बिचार्यों कूँ यक जाल है।

के मैं खस्ता दिल होर तूँ दिल निगार,
हमें दोनों मिल अब अछें एक ठार।

हमें दोनो आशिक़ दरदमन्द है,
हमें दोनो यक फ़न्द में बन्द है।

हमें दोनो पंखी है यक बाग़ के,
हमें दोनों शोले हैं यक दाग़ के।

हमें दोनों यक बाट के चलनहार,
हमें दोनो यक खाट पर हैं सवार।

हमें लावबाली अहैं बावले,
हमें जान ख़्याली हैं अतावले।

हमें दोनों शौक़ी हैं यक शौक़ के,
हमें दोनों ज़ौक़ी हैं यक ज़ौक़ के।

हमें दोनों बदलाय हैं भेस कूँ,
हमें दोनों जाते हैं परदेस कूँ।

हमें दो परेशान यक जमा के,
हमें दो पतंगाँ है यक शमा के।

हरेक ठार दो में मुहब्बत अहै,
के आशिक़ कूँ आशिक़ की सुहबत अहै।

दुनिया में नहीं कोइ आशिक़ बग़ैर,
जो दुख कोइ किस का सुने कान धर।

के आशिक़ दुखी दुख भाता है उस,
दुखी है वो सच्च दुख सुहाता है उस।

दुखी कोई तो उस दौर में आज किस,
न कह दुख अपना दुखिया बाज किस।

दुखिया तेरे दुख का सँगाती अहै,
तेरे दुख की बात उस कूँ भाती अहै।

सुकिया[1] के कने जा के दुख बोले जो,
अपस पर हँसा लेने मँगता है वो।

जो ताक़त तुजे नईं है दुख सोसने[2],
तो टुक कह अपस जाय दुखिया कने।

दुखिया दुख ते ख़ुश होर सुखिया सुख सते,
नहीं सुक सूँ निसबत है कुछ दुख सते।

---

१ सुखी २ भोगने।

सुकिया किस के दुख कूँ अँपड़ता नहीं,
के सुखियाँ कूँ दुखियाँ सूँ पुरता नहीं।

पिरत जिस के मन मेंच बैसी अहै,
वो क्या जाने ख़ुश हाली कैसी अहै।

जो कोई शाद मानी सूँ सँपूर है,
सो उस ग़म की लज्जत ते वो दूर है।"

कहतीं हूँ दुख मेरा रो कर मेरी इनी सकियाँ कूँ,
बाताँ वकद[1] पलेटी[2] आ पोंच ते अँखियाँ कूँ।

इसी इश्क़ की बात कूँ धात धात,
जो करते अथे शाह उस के सँगात।

सो राकस देखे दूर ते आवता,
वोना साद[3] ज्यूँ राद[4] अरडावता[5]।

जो भोतीच अंगे धस कर आने लग्या,
शक्ल बदशक्ल कर डराने लग्या।

सो शह आयता[6] अलकुर्सी पड़ फूँक कर,
किये दूर उसे मूँ उपर थूँक कर।

तो राकस वो नज़दीक आ नईं सक्या,
रह्या दूर टुक हात ला नईं सक्या।

डरें नईं जो शह देव मग़रूर ते,
लग्या संग भिरकाने[7] वो दूर ते।

जो उट शह किया जीव अपना बड़ा,
कमाँ उतरी थी उसकूँ चीला[8] चड़ा।

कशिश कर जो शह तीर मारे सो वो,
पड़्या भुईं पै तल सीर उपर पाँव हो।

---

१ अवस्था २ बदली ३ शुभ ४ बिजली ५ तड़कती ६ कुरान की आयत ७ फेंकने ८ तीर।

उलट यूँ दिसे ज़ख्म खा सीर में,
के ज्यूँ अक्स अछै झाड़ का नीर में।

धुलारा उठ्या यूँ वहाँ सर बसर,
जमीं उड़ चली जानों असमान पर।

फ़रंग म्यान ते काढ़ी शह जान यूँ,
निकलता है कँचुली में ते साँप ज्यूँ।

किये चोट यूँ शाह नज़दीक आ,
के कोस बीस ऊपर पड़्या सीस जा।

अलामत क़यामत की पैदा हुई,
जमीं चूर आटा हो मैदा हुई।

उड़े संग यूँ उस धुलारे मने,
के पतराँ हो लगते थे बारे मने।

उड्या गर्द चौंधर किए शह जो जंग,
छुप्या बाग[1] परगट हुआ है भुवंग[2]।

लहवा लहूँ सूँ है लाल शह जान का,
के याहत में है शाख़ मरजान[3] का।

रगत[4] समद यूँ भर वहाँ रह गया,
के धरती डुबी होर अम्बर बह गया।

तबक़ ते शफ़क़ रंग रगत सूँ भरे,
नज़ीक है जो धरती अजल झल मरे।

तूँ शह अजब बल है तुज खरग कूँ,
के अदमुई किया मार कर मर्ग[5] कूँ।

अर्क़ सूँ ग़र्क़ कर सपट फ़र्श कूँ,
के भुईं हो लगी मौज़ जा अर्श कूँ।

---

१ बाघ २ सर्प ३ एक पेड़ ४ ख़ून ५ मौत।

जो आया मुसल्लम[1] दो दम दार कर,
फ़रिश्ते अर्श पर ते गए न्हाट[2] कर।

हयात आके दी शाह कूँ ख़ुश ख़बर,
लहू पी दन्दूआँ का अज़ल प्यास भर।

अतारद कुतब होर मरीख़ खाँ,
मिले आके तीनों यो नो खेज़ जाँ।

किये शह हलाक उस बद अफ़आल[3] कूँ,
के महदी सटे मार दज्जाल[4] कूँ।

अली दस्त थे शह कूँ हर ठार फ़तह,
के नुसरत रफ़ीक़ होर है यार फ़तह।

किये शुक्र तब शाह करतार का,
पकड़ निपट चले भई उसी नार का।

दो बाटाँ मिल्याँ बाट में एक ठार,
कहे शह अतारद कूँ वाँ टुक बिचार।

हमें याँ ते किस बाट जाना अताल,
के दिल शाद हो पायँ धन का विसाल।

कह्या यूँ बराबर दो बाटाँ अहैं,
हरयक बाट कूँ छार घाटाँ अहैं।

फिरनहार नई है क़दर होर क़ज़ा,
जिधर जायगा शह तूँ तेरा रज़ा।

इधर बी पर्यां होर उधर बी पर्यां,
के अछत्याँ अहैं याँ किधर बी पर्यां।

जंगल के जनावर ते पा ख़ुश शुगन,
अतारद सते बात इस धात सुन।

---

१ दृढ़ता से युक्त २ लांघ कर ३ दुराचारी ४ प्रलय से पूर्व आनेवाला प्राणी विशेष।

चल्या दिल में रख धन के मुख का सो ध्यान,
सीधे बाजू की बाट वो शह जवान।

रवाना हुआ वाँ ते शह बाँद सफ़[1]
के मरदाँ कूँ है फ़तह सीदी तरफ़।

दिस्या एक जागा फरह बख़्श वाँ,
पंखी करते थे चोंच सूँ नक्श वाँ।

के बहते थे वाँ कालवे[2] नीर के,
अथे झाड़ अनार होर अंजीर के।

के सबज़ा हर्या होर हवा तर अथा,
घड़ी भर वही शाह कूँ घर अथा।

शहंशाह अबी आके उतरे थे जाँ,
सो याकूत रेज्याँ[3] की बालू थी वाँ।

सो क़ता गुलिस्ताँ का वो न था,
चमन बहिश्त का भुई पर उतर्या अथा।

यता ख़ूब था वो हवादार ठार,
के जन्नत लेवे वाँ ते रौनक़ उधार।

यकायक दिस्या एक नज़दीक बाग़,
हुआ उसकी बासाँ ते तर सब दिमाग़।

के पाताँ के परदूयाँ कूँ सब फाड़ कर,
फुलाँ झांकते थे सराँ काड़ कर।

दो बाजू दो धर झाड़ दूर मत हो,
पवन• मद सूँ डुलते थे सब मस्त हो।

सरोदाँ[4] सो मुर्गां के नाले थे वाँ।
सुरय्याँ कल्याँ फूल प्याले थे वाँ,

---

१ क़तार २ नाले ३ कण ४ गायन।

सुरंग साँवले ख़ूब बाताँ भरे,
नदीम हो के बुलबुल जो चाले करे।

सो ताऊस पंखी तूती कब्क[1] हंस,
पकड़ पेट लुड़ने लगे हंस हंस।

वो सब ख़ुश हो बुलबुल के चाल्याँ उपर,
उछलते अथे मस्त हो डाल्याँ उपर।

रहे बीच चमन फूल अहमरी[2],
के हँसती है ख़ुशहाल हो धरतरी।

भँवर झुण्ड हो बन में घुमते अथे,
सो फूलाँ करे मुख चुमते अथे।

चमन तर न शबनम के है आब सूँ,
के मूँ धाये है फूल गुल्लाब सूँ।

बर्ग[3] बार आए हैं इस धात सब,
के छुप गए फुलाँ के तलें पात सब।

यकस ते चमन एक मक़बूल हैं,
के भँवरे, पतंग होर दीवे फूल हैं।

सो शह आने की यो ख़बर सून कर,
बन्दयाँ सुर्ख़-काल चूँडियाँ चून कर।

निकट साज़ कर मोर सब आए हैं,
सिराँ पर जड़त के तुर्रे लाए हैं।

चमन की चंगेर्यां में भर फूल अपार,
लग्या ल्याने शह ताईं माली बहार।

यता पीक[4] हवा था वहाँ किश्त[5] कूँ,
के रश्क आए इस बाग़ का बहिशत कूँ।

---

१ एक पक्षी २ लाल ३ पत्ता ४ उपज ५ खेती।

खिज़ाँ कूँ न था आने इस ठार-ठार,
भार होर भीतर अथा सब बहार।

कहे शह अतारद कूँ "यो क्या अहै,
अजब ठार होर रकश तमाशा अहै।"

अतारद कह्या "शह पर्यां है यहाँ,
पर्यां कम नहीं कुच भर्यां है यहाँ।

बड़ी यक परी याँ है महताब नाँवँ,
करे है वो इस बाग़ में आज ठाँवँ।

यो पंख्याँ जो दिसते सो पंख्याँ नहीं,
पर्यां इस परी कियाँ हैं शह यो सभीं"।

कहे शह के "खुश ठार पर आये हैं,
तमाशा अजब देखने पाए हैं।"

सुलखन परी नाँवँ जो दास थी,
सितारा हो महताब के पास थी।

हरेक बात में उस सूँ महरम[1] अछे,
सो जम जीव ज्यूँ धन वो हमदम अछे।

अथा अन्त महताब का फ़ाँम उसे,
के फ़रमाये महताब हरेक काम उसे।

अज (?) बियाँ सकियाँ सब बड़ी वोच थीं,
सो उस धन के घर की बड़ी वोच थी।

जकुच बात बोले यो महताब सात,
सो सुनती थी महताब सब उस की बात।

मुहब्बत सूँ दोनों मने यूँ अथा,
के बाँदी बीबी का फ़र्क़ कुच न था।

---

१ जानकार।

लगे अब खुदी इश्क़ तो हर कहीं,
दिवाना अहै ज़ात धुंडता नहीं।

न मसजिद न बुतख़ाने का फ़ाम है,
के परवाने कूँ शमा सूँ काम है।

न बूजे भली और बुरी ठार कूँ,
शमा हुई तो बस उस जलनहार कूँ।

अहै जीव पर जीय जाँ यार होय,
पतंग जल मरे शमा जिस ठार होय।

इसे चाशनी नेह की अँपड़ी अहै,
लज़्ज़त ख़ूब जलने की सँपड़ी अहै।

मुहब्बत में सब कोई सारा नहीं,
यो काम अक्ल में आन हारा नहीं।

शहंशाह ग़ाज़ी कूँ देखी वो ज्यूँ,
कही जा के महताब के पास यूँ।

"सो यक आदमीज़ाद आया है याँ,
सो ले लोग संगात ल्याया है याँ।

सिफ़त उसकी तुज पास केता करूँ,
न सरसे सिफ़त उसकी जेता करूँ।

अवल ते तेरे कान भरती हूँ मैं,
के मतवाली होयगी के डरती हूँ मैं।

के मैं देक कर ताब ल्या नई सकी,
यो बात अपने दिल में छुपा नई सकी।

जो टुक देकती ज्यास्त दीदार में,
न आ सकती फिर वाँ ते इस ठार में।"

सटा ल्या वहाँ शौक़ महताब कूँ,
किया आतिश इस धात अपस आब कूँ।

कही "चल वो शह काँ है दिखला मुँजे,
के अव्वल ते मालूम यू था मुँजे।"

जो संगात महताब कूँ ल्याय वो,
सुलक्खन सकी शह कूँ दिखलाय वो।

सो महताब देख शह कूँ बेताब हुई,
मुहब्बत सूँ गुल ज्यूँ वो गुल्लाब हुई।

पड़ी मस्त हो यूँ वो पग डग मने,
के उठने की ताक़त न थी उस मने।

लगा जीव वो नार उस लाल सूँ,
वहाँ ते उठी बारे हर हाल सूँ।

कही यो "फ़रिश्ता अहै या बशर,
यकायक इसे याँ हुआ क्यूँ गुज़र।

के इस बाट कूँ आदम आता नहीं,
जो आता सो भी फीर जाता नहीं।

खुदाया सलामत रख इस शाह कूँ,
पर्यां ते अमानत रख इस शाह कूँ।

कही शह अजब खूब महबूब है,
अछै दिल जो मुँज पर तो क्या खूब है।"

अन्देशा भी दिल में उने यूँ करी,
के "यो आदमी होर मैं हूँ परी।

दिवानी हो बाताँ करूँ सुध खोय,
परी होय आदम सूँ क्यों जोड़ होय?

रुबाई

को शाह यो इस बाग़ मने आवेगा,
को शाह मुँजे नेह सूँ गले लावेगा।

को शाह हमें मिल के यहाँ बैठेंगे,
को शाह सूँ मिल जीव ख़ुशी पावेगा।"

सुलक्खन सखी नाज़ परवरद कूँ,
लताफ़त केरे बाग़ के दर्द कूँ।

कही पाँवँ पर हात रख महताब,
के "शह कूँ बुला ल्या तूँ जा अब शिताब[1]।

तुहीं पे दोस्त मुँज होर तुहीं यार है,
तेरा मुँज उपर ली[2] यूँ उपकार है।

के शह ऐसे कूँ मुँज कूँ दिखलाय तूँ,
नहीं आती थी मैं सितम ल्याय तूँ।

मेरा पाँवँ पड़ना तूँ कह होर सलाम,
यो शह काँ ते आया खबर ले तमाम।

के सकती नहीं मैं वहाँ लग अँपड़,
बदल मेरे तूँ शाह के पाँवँ पड़।

छुपाई हूँ मैं इस सबब आप कूँ,
मबादा[3] खबर कोई करे बाप कूँ।

तूँ बेग अब रिझा कर मीठी बात सूँ,
बुला ल्या यहाँ लग हरेक धात सूँ।"

सुलक्खन सकी बात इस धात सुन,
उछलती ख़ुश्याँ सूँ चली शाह कन।

उसे देक कर शाह हैराँ रहे,
मगर हूर है यो परी नई कहे।

सो नज़दीक बिसला उसे प्यार सूँ,
लगे बात शाह करने उस नार सूँ।

---

१ जल्दी २ बहुत ३ कहीं ऐसा न हो।

"तेरा क्यों सकी याँ लग आना हुआ,
तुजे देक कर मैं दिवाना हुआ।"

वो अपरूप दिलदार हूरी ख़िताब,
अदब सूँ दयी शाह कूँ यूँ जवाब।

के "तुज ताँई ऐ शाह मैं आइ हूँ,
ख़बर एक महताब की ल्याइ हूँ।"

सुलक्खन जो आती थी भौ साज़ सूँ,
सो ग़मज़े व छन्द बन्द होर नाज़ सूँ।

कही "किस शहर ते तूँ आया है शह,
भई किस शहर कूँ जाने मंगता सो कह।

मुबारक तेरा शह यो आना अछो,
बन्दा हो तेरे घर ज़माना अछो।"

जो महताब कइ थी सो कइ शाह कूँ,
सो कुछ दिलते बी जोड़ कइ शाह कूँ।

"बुलाती है वो नार ऐ शह तुजे,
इसी काम कूँ भेजी है याँ मुंजे।"

कही "ऐ सुघड़ शह तूँ अब बेग चल,
मुअत्तल[1] वहाँ काम सब तुज बदल।

तूँ बेगानगी यूँ नको देख शह,
करम कर वहाँ लग सो आ बेग शह।

के सकता है शह आ तूँ क्या डर अहै ?
हमारा वो नईं घर तेरा घर अहै।

१ रोक देनेवाला।

रुबाई

"इस बाग़ मने आज जो आई है परी,
यक दिल सते जीव तुज सूँ लगाई है परी।

भौ धात इस सात मजलिस कूँ सिंगार,
ऐ शाह तुजे बेग बुलाई है परी।"

अतारद कूँ कये "क्या है तदबीर अब,
के है काम याँ का तुजे फ़ाम सब।"

कह्या "शाह यो तो अजब ठार है,
वले आज जाना सो नाचार है।

परी हो के मँगती है हमना कूँ यूँ,
तो वाँ लग हमीं शाह ना जाय क्यूँ।

चल ऐ शाह, देखें जा के इस नार कूँ,
नको खींच तूटे तलक तार कूँ।

ज़रूरत है रहना उस के फ़रमान में,
हमारा है कौन इस बयाबान में।

यहाँ आज लग कोइ आया नहीं,
किने दिल किसी का पत्याया नहीं।

पत्थर तल जो हात आए ऊकल[1] सते,
तो वाँ ते उसे काड़ना कल[2] सते।

हमें आदमी होर परी वो है रास्त,
परी ते मुरव्वत है आदमी में ज्यास्त।

बुलाती वो इस चाव सूँ पुरदुंबाल,
तो वा जब है हमना कूँ जाना अताल।"

---

१ ऊखल २ बुद्धि।

किये जीव खुश होर हुए एक दिल,
चले उस सुलक्खन सकी सात मिल ।

अथी दूर ते देक शह कूँ सुधन,
परी हूरते खूब चन्दर बदन ।

पराँ का पर्यां छाँवँ छायाँ अथ्याँ,
लटाँ सब बिखर मुख पर आया अथ्याँ ।

अछैं नैन इस केस काले मने,
के मछल्याँ दो सँपड़्याँ हैं जाले मने ।

उछल्याँ हैं बिजल्याँ अभालाँ तलें,
के नैनाँ झमकते हैं बालाँ तलें ।

दिसे लालक उस नैन बिच यों सँवर,
के सुर्खी सटी की सफेद आब पर ।

सटे लाल डोर्यां सूँ पुतली कजल,
के मिरीख[1] के घर में आया जुहल[2] ।

सो धन के तन ऊपर दिसे यूँ गुहर[3],
के बैठे हैं चुगने मगर सरू[4] पर ।

अंगे होके आ पाँवँ पर अचपली,
सो मह बाग़ में शह कूँ लेकर चली ।

शहंशह कूँ धन बाँद गुलहार कर,
ले कर गई अपस पहाड़ पर प्यार कर ।

पवन ऐश ते फूल ज्यूँ खेल कर,
पलंग पर बैठे दोनों मेल कर ।

दो फूल थे उनो होर चमन था पलंग,
के रहता है दायम चमन फूल संग ।

---

१ एक नक्षत्र २ एक नक्षत्र ३ मोती ४ सरोवर ।

पलंग शाह के तईं जो वाँ ल्याए थे,
सूरज चाँद जैसे उसे पाए थे।

सो उस सात मिल यूँ वो शह जान थे,
कें बिलक़ैस सूँ ज्यूँ सुलेमान थे।

सकी शाह सूँ एक हो यूँ अछे,
के मिठाई सूँ मिल शकर ज्यूँ अछे।

परी तो फिराई थी मिलने कूँ ख्याल,
वले शह रखे वाँ अपस कूँ सँभाल।

लग्या जीव यक ठार जिस ज़ोर सूँ,
इसे कुछ ग़रज़ नईं है भइ होर सूँ।

मुहब्बत कहीं यूँ हुई नईं अहै,
मुहब्बत है जाँ वाँ दुई नईं अहै।

दिसे यूँ तिल इस मुख मैदान में,
के हब्शी बचे है गुलिस्तान में।

जो करती अथी बात धन राज सूँ,
सो झड़ते थे बुन्द खूये[1] के लाज सूँ।

के नार्यों में वो नार सरताज है,
के जिस में शरम होर कुच लाज है।

शरम होर लाज होय जिस नार कूँ,
भुला लेवे यक तिल में संसार कूँ।

जो महबूब अछे खूब खुश साज़ का,
शरम उस कूँ सिंगार होय नाज़ का।

शरम सूँ अछे नार तो दिल भुलाय,
शरम नईं सो वो नार क्या काम आय।

---

१ वीरता।

मेरी बात सुन पन्द यो रास्त हैं,
भले कूँ शरम जीव ते ज्यास्त है।

भला हाँ नईं पार ता भरम कूँ,
भला जीव देता अहे शरम कूँ।

जो मोमिन मुसलमान दिल नर्म है,
निशाँ उसके ईमान का शर्म है।

जो पैले हरेक ठार छब है उसे,
शरम लाज होर नाज़ सब है उसे।

सुधन मुख दिसे शर्म के आब में,
सटे हैं मगर फूल गुल्लाब में।

लटाँ आरह्याँ यूँ सुधन गाल पर,
के सुंबल कीं ज्यूं छाँवँ गुल्लाल पर।

शफ़क़ रंग किसवत सों उस मह कूँ था,
बड़ा खत उसे देखना शह कूँ था।

सूरज जाके भाना लिया खाब का,
के दिन ताब देता है महताब का।

अदब सूँ सकी बैट[1] कर शह कने,
सो बाताँ लगी बाट कियाँ पूछने।

कहे बात यक एक शह उसके पास,
परी होर शह थे मगर एक रास।

मुहब्बत लगी दोनों में आय कर,
रहे दोनो यक ठार जीव लाय कर।

परी माहताब होर कुतुबशह सुजान,
अपस में अपी कह लिए भाई भान[2]।

---

१ बैठ २ बहन।

यो काँ का सगा होर वो काँ की सगी,
किधर ते किधर दोस्ती आ लगी।

वो शह सात होर शाह इस सात यार,
मिले आग-पानी दोनों एक़ ठार।

ख़बर जो सुनी शाह ते इस देव की,
सो सेवक़ हो धन शाह का सेवकी।

करी शुक्र वो काम यो हुए का,
कही डर अथा मुँज बी उस मुए का।

न थी नींद शह रात कूँ धाक ते,
छुटी आज इस भिष्ट नापाक ते।

मुआ गावदी[1] कुच नहीं जानता,
पर्या कूँ बी आ आ के रंजानता[2]।

अजब बद असल शक्ल धरता अथा,
पर्यां का दिल इस देख डरता अथा।

चल्या नई कुच उस देव अवधूत सूँ,
केता कर लड़े गिद्याँ पर्यां भूत सूँ।

पर्यां नाज़ुक होर देव वो सख़्त था,
पर्यां नेक बख़्ताँ[3] वो बदबख़्त था।

तूँ जम जीव होर कर तूँ जम राज शह,
तूँ जीवदान हमना दिया आज शह।

तिर कमान शह तूँ मोत है दिलेर,
के तुज हात तल देव होते हैं ज़ेर।

तूँ शह होएगा माही[4] व माह[5] का,
के यो फ़तह पैला है तुज शाह का।

---

१ गँवार २ रंजीदा करता ३ भाग्यवान ४ मछली ५ चाँद अर्थात् जल और आकाश का।

सदा जीव होर दिल तेरा शाद अछो,
पर्यां की यो यक बात तुज याद अछो।

शर्त कर उने हात दी हात में,
के शक नईं है मैं कइ सो उस बात में।

शहंशाह उस वक्त बख़्शीश में आ,
परी कूँ दिए कोट उस देव का।

हुआ देव जीव दे वहाँ ते जुदा,
के ज़ालिम ते राज़ी नहीं है ख़ुदा।

परी दन्दी के बन्द ते आज़ाद हो,
दुआ कइ शहंशाह कूँ शाद हो।

कही उस सुलक्खन कूँ धन महताब,
सुराही पियाला ले कर आशिताब।

के माँदे हो शह बाट ते आये हैं,
सो थण्ड धूप होर बाव ली खाये हैं।

जिसे इश्क़ का ज़ोर अछे सर बसर,
उसे थण्ड होर धूप बारा[1] किधर।

सुराही होर प्याला ले कर नार वो,
पिलाने लगी शह कूँ उस ठार वो।

प्याला नवाँ आप भाते पिए,
ज़रुरत कूँ शह इन मनाते पिए।

यता शाह दिल धन पै धरते अथे,
के हर प्याले कूँ याद करते अथे।

के सद[2] हैफ़[3] जो पीव उस ठार नईं,
सो इस ठार वो जीव का यार नईं।

---

१ हवा २ सौ ३ दुःख।

अजब कुच फ़रह[1] बख़्श यो कैफ़ है,
वले यार वो नइ सों सद हैफ़ है।

सो धन हटते प्याला जो शह लेते थे,
सो कुच पी न पी वोंच सट देते थे।

के माशूक़ जाँ नईं वहाँ भाये क्यों,
प्याला पिया[2] बिन पिया[3] जाये क्यों।

प्याला पिने कूँ मज़ा वाँ अहै,
के माशूक़ मन भावता जाँ अहै।

जहाँ जीव का पीव भाता अहै,
जुकुच वाँ किए सो ख़ुश आता अहै।

अजब उसकी मजलिस में कुच भेद था,
जुकुच जिस कूँ होना सो मुस्तैद था।

अथ्या सब वले वाँ न थी नार वो,
के ख़ुश दिल करे शह कूँ इस ठार वो।

अथ्या सरते गुल[4] बज़्म[5] में नोश का,
हुआ मस्त अक्ल सुद उड्या होश का।

फुलाँ बाग़ में हँसते थे शौक़ सूँ,
जनावर चुरग़ते[6] थे सब ज़ौक़ सूँ।

डब्याँ फूल रंग-रंग दुकानाँ चमन,
के ख़ुशबूदी फ़रोशी अपै वाँ पवन।

जो शह याद करते थे धन गाल कूँ,
तो गड़ देते थे जाके गुल्लाल कूँ।

सो नरगिस कूँ शह देक शहमात थे,
के नयन इस सरो क़द के इस घात थे।

---

१ शुभ दायक २ प्रिय ३ पीना ४ फूल ५ सभा ६ बोलते।

जो शह कूँ जोबन याद आते अथे,
तो नार निज पर हात पाते अथे।

सो धन क़द कूँ शह ख़्याल में ल्याय कर,
गले लगते थे सरो कूँ जाय कर।

गुमाते थे शह यूँ वक़्त बन मने,
सुधन का पिरत रक अपस मन मने।

रुबाई

ख़ुशहाल हो जीव आज ख़ुशी पाता नहीं,
पीता हूँ शराब होर असर आता नहीं।

काँट्या के ज़रब दिसते अहैं फूल सब,
तुज बाज सकी बाग़ मुंजे भाता नहीं।

अतारद कह्या "शह तूँ जीव जम,
सदा शाद अच तूँ के नईं तुज ग़म।

तूँ दो जाम पी जग में ज्यूँ जम हुआ,
ख़ुशी ज्यास्त ग़म था सो सब कम हुआ।

मेरी बात सुन ऐ चंचल कुतुब शह !
मुँजे दे रज़ा होर तूँ याँ च रह।

के मैं जा के वाँ काम कर आऊँगा,
सो तुज ताँईं उस नार कूँ ल्याऊँगा।"

कह्या शह के "मुंज कूँ बी ले सात चल,
मुँजे याँ तलक के तूँ ल्याया अवल।"

अतारद कह्या "शह उतावल न कर,
तूँ आक़िल अहै अप से बावल न कर।

न वाँ जाके रहने कूँ कई ठार है,
न वाँ आशना कोइ ना यार है।

तुजे क्यों ले कर जाऊँ वाँ मैं संगात,
के दूर होर दराज़ है अजूँ शह यो बात।

तूँ आशिक़ अहै होर तुजे फ़ाम नईं,
तुजे ऐसे कामाँ सूँ कुच्छ काम नईं।

सितम छोड़ दे कर आनन्द होर सुख,
झूटे क्या सबब देखता दर्द दुख।

ग़ज़ब में नको आ तूँ मुख मोड़ कर,
के दुख नईं मँग्या कोई सुख छोड़ कर।

तूँ नईं बात सुनता कहूँ मैं किसे,
ख़ुशी देती ज़हमत किए सो उसे।

तुजे ख़ूब है शह रहने कूँ यो ठार,
के वो शह परी हुई है तुज सेती यार।

बँगाला नगर याँ ते नज़दीक है,
नको कर तूँ ऐ शाह अब झंझ है।

अन्देश्या अन्देश होर टुक फ़ाम देक,
के क्या काम करता हूँ तूँ काम देक।"

अतारद की सुन बात शह चुप रह्या,
केतक वक्त कूँ फिर उसे यूँ कह्या।

"नपैं जीव जानी मेरा जाँ अहै,
जो आशिक़ हुआ उस कूँ सुख काँ अहै।

तूँ सुख जानता यो मुँजे दुख अहै,
मेरा दुख सो तेरे अँगे सुख अहै।

लगी आग जग कूँ यो गुलज़ार नईं,
बहिश्त दोज़ख़ है वाँ अगर यार नईं।

येता मैं जो सोस्या सो उस धन बदल,
न उस शह परी तईं न उस धन बदल।

तूँ दाना कूँ जान्या है नादान कर,
के अनजान हो बोलता जान कर।

परी यो परी ते वो नारी भली,
इस आसूदगी ते वो खारी भली।

मेरा हाल जो है सो कहता हूँ मैं,
तूँ इतना कता[1] है तो रहता हूँ मैं।

भिकारी दरस का हूँ कई भीक नईं,
के आशिक़ हूँ उस ते मुंजे देक नईं।

रज़ा मैं दिया हूँ तुजे, जा अताल,
वले बाट में तूँ अपस कूँ सँभाल।"

कह्या शह "खुदा है सँभालन हार,
भले होर बुरे ते सो हरेक ठार।

जो साहब बोसूँ राज़ी हो यक दिल अछे,
उस आसान होवे जो मुश्किल अछे।

वक्त के बुज़ुर्गों दिए है यो सीक,
के सौ देस जोरे है परदेस नीक।

मुंजे फ़ाम कर शाह तूँ फ़ाम सूँ,
के बन्दया हूँ सर में तेरे काम सूँ।

पिरत पंत ली[2] कुच करेगा यहाँ,
सहूँगा जो मुँज पर पड़ेगा यहाँ।"

शहंशह की तौफ़ीक़ उस सात कर,
जुकुच दिल में थी बात वो बात कर।

रख्या शाह के पाँव पर सर उने,
सरापा पतंग हो के फिर-फिर उने।

---

१ कहता २ बहुत।

मोत नेह सूँ शह उस गले लाये,
जुकुच मुस्तैदी मँग्या सो दिये।

मुहब्बत सब्र मंगता है जो तूँ रोता वला[1] होयगा,
अरे ऐ दिल समझ यक तिल केता तूँ बावला होयगा।

रुबाई

मैं आज बंगाले की तरफ़ जाता हूँ,
मक़सूद जो है दिल में सो सब पाता हूँ।

या धन के कन उस शह कूँ बुला भेजूँगा,
या शह के कन उस धन कूँ ले कर आता हूँ।

---

१ अच्छा फल लायेगा।

रफ्त अतारद सएँ बंगाला[1]

रज़ा ले अतारद रवाना हुआ,
बंगाले में वेगी च जाना हुआ।

सो वो देस साकिन[2] हो वाँ ठैर कर,
तमाशा देख्या शहर का फीर कर।

घरे घर अनन्द सुक्ख[3] संपूर था,
ख़ल्क़[4] शाद सब मुल्क मामूर[5] था।

दिस्या महल ऊँचा सो इस धात वाँ,
अँपड़ता न था अर्श[6] का हात वाँ।

सो वो महल था उस सुघड़ नार का,
तमाशा दिसे वाँ ते संसार का।

चतर गुन भरा वो अतारद चंचल,
रह्या मुशतरी शाह के महल तल।

दुकाँ माण्ड्या[7] वहाँ भोत साज़ सूँ,
लग्या करने तसवीर भो नाज़ सूँ।

चितारे[8] वहाँ के ख़बर पाय कर,
हुए उस के शागिर्द सब आय कर।

दिखाने लग्या सूरताँ धात धात,
जुड़ी उस अतारद के चौंफेर[9] जमात।

उड़ी यो ख़बर शहर में फूट कर,
तमाशे कूँ जरा सब पड़्या टूट कर।

सो उस दीस मुशतरी शाह नार,
लगी फिरने आ महल में ठार ठार।

---

१ अतारद का बंगाल की ओर प्रस्थान २ निवास ३ सुख ४ जनता ५ अपने काम में नियुक्त ६ आकाश ७ बाजार ८ चित्रकार ९ चारों तरफ।

जो धन पाक दामन वो बे ऐब थी,
यकायक सो उस वक्त पर ग़ैब थी।

दो खिड़क्याँ खुल्याँ बाव[1] ते फाँक[2] कर,
छज्जे पर ते देखीं सो वो झांक कर।

"चितरा" कही "काँ ते आया अहै,
उसे कौन इस ठार लाया अहै।"

महरवान वाँ नज़दीक जो दाय थी,
खबर उस अतारद की वो पाई थी।

कही वो के "ऐ मुश्तरी शह सुभान,
गुलाब हो अछो तुज्ज घर आसमान।

दक्खन ते यो आया है इस ठार पर,
उमीद्वार हो कर तेरे प्यार पर।

जुकोई पादशाहाँ के नज़दीक है,
भला है जो हर एक खूबी कहे।

जुकोई जो असील होर ज़ाती अहै,
बुराई नहीं उस ते आती अहै।

बड़ा यो हुरनरमन्द वाँ का अहै,
खबर ली है मैं यो जहाँ का अहै।"

कही मुश्तरीशाह उस दाय कूँ,
महरवान अपनी सगी माई कूँ।

"मगर आशनाई तू धरती अहै,
के इत्ती सिफ़त[3] उसकी करती अहै।"

जवाब उस सकी कूँ सो यू दाय दी,
"तूँ यूँ बोलती है मुँजे चुपके की।

---

१ हवा २ झोंके से ३ प्रशंसा।

न उस सात धरती हूँ कुच गर्ज़ मैं,
जो उसका करूँ तुझ कने अर्ज़ मैं।

सुनी चार लोगाँ ते जूँ बात मैं,
कती हूँ तेरे पास उस धात मैं।

चितारे जो हैं इस बंगाले मने,
सो वो शाद[1] हो सब रहे उस कने।

पत्यारा[2] जो तेरा नहीं मुज उपर,
तूँ आदमी कों वाँ भेज होर ले खबर।

तूँ मेरे अंगे की नहनी हो के यूँ,
झुटाती मेरी बात लोगाँ में यूँ।

तुजे झूट होर सच्च बराबर है सब,
न तुज में मुलाजा न तुज में अदब।

असील है तूँ यक बाप यक माय की,
नको तोड़ तूँ यूँ अदब दाय की।

यो बाताँ तुजे कौन सिखलाए हैं,
वो क़िस्सा जो मरके कूँ दाँत आए[3] हैं।"

कही "दाय मैं तुज सूँ हंसती अथी,
तूँ नई जानती की खबर तुज न थी।

तेरी बाता ना सुन सुनूँ किस की बात,
अरी दाय मैं नई हूँ ऐसी कुजात।

गुनह गर अछेगा तो मुज बख़्श तूँ,
न कर• चुन[4] झुटी यों मेरे, नख़्श[5] तूँ।

के दाई सो ज्यूँ माय कों ठार है,
तुजे कुच कना बहुत बजकार[6] है।

---

१ प्रसन्न २ विश्वास ३ मुहावरा है—अनहोनी बात होना ४ गिन ५ क्षमा करना
६ धृष्टता।

लतीफ़ा जो करना तो इस बन्द सूँ,
के ज्यूँ बन में रावन अछै छन्द सूँ।

येता इतने कूँ जानना खूब नईं,
हंसी में बुरा मानना खूब नईं।

तूँ जा अब बुला उस चितारे कूँ याँ,
सूरत ग़ैब[1] ते लिखन हारे कूँ याँ।

के धुँड़ती थी ली दिन सते जाँ तहाँ,
के पैदा हुए नक़्क़ाश कोई खूब याँ।

ख़ुदा उस कूँ ल्या ल्या[2] है इस ठार अब,
महल का उसे काम फ़रमाएँ सब।

देखें बारे नक़्क़ाश कैसा है यो,
दिसेगा अताल आपी जैसा है वो।

देखें काम उस होर तुज बात आज,
के मसला अहै एक पन्त होर दो काज।"

सो यो बात सुन दाय अनजान हुई,
वो नादान धन मुख पशेमाँ[3] हुई।

कही दाय अपनी कूँ यूँ की कही?
वले ला गले दाय कूँ भी कही।

"नको सुस्ती कर बेगी सूँ जा अताल,
महल कूँ चतरने उसे ल्या अताल।

के इस महल का आज महतर[4] अहै,
अजब भागवन्त खूब यो घर अहै।

जुकोई अक्ल होर फ़हम धरते अहैं,
हरेक काम महतर सूँ करते अहैं।"

१ गुप्त २ ले आया है ३ पछताई ४ श्रेष्ठ।

सो सुन्धर बख़्तवर चंचल मुश्तरी,
जो भोतीच मंग ले के मिन्नत करी।

बज़ाँ[1] उस कूँ दाई बुलाने चली,
उसे बेग इस ठार ल्याने चली।

अतारद के नज़दीक वो नार कीं[2],
"बुलाती तुजे मुश्तरी शाह की।

सुते बख़्त जागे तेरे सिर ते आज,
के तुज आवो कई मुश्तरी नार आज।

ख़ुशी ख़ुर्रमी[3] है तुजे सख़त आज,
के यारी दिए हैं तेरे बख़्त आज।"

अतारद यो सुन भोत ख़ुश हाल हो,
चल्या शाह कन इस धन का दुम्बाल[4]।

देख्या दूर ते मुश्तरी शाह कूँ,
सराया भोत धात उस माह[5] कूँ।

मिला लेने कूँ ली उलाले[6] किया,
तमाशे तमाशे के चालें किया।

जो वो दाय उस शह कूँ ख़ुश हाल पाय,
सो शह के हुज़ूर उस चितारे कूँ लाय।

अतारद किया मुश्तरी कों सलाम,
के "शह मैं हूँ तेरा कमीना ग़ुलाम।"

हंसी यो बचन सुन ख़ुशी सूँ सुधन,
के हंसता है ज्यूँ बाव ते फूल बन।

दिखाई उसे महल वो ठार ठार,
के इस महल कूँ इस वज़ा तूँ सवाँर।

---

१ उस वक्त २ कही ३ आनन्द ४ पीछे ५ चाँद, अर्थात् चन्द्रमाँ सी मुश्तरी को
६ उतावला।

के "मैं की हूँ क्यों तूँ करेगा जो रास,
बखेरूँगी सुन्ना[1] तेरे आस पास।

नवाजूँगी[2] तुज कूँ मोत धात मैं,
जड़त[3] का तुजे देऊँगी हात मैं।"

अतारद कह्या शह कूँ सर भू में धर,
के "मैं क्या सकूँगा तेरा काम कर।

करेगा नमक शाह तेरा यो काम,
के मैं क्या हूँ यो काम करने तमाम।

तेरा क़स्द[4] गर शाह सारा अहै,
तो यो काम सब होनहार अहै।"

---

१ स्वर्ण २ कृपा करूँगी, दान दूँगी ३ जड़ाऊ ४ इरादा।
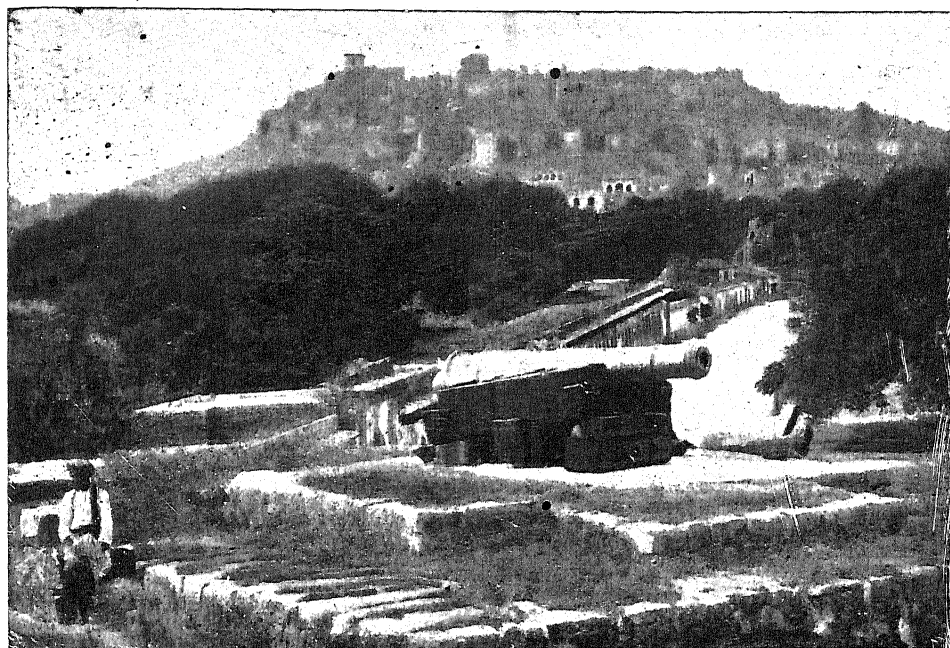
गोलकुण्डा

इब्राहीम कुतुबशाह

आरस्तन महल मुश्तरी[1]

बजिद हो के जिद वो जो धरने लग्या,
सो उस महल कूँ नक्श करने लग्या।

जो ज़रतीख़[2] ज्यूँ चाँद सुन्ना सो सूर,
सफ़ेद अब्र तारे हैं सुर्ख़ी सो नूर।

अतारद चितारे कूँ नईं कुच्छ ग़म,
के धरता अहै हात जोज़ा क़लम।

जो ख़ुश हो मिस ल्याय टुक दिल मने,
तो लक महल चित्रे वह यक तिल मने।

निपट ध्यान यक दिल सूँ धरने लग्या,
विच्चत्तर चितर वो चितरने लग्या।

कहीं बन बयाबाँ कहीं समद भार,
कहीं मुर्ग़ माही कहीं फूल झाड़।

कहीं शेर शर्जा[3] कहीं गज तुरंग,
कहीं बाज़ बहरी कहीं यक कुलंग[4]।

कहीं बुत बुतख़ाने होर बुत परस्त,
कहीं नार होर पुरुष यक ठार मस्त।

कहीं शायराँ शेर कहते अहैं,
कहीं चश्मे अमृत के बहते अहैं।

कहीं हैं मुलाने[5] कहीं हैं ख़ुमार[6],
कहीं हैं दिवाने कहीं है हुश्यार।

कहीं तख़्त पर कोई सुती[7] मस्त हो,
कहीं बैठे दो यार हमदस्त हो।

---

१ मुशतरी के महल को सजाना २ ज़रिदार ३ सिंह ४ पच्छी ५ मुल्ला परहेज़गार ६ नशा
७ सोती हुई।

कहीं पीर शहीद होर पैग़म्बराँ,
कहीं देव जिन होर परियाँ अछरियाँ[1]।

कहीं खुसरो होर शीरीं यक ठार है,
कहीं लैला होर मजनूँ दो यार है।

कहीं गाती गावन खुश आवाज़ सूँ,
कहीं पातराँ[2] नाचतियाँ साज़ सूँ।

कहीं धतरे[3] मुर्ग़ सेमुर्ग़ सर,
कहीं चाँद सुरी च तारे अँबर।

चितार्या चितर वो अपस हात सूँ,
संवार्या महल कूँ भोत धात सूँ।

किया चौक[4] बीच चौक इस चौक पर,
नज़ाकत सूँ सिंगार नाज़ूक कर।

सुहे चौक इस नक्श मैदान में,
खिला चाँद का ज्यूँ है असमान में।

लिख्या शह की सूरत वहाँ उन जो आ,
हिली काँद निरजीव सब जीव पा।

अगर उसकूँ बाताँ में कोई खोलता,
तो हर संग इसका बचन बोलता।

अहैं संग जो इस कान्द[5] रंग-रंग में,
के तासिर[6] मसीहा है हर संग में।

यो तासिर है शह की तासिर थे,
के ज्यूँ झाड़ बड़ता अहै नीर थे।

लिख्या नक्श संसार की नार का,
किया शह कूँ मद नायक इस ठार का।

१ अछरी का बहुवचन, अप्सरा २ वेश्याएँ ३ धरती ४ आंगन ५ दीवार ६ गुण।

चितर झमके यूँ शह के मुख भान ते,
के रोशन ज़मीं ज्यूँ है असमान ते।

देख्या महल कूँ जो मुस्तैद कर,
के हर एक अँगुली कूँ था सो हुनर।

सरासर महल ज्यूँ किया बोस्ताँ,
के खुशहाल होएँ देक सब दोस्ताँ।

महल खूब आला यो ज्यूँ सरग[1] हुआ,
दन्दी दुश्मनाँ का सो झल[2] मर्ग[3] हुआ।

उसी दाई कूँ वाँ बुला भेज कर,
कह्या "मुश्तरी शाह कूँ कर खबर।

तुमीं काम जो कये थे सो सब हुआ,
इसें देखने का सो वक्त अब हुआ।

देखो यक नज़र इस महल कूँ अताल,
के मैं लीं मशक्कत किया उस दुंबाल।

धरो मुंज उपर टुक शफ़क्क़त तुमीं,
करो चीज़ मेरी मशक्क़त तुमीं।

हरेक काम होता जो उल्लास ते,
सो शाहाँ की उमीद होर आस ते।

अगर शह की अछती न उम्मीद आस,
न होता मुंजे यूँ उस होर उलास।

बड़ा शाह वो है जो कुछ दान दे,
नवाज़े हुनरमन्द कूँ मान दे।

हुनर ज्यास्त होता अहै दान ते,
न उस की फ़हम अक्ल होर ग्यान ते।

---

१ स्वर्ग २ आग ३ मौत।

नको कर तूँ तक़सीर कुच दान कूँ,
के होता है बल दान ते शान कूँ।

सनद यूँ हुनर परवरी का है शह,
न याँ भूट कुछ शायरी का है शह।

हुनर है हुनरमन्द कूँ क्या ग़म अहै,
जो बख़्शे हुनरवन्द कूँ सों कम अहै।

तलब है जो ग़ालिब तलबगार पर,
करे नाज़ हुनरवन्द खरीदार पर।

हरेक ख़ूब जान होर खरीदार नईं,
बिचारे हुनरवन्द कूँ वाँ भार नईं।

यो मौकूफ़ है सब ख़रीदार पर,
सरअफ़राज़ करना समजकार पर।

हुनर ख़ूब हर बार होता नहीं,
रतन पाक हर ठार होता नहीं।

अगर मानी अछता तो इस वक्त पर,
तो मालूम होती मेरी कुछ क़ुदर।

जुकुच नाज़ है मेरे काम में,
सो मशहूर है रोम होर शाम में।

न कुच आ मना किस पै धरता हूँ मैं,
ग़र्ज़ बात दुनिया की करता हूँ मैं।

तूँ दरम्याने आई तो यो काम कर,
मिरे काम का कुच सरंजाम कर।

इधर सट न दे काम तूँ कर तमाम,
के तेरी बुज़ुर्गी है मेरा सो काम।

जो समजे सो वो बोल किस ना धरे,
बख़्त ख़ूब नईं तो हुनर क्या करे।

हुनर होर बख़्त जब मिले एक ठार,
तो दौलत गुलाम होर ख़ुदा होय यार।

वले दोनों यक ठार आना कधाँ,
हुनरवन्द मक़सूद पाना कधाँ।

के पंखी के तईं जोर पर का अहै,
हुनरवन्द कूँ तक़वा[1] हुनर का अहै।

बख़्त नईं हुनरवन्द कूँ तो ग़म नहीं,
हुनर खूब कुच बख़्त ते कम नहीं।

हुनर खूब उस पर जो बख़्त है बुलन्द,
यो दोनों भी होंवें सुना होर सुगन्द[2]।

तूँ खुशहाल अछे होर न कर कुछ ग़म,
बख़्त खूब ली है हुनर खूब कम।

वही शाह आलम में आरिफ़ कवाय,
हुनरवन्द का लाड़ जे कोई चलाय!

के नाज़ुक है यूँ दिल हुनरवन्द का,
जो नईं ताब माशूक़ की छन्द का।

हुनर खूब हुनरवन्द जो धरते अहैं,
सो शाहाँ उपर नाज़ करते अहैं।

हुनर खूब ज्यूँ खूब महबूब है,
हुनरवन्द महबूब ते खूब है।

सराऊँ उसे शाह वर साज़ सूँ,
जो सोसे[3] हुनरवन्द के नाज़ सूँ।

हर एकस कूँ दिल फ़हम सूँ जुफ्त नईं,
के आरिफ़ कहवाना यो कुछ मुफ्त नईं।"

---

१ भरोसा २ सोने में सुगन्ध ३ सहे।

अतारद वहाँ बैट भौ मान[1] सूँ,
कह्या बात उस दाय महरवान सूँ।

हुनर में जो उस धन कूँ कुछ क़ाम होय,
तो जिस खातिर आया सो वो काम होय।

अतारद यो बात उस ते बोल्या खिजा,
के देखे दिल उस नार का टुक निभा[2]।

१ बहुत आदर से २ गौर से, झुक कर।

दीदन आरायश महल व इनाम दादन मुश्तरी ब अतारद[1]

कहीं दाय जा मुश्तरी शाह कूँ,
सूरज जिसते रोशन है इस माह कूँ।

के "शह मुस्तैद सब हुआ है महल,
तूँ इस महल कूँ देखने आज चल।

तेरे हुक्म कूँ शाह जस ली अहै,
तुजे इस महल का हवस ली अहै।

तूँ धरती थे ली दीस[2] सूँ योच आस,
के को होयगा मेरा महल रास।

खुदा आस तेरी तुजे अब दिया,
के ज्यूँ महल मंगती थी तूँ त्यूँ किया।

महल देख होर मान शह साच कर,
मेरी बात तूँ होर उस का हुनर।

के शाहाँ कने झूट कह्या न जाय,
जुकोई झूट कये सो पत्यारा[3] गँवाय।

बुलन्द मर्तबा झूट ते होय पस्त,
दुनिया में नहीं सच्च ते कुच खूब बस्त।

अगर झूट सच्च कोई बुजनहार होय,
हुनर ऐब जो है सो इज़हार होय।

अयाँ शक्ल है देखता ग़ैब कूँ,
हुनर है समजना हुनर ऐब कूँ।"

बचन दाय के सुन सुधन कर मुंज,
दुरस्त है ककर अपने दिल में समज।

---

१ महल की सजावट पर मुश्तरी का अतारद को पुरस्कृत करना २ दिन ३ विश्वास।

चली नार उस ठार उसके संगात,
तमाशा महल में देखी धात धात ।

महल देख दाय कूँ गल लाय कर,
अनन्द शौक़ होर ज़ौक़ खत पाय कर ।

जो बोली अथी बात वो धन सुजान,
अतारद कूँ उसते बी दी ज्यास्त दान ।

शहाँ का दिल इस धात अछना भला,
दस्त दिसत इस वज़ा बात अछना भला ।

खुदा जब जिसे कुछ दिलाता अहै,
तूँ शाहाँ के बी दिल में ल्याता अहै ।

खुदा जब दिलावे तो कोई कुछ पाय,
शहाँ काँ ते दें जो खुदा नाँ दिलाय ।

खुदा पास ते तूँ उमीद आस मंग,
अगर तूँ मँगे तो खुदा पास मंग ।

जो शाहाँ उपर बोल धरते अहै,
ग़लत है उनो याँ बिसरते अहैं ।

अतारद का हासिल मक़सूद कर,
मुना दान दी दिल कों खुश नवद कर ।

जो यक ठार टुक ठैर चंचल खड़ी,
नज़र शाह की सूरत ऊपर पड़ी ।

सूरत शह की देखत मुली नार वो,
पड़ी बेसुद हो कर उसी ठार वो ।

कितक वक़्त लग धन वो बेहोश थी,
सो शह की मुहब्बत करे जोश थी ।

के आहाँ पर आहाँ जो मारी उने,
सटी मस्त हो होश्यारी उने ।

सो वो दाय पकड़ी दुखूँ झोरने[1],
लगी हात अपस में अपै जोड़ने।

के "वा इस नहनी कूँ यहाँ क्या हुआ,
मेरी चन्दनी कूँ यहाँ क्या हुआ।

कहाँ जाऊँ किस को कहूँ क्या करूँ,
अताल इस कूँ इस ठार मैं क्यों धरूँ।

मबादा परी का अछे इस नज़र,
के यो हुई यकायक यूँ बेख़बर।

मुँजे आज दिसता नहीं कुच कहीं,
मंतरकारी भी कोई हाज़िर नहीं।

नवा महल है क्या हुआ याँ इसे,
लेकर जाऊँ याँ ते अता काँ इसे।

उठाती तो उठती नहीं नार यू,
न जाने के क्या देखी इस ठार यू।"

सो वैसे में वो नार हुश्यार हुई,
जो थी बेख़बर सो ख़बरदार हुई।

सूरत शह की तिल तिल निभाने लगी,
खड़े क़द पै बलहार जाने लगी।

देक इस नक्श कूँ नार हैरान थी,
सो सुद बुद गँवा सब परेशान थी।

न अन भावता था न पानी उसे,
हुई तलख़[2] सब ज़िन्दगानी उसे।

पकड़ रही थी वाँ नार इस ठार कूँ,
के भाती वही ठार इस नार कूँ

---

१ झेलने २ कड़ी।

वही नक़्श तन था वही नक़्श मन,
वही नक़्श पानी वही नक़्श अन।

कुतब ज्यूँ कुतब ठार पर थीर है,
वहाँ मुश्तरी फिरती चौंफेर[1] है।

मुहब्बत जो पकड्या है यूँ दाट कर,
बिचारी कहाँ जाय वो न्हाट[2] कर।

अगर किस कूँ बल बल जो रुस्तम अछे,
मुहब्बत की तिल तिल सो बल कम अछे।

प्यारे मैं हूँ राती यकेली क्यूँ जीवूँ माय,
मोती एक हारी होती सो बिरहे की झार खाय।

---

१ चारों तरफ़ २ भाग।

ग़श करदन मुश्तरी अज़ दीदन तस्वीर क़ुतुब व पन्द दादन दाई[१]

लगी पूछने दाय इस नार कूँ,
के "ऐ माई क्या देखी इस ठार तूँ।

तेरा दिल नहीं की आनन्द सुक्ख पर,
के क़ुरबान गई दाय तुज मुख पर।

महल देखने आई थी शौक़ सूँ,
सो अब बैठी की यूँ तूँ बे ज़ौक़ सूँ।

छुपाती तूँ इस बात कूँ की ऐ नार,
तुजे कौन है मुँज ते भी दोस्तदार।

तू बेगानी मुँज जानी इस धात की?
नहीं बोलती खोल यो बात की?

के मा बाप हो यक बड़े भाई सूँ।
छुपाते नहीं बात कोइ दाय सूँ।

जो तूँ ना कहसी मुँज कन अपना यो हाल,
तुजे दूद हरगिज़ न कर सूँ हलाल।

अगर टुक जो तूँ नाज़ सूँ छन्द करे,
तो पंखियाँ कूँ बारे पै पाबन्द करे।

तेरे मुख जलतल जगत लौन है,
तूँ जिस ताईं यूँ हुई सो वो कौन है?

के यो बात तूँ मुँज तेरे पर कसूँ,
ये भी ज्यास्ती सूँ मेरे सिर कसूँ।

फ़रिश्ता अगर होय असमान में,
तो मैं ल्या देऊँ तेरे फ़रमान में।"

---

१ क़ुतुबशाह के चित्र को देख कर मुश्तरी का मूर्च्छित होना और दाई का उपदेश देना।

कही "दाय क्या पूचती हाल तूँ,
नको पड़ झुटे मेरे दुंबाल[1] तूँ।

बजिद[2] है तूँ इस बात कूँ खोलने,
बले मुँज ताक़त नहीं बोलने।

ज़बाँ मन मने लटपटाती अहै,
नहीं बात यकायक आती अहै।

फ़हमदारी की फ़ाम सूँ फ़ाम तूँ,
वकद[3] पर वकद देने क्या काम तूँ।

तेरे हात ते काम आसी न यो,
जो करूँगी तुजे मैं तो न्हासी[4] न यो।

कही सच्च है क्या होएगा मुँज ते काम,
करेगा हक़ इस काम का अहतमाम।"

जो मोती च पूछी महरबान दाय,
तो इस दाय कूँ शह की सूरत दिखाय।

"यदी इस सूरत की दीवानी हूँ मैं,
छुप्या भेद याँ कुछ जानी हूँ मैं।

यही नक्श मोंदू भुलाया मुँजे,
यही नक्श नेह अब लाया मुँजे।

इसी नक्श का ध्यान धरती हूँ मैं,
इसी नक्श कूँ ताईं मरती हूँ मैं।

इसी नक्श कूँ देख परेशान हूँ,
इसी नक्श कूँ देक हैरान हूँ।

यदि नक्श ऐ दाय मग़म[5] क्यों किया,
मैं आक़िल अथी देक बेकम[6] क्यों किया।

---

१ पीछे २ हठ के साथ ३ ताकीद ४ भागी ५ दुःखी; अरबी शब्द मग़मूम से ६ मूर्ख।

मुँजे मेरी सूरत पै ली थी गुमाँ,
वले यो तो मुंज ते बी है खूब जाँ।

के जिस जान का नक्श इस धात है,
सो शह जान आपै वो किस धात है।"

सो शह की सूरत टुक निभा[1] देखी दाय,
सो वो दाय भी सुद अपनी गँवाय।

कही "नईं है तेरा गुना कुच धन,
के ऐसी च सूरत है यो मन हरन।

तिस ऊपर तूँ बी नार है बावली"
उछाल्या[2] मदन हुई है ऊतावली।

तूँ चंचल चित्र नार इतनी सी है,
बड़ी छन्द भरी भोत फ़ितनी[3] सी है।

यो कैसा अहै इश्क़ जो तूँ करी,
भली है तूँ शाबाश जो नईं डरी।

पिरत-पन्त में तूँ नवी आई है,
अभूँ नेह के चरके नईं पाई है।

इश्क़बाज़ी धन कुछ नहना काम नईं,
नहनी है तूँ अजूँ[4] तुजे फ़ाम नईं।

कची तूँ तुजे बुद कची आई है,
के कान्दाँ[5] के नक्शाँ सूँ जीव लाई है।

खुशी आह है दुश्मनी तूँ पछान,
दुखा कर जो बोले उसे दोस्त जान।

ग़र्ज़बन्द[6] कूँ यो बात काँ फ़ाम है,
दुखा बोलना दोस्त का काम है।

---

१ ग़ौर से २ उछाला ३ उत्पाती ४ अभी तक ५ दीवारें ६ याचक।

तूँ इस नक़श सूँ इश्क़ साज़ी अहै,
यो नेह नई है तफलाँ[1] की बाज़ी अहै।

इश्क़ क्या है कर के पछानी है तूँ,
गुड्याँ का मगर खेल जानी है तूँ।

हवस है नको जा हवस के दुंबाल,
भली वो जो अपसे रखी याँ संभाल।"

तर्ज़ इश्क़ का था सो थी पाई वो,
वले पन्द कूँ कहती थी दाई वो।

तलें तल हटकती थी उस माय कूँ,
के वाजिब अहै पन्द देना दाय कूँ।

तूँ मा-बाप फ़रज़न्द कूँ बिच गोद धर,
भरोसा भोत करती है दाय पर।

वो धन जाने होर उस के मन का जेब[2],
कना था सो कइ वो पछें या नसीब।

थोड़ा भोत जानी है भी जान गये,
मेरी बात तूँ साच कर मान गये।

अँगे इश्क़ क्या है सो जानेगी तूँ,
बड़ी होयगी तो पछानेगी तूँ।

तूँ किस बाब कऊँवा[3] कर हुई है निकस[4],
के आधा अहै इश्क़ सारा हवस।

तूँ सूरत सतें जीव क्या लाई है,
तूँ सूरत मने मानी क्या पाई है।

अगर मानी सूँ जीव तूँ लायगी,
तो सूरत थे फल भी तूँ कुच पायगी।

---

१ ढोंग २ जीभ ३ कहलवा कर ४ निःशक्त।

इश्क़ सूरती काम, ना आय कुच,
लगा मानी सूँ जीव जो तूँ पाय कुच।

इश्क़ सूरती जाएगा जान तूँ,
इश्क़ सूरती ख़ूब नईं मान तूँ।

सो धन दाय कूँ कई के "नईं तुज्ज फ़ाम,
अज़ल तो च था होनहारा यो काम।

मुँजे मानी दिसती है सूरत भितर,
तो लुब्दी[1] हूँ इस पाक मूरत उपर।

नज़िक[2] किस के कहने कूँ नईं आय है,
अगर मा अगर बाप अगर भाय है।

जो मानी अयाँ[3] मुँज है सूरत मने,
बयाँ ना किया जाए वो किस कने।

अवल ते हुआ है मेरा हाल यूँ,
पड़ी की तूँ भी मेरे दुंबाल यूँ।

जो मैं मँगती दारू[4] सो देसी न कोई,
किसी का दरद बाँट लेसी न कोई।

दुनिया में जेता देखती हूँ जिसे,
अपस का अपस कूँ पड्या हर किसे।

यो दिल सोज़ी तेरी ख़ुश आती नहीं,
दिवानी हूँ मैं पन्द भाती नहीं।

दिवानी दिवाने की पन्द दे नको,
रोऊँगा[5] कर बुरे बोल तूँ कै[6] नको।

छुई जो लगी उस न झँझोलना,
यो दुख पर है दुंबल तेरा बोलना।

---

१ लुब्ध हुई २ समीप ३ प्रकट ४ दवा ५ ताना दे कर ६ कह।

के गुस्से सूँ मुँज पर झपटती है तूँ,
के जलते उपर तेल सटती है तूँ।

अगर मैं तुजे कुच कही अपे सुंधर,
दिवानी हूँ इस का नको ऐब कर।

नको ऐब कर दिल में कुच रैब ते
दिवाना है काली[1] हरेक ऐब ते।

क्या अक्ल में अछ के लहूँ घूटना,
भला है दिवानी हो कर भूटना[2]।

दिवाना जो कोई हुए ज़माना पछान,
वो आक़िल है उस कूँ दिवाना न जान।

ग़र्ज़ ऐसी बाताँ सूँ क्या है तुजे,
नसीबाँ मने था सो अँपड्या मुँजे।

न कोई इश्क़ कूँ ल्यानहारा अहै,
के यो इश्क़ अपै आनहारा अहै।

जहाँ इश्क़ है वाँ है हैरान सब,
अखल होर फ़हम सुद बुद जान सब।

न जासी[3] पिरत मुँज ते अब छूट कर,
के दिल ले गया है मेरा लूट कर।

यो फ़रयाद मैं किस कने जा करूँ?
न होना अथा होर हुआ क्या करूँ?

१ ख़ाली २ भूट बोलना ३ जाती।

पुरसीदन मुश्तरी व ख़बर सूरत मुहम्मद कुली अज़ अतारद[1]

अतारद कूँ भेजी बुला नार वो,
दोनों बैठे मिल कर सो यक ठार वो।

कही "तूँ संवार्या महल साज़ सूँ,
लिख्या सूरताँ इस में भो नाज़ सूँ।

सिफ़त दूर ते तेरी सुनती थी ज्यूँ,
सो नज़दीक थे आज मैं देखी त्यूँ।

हुनरवन्द तूँ सच पछानी तुजे,
के मानी[2] थे तुज ज्यास्त मानी तुजे।

कहूँ क्या तेरी ख़ूबी की बात मैं,
सराऊँ तुज ऐसे कूँ किस धात मैं।

सो धन बात भो धात इस सात कर,
के इस सात भो धात यो बात कर।

के तुज सात यक राज़ धरती हूँ मैं,
सो उस राज़ की बात करती हूँ मैं।"

सकी शह की सूरत उपर की नज़र,
कही "ऐ अतारद तूँ सुन कान धर।

किसी शाह अपनी यूँ इस नार कूँ,
चुमक खींच लेता है ज्यूँ सार कूँ।

न जानो के यो नक्श क्या सेहर है,
के हर दिल में इस नक्श का मेहर है।

दुनिया में तो कई सूरत इस धात नई,
तूँ जीव ते लिख्या के देख्या है कई।

---

१ मुश्तरी का अतारद से मुहम्मद कुली की शक्ल सूरत पूछना २ बग़दाद का प्रसिद्ध चित्रकार।

मेरा मन भुलाया यो मन हर सूरत,
लिया दिल दिया जीव यो दिलबर सूरत।

अजब राज़ है यो च पाया न जाय,
जो पाये तो मक़सूद कह्या न जाय।

के.ता मैं रखूँ दिल में ना बोल कर,
कती हूँ तेरे पास अब खोल कर।

के यो भेद कर तूँ तुजे फ़ाम है,
के तुज सूँ अगे ती मुंजे काम है।"

अतारद कह्या दिल में इस धात ल्याय,
के संपड़ी है अब यो तो जाने न पाय।

बहुत सज सेती[1] आज यो काम हुआ,
अताल अन्त इस का मुँजे फ़ाम हुआ।

जो मक़सूद कूँ याँ लग आया हूँ मैं,
सो अलहम्दुलिल्ला[2] के पाया हूँ मैं।

सुनेगा अगर शह इस बात कूँ,
तो ख़ुश होएगा मुंज पे भो धात सूँ।

चितारा चितर गुनवन्ता ख़ुश लखन,
कह्या खोल सब मुश्तरी नार कन।

---

१ से २ सब तारीफ़ अल्ला की है।

तारीफ़ करदन अतारद पेश मुश्तरी अज़ मुहम्मद कुली कुतुब[1]

"ब्राहिम कुतुबशाह है शह सुभान,
दखन तख़्त गह शहर उस का मकान।

शहाँ नालबन्दी[2] देते डरते सब,
जंगल पकड़े है वो निकल धाते सब।

ज़ुल्म ज़्यास्ती थे मुलक पाक उस,
के मशरिक़ ते मग़रिब तलक धाक उस।

सटेगा बनी गार्ब[3] इस हाक ते,
छुप्या भुई भितर रुस्तम उस धाक ते।

जो उस डर न अछता समद दिल मने,
तो जग कूँ डबाता वो यक तिल मने।

अगर हैबत उसका न धरता पवन,
उड़ा सट देता भुई कूँ तिनके नमन।

उसी अदल[4] ते गाल कर सब सरीर,
अगन काँपती होर लरज़ता है नीर।

मुहम्मद कुली फ़रज़न्द इस राज का,
के लायक़ है वो तख़्त होर ताज का।

तलासें[5] पेशानी सूँ पग सुन्दर्यां*
दिवान्याँ हैं उस कियाँ सू हूर पर्यां।

जुकुछ नूर शह मुख चन्दर में अहै,
न जिन ना परी ना बसर[6] में अहै।

---

१ अतारद का मुश्तरी के सम्मुख मुहम्मद कुली कुतुब की प्रशंसा २ कर देते हुए ३ गर्म ४ न्याय ५ खोज करें ६ आदमी।

* पाठान्तर : "यकस थे सो यक खूब है सुन्दर्यां"

पर्यां शाह के इश्क़ का पा उमंग,
पड़े शह उपर शमा पर ज्यूँ पतंग।

जो अंगुली चिकल चख धरता अहै,
तो सुराख़ शह संग कूँ करता अहै।

लगा इश्क़ लाक्क स्त्रियाँ लाक धात,
दीवानियाँ हो फिरतयाँ हैं उसके संगात।

हरेक गोपिनी शह की ज्यूँ माह है,
के इस दौर में किशन वो शाह है।

अगर सूर जैसी अछे कोइ सुन्दर,
बला दूर होय शह के पावाँ उपर।

हुआ परगट उसका हुस्न याँ तलग,
के यूसुफ़ की ख़ूबी कूँ बिसर्या है जग।

जहाँ पाँव धर शाह चलता अहै,
वहाँ आबे ज़मज़म[1] उबलता अहै।

रहे जान महाजान शह भुजबल[2],
अछे छाँव ज्यूँ दौलत उस पाँव तल।

वो ऐसा है शह जान सुन ऐ सुन्दर,
सर्गी मा भुलेगी उसे देख कर।

सूरत उसकी इस धात अछे ख़ूब जब,
जो तूँ देक उसे भूली तो क्या अजब?

---

१ मक्का में एक कुआ है जिसका पवित्र पानी जमजम कहलाता है। कहा जाता है कि इस्माल पैग़म्बर की सौतेली माँ ने उन्हें जंगल में भेज दिया था। अरब के रेगिस्तान में वे अपनी माँ के साथ रहते थे। एक बार उन्हें बड़ी प्यास लगी। पानी कहीं न मिला तो इस्माल ने झुंझला कर धरती में पैर पटका, जिस के धक्के से वहीं पानी की एक नहर निकल पड़ी। यहीं कुँआ बना दिया गया है। मक्का से लौटनेवाले धार्मिक यात्री इस पवित्र पानी को लाते हैं २ भुजाओं का बल।

जो शह बाग़ में टुक तमाशे कूँ जायँ,
तो बिन रूत झाड़ाँ फलाँ बार ल्यायँ।

शहंशह के दीदार के नूर थे,
सुके झाड़ हरे होयँ भई सीर थे।

कह्या सब वले उन कह्या नईं यो बात,
के आशिक़ है तेरा सुघड़ शह सुजात।

के मत सरचरे बात यो सून कर,
हुआ काम भी सिर ते होए तल उपर।

जो आजिज़ हो दिखलाए आशिक़ नयाज़,
तो माशूक़ करता है तेरीच नाज़।

के खूबाँ में आदत सो इस धात है,
छुपी नईं है मशहूर यो बात है।

सुलक्खन चतरधन चंचल गुनवन्ती,
सो शह इश्क़ के मद सूँ हुई थी मती।

कही "क्या है तदबीर इसकी अताल,
के मुंज में तो अब रह्या नहीं कुंच हाल।

दिखाया सूरत ज्यूँ तूँ तसवीर कर,
तो तू हीच कुच उसकी तदबीर कर।

मेरा हाल क्या है सो जाने तुहीं,
छुप्या राज़ दिल का पछाने तुहीं।

तुहीं मेरे ग़म का सो ग़मखार हो,
के मैं बेटी तूँ बाप के ठार हो।

किसे बात यो बोलूँ मैं जाय कर,
के तदबीर मेरी करे आय कर।"

जो मिन्नत लगी करने भो धात सूँ,
अतारद क़बूल्या वो इस बात कूँ।

दिया आस इस नार कूँ पीव का,
के मरते कूँ तक़वा[1] देते जीव का। †

---

१ तसल्ली देना, सान्त्वना देना।

† पाठान्तर है :—"तेरा काम है सो क्या फ़ाम मैं,
नको डर करूँगा तेरा काम मैं।"

ग़ज़ल गुफ्तन मुश्तरी अज़ फिराक़ मुहम्मद कुली कुतुबशाह[1]

ताक़त नहीं दूरी की अब तूँ बेग आ मिल रे पिया,
तुज बिन मुंजे जीवना भोत होता है मुश्किल रे पिया।

खाना बिरह कीती हूँ मैं पानी अंझूँ[2] पीती हूँ मैं,
तुजे बिछड़ जीती हूँ मैं क्या सख़्त है दिल रे पिया।

हरदम तूँ याद आता मुंजे अब ऐश नईं भाता मुंजे,
बिरहा यो संताता मुंजे तुज बाज तिल तिल रे पिया।

मुंज तन तपिश जाने तुम्हीं मुंज ठार जीव लाने तुम्हीं,
मुंज दिल मँधर[3] म्याने तुहीं कीता है मंज़िल रे पिया।

तूँ जीव मेरा मैं सो दिल तुज सात रहना क्यों न मिल,
दिन रात में मैं एक तिल नईं तुज ते ग़ाफिल रे पिया।

जिस यार को मैं मंगती हूँ वह यार कहाँ है?
सर सूँ सकी चल जाती वले ठार कहाँ है?

दिल हात में थे छीन लेकर नहाट[4] गया है,
वो यार दग़ाबाज़ झोटे मार कहाँ है?

मुसताक़ी[5] के बाज़ार में मैं बेचती हूँ जीव,
दल्लाल किधर होर खरीदार कहाँ है?

आशिक़ तो मुंज ऐसे सकी लाखाँ हैं व लेकिन,
माशूक़ सो इस दौर में उस सार कहाँ है?

दीदे मेरे नादीदे जो दीदार देखे थे,
मुँज सबर देव नहार वह दीदार कहाँ है?

---

१ मुहम्मद कुली कुतुबशाह के विरह में मुश्तरी का ग़ज़ल कहना २ आँसू ३ मन्दिर ४ भाग गये ५ आकांक्षा रखना।

यादकरदन[1] मुश्तरी मुहम्मद कुली क़ुतुबशाह

लग्या है मेरा शह सूँ भोतीच दिल,
रह्या जाए ना मुंज ते अब एक तिल।

मिला दो मुंजे कोई मेरे शाह सूँ,
सूरज सरोक़द सुरंग माह कूँ।

ना मुंज बाग़ ख़ुश आए ना बोस्ताँ,
न मुंजे खीश[2] भाते हैं ना दोस्ताँ।

---

१ याद करना २ आत्मीय।

हालत मुश्तरी दर फिराक़ मुहम्मद कुतुबशाह[1]

न सुख सूँ मुंजे नींद आती अहै,
न फुल सेजड़ी मुंज भाती अहै।

बिसाले हुए कैसे यो सीस ते,¶
तपाती अहे रात मुंज दीसते।

कहाँ है वो शह निरमला नौजवान,
कहाँ है वो शह गुनवन्ता गुन निधान।

कहाँ है वो लालन मिठी चाल का,
कहाँ है वो साजन लंबे बाल का।

कहाँ वो चतम चंचला मन हरन ?
कहाँ वो सुघड़ अचपला है सजन ?

न मुंज दीस हे सुख न मुंज रात,
न जानूँ के गुमता है शह किस संगात।

जुकोई नार उस कन है उस नार थे,
मुंजे रश्क़ आती है इस ठार ते।

हुए जल कुजल नैन दीदार बाज,
यकेली कधाँ लग रहूँ यारँ बाज।

रतन थे सो तन पर अँगारे हुए,
के मुख चाँद अंभू सो तारे हुए।

हरेक रुँवाँ मेरे तन पै ज्यूँ नाग है,
सुना था अवल सो अताल आग है।

दो बादाम थे उस चंचल नार के,
लगे दाने झरने सो अन्नार के।

---

१ मुहम्मद कुतुबशाह की चिन्ता में मुश्तरी की हालत।
¶ पाठान्तर है :—"बिसाली हूँ कैसा यह दुःख सीसते।"

कही शाह के तईं सुधन याद कर,
"दुखिया जीव मेरे कूँ टुक शाद कर।

मुंजे तेरे मिलने की ली आस है,
के तन मुंज कने जीव तुज पास है।

मेरा हाल क्या है सो ऐ शाह नेक,
तूँ इस जीव मेरे कूँ टुक पूच देक।

छुड़ा मुंज बिरहे के तूँ जंजाल थे,
तू ग़ाफिल नको अच तेरे हाल थे।

कियां है बिरह ज्यास्ती दाद दे,
परेशान है जीव दिल शाद दे।

के कोई दाद देसी न तुज बाज मुंज,
अजब काम आ कर पड्या आज मुंज।

रही हूँ मोत दरते तुज आस कर,
मुंजे गिन तूँ ऐ शाह अपस दास कर।

मुंज ऐसियाँ तुजे लाक बाँदयाँ अहैं,
के तुज सात मिल कर वो नाँदयाँ अहैं।$

परियाँ होर हूराँ रहें तुज संगात,
तेरी नाँदनुक[१] शह अहें धात-धात।

हुआ क्या जो सैल्याँ हैं वो छब सते,
मुहब्बत में मैं ज्यास्त हूँ सब सते।

मुहब्बत में जो ज्यास्त सो ज्यास्त है,
कही बात मैं रास्त होर रास्त है।

निरासा बिरह मुँज सँताता अहै,
सो तपती कूँ फिर-फिर तपाता अहै।

---

१ नान्द=प्यार से पालना। नुक=थोड़ा सा, जरा सा।

$ पाठान्तर :—"के खिदमत में तुझ नियत आतियाँ अहैं।"

खुदा इस बिरह का करे घर खराब,
के नाहक़ मुंजे आज देता अज़ाब।

जों सँपड़े बिरह मेरे दावाँ तले,
रगड़ कर सटूँ देदे पावाँ तले।

अगर वस्ल टुक आके सँबालता,
तो बिरहा मुंजे क्या सबब जालता।

बड़ा बीकड़ा इस में खूबाई नईं,
मुँजे मारने आर इसे आई नईं।

गरब[1] की[2] नहीं गल पड्या माई का?
नफ़ा क्या है जग में बिरहाई का।

के मा इस की ना जनती बाट की?
दुखों छाती यो मेरी सब फाट की?

मेरे पास मेरा क़ुतुबशाह नईं,
मेरे हाल ते कोई आगाह नईं।

किधर देखूँ शह मैं किधर देखूँ तुज?
नहीं मुंज तूँ दिसता जिधर देखूँ तुज।

न वादे की मुंज आस ना दरस है,
हरेक दीस तुज बाज सौ बरस है।

रुबाई ख्वान्दन[3] मुश्तरी

"तुज याद बिना होर मुँजे काम नहीं,
निस[4] जागते जाती है दिन आराम नहीं।

मैं तो तुजे मंगती अदिख जीव वले,
तूँ क्यों मुँजे मंगता सो कुच काम नहीं।

---

१ गर्भ २ क्यों ३ पढ़ना ४ रात।

नाम नोशतीन अतारद व कुतुबशाह[1]

अतारद दबीर[2] होके तक़दीर सूँ,
लिख्या नामा मज़मून गंभीर सूँ।

सो भेज्या उने काग़ज़ इस शाह पास,
के बर आई है तुज उमीद व आस।

अगर धन उपर है तेरा शाह जी,
तो वाँ खान खा होर याँ पानी पी।

के जीवना च तुज बाज़ मुश्किल उसे,
गुज़रता है चख हो के हर तिल उसे।

नको बार ला बेग तूँ बेग आ,
के वो नार हुई है तेरी मुब्तला।

तेरे ताईं हुई है यो बदनाम याँ,
के कुच करते कुछ हो गया काम याँ।

ज़िकर लाई है दिल में तुज ध्यान धर,
कुतुब शाह कुतुब शाह कुतुब शाह कर।

तेरे विस्ल का मैं जो देता न आस,
तो यक तिल में मरती सुधन भर उसास।

मेरे पास अहवाल[3] सब की अहै,
इसी आस सूँ चुप कर रही अहै।

यो दिल सोज़ नामे कूँ लिखते बराँ,
सफ़े पर निकल पड़े थे अच्छराँ।

न लिक सक क़लम टुक ते घटता अथा,
रुखे[4] पर क़लम काली सटता अथा।

---

१ अतारद का कुतुबशाह के नाम (पत्र) लिखना २ कातिब, लिखनेवाला ३ हाल का बहुवचन
४ रुक्का कागज।

मुई इश्क़ भेदया है इस माह में,
के सौ-सौ खुसरो अहै इक आह में।

निपट तुज सूँ लुब्दाई अहै नार वो,
तेरा देखने मंगती दीदार वो।

नहीं एक तिल तुज बिन आराम उसे,
नहीं काम तुज याद बिन काम उसे।

शहा तूँ सुधन कूँ तो मंगता है ज्यास्त,
वले वो तुजे मंगती तुज ते बी ज्यास्त।

न होय काम इस काम पर होय बिन,
के मा दूद देती नहीं रोए बिन।

तूँ अब......मक़सूद होय बोल ते,
बर्ग[1] फल सटे बाव के तूल[2] ते।

बर्ग बार[3] है होर जहाँ बाद[4] नईं,
तुरत फल लेने का वहाँ दाद नईं।

जो फल लेने मंगता है हंगाम पर,
तो वेगी नको कर हरेक काम पर।

मिलेगी तुजे वो चंचल, सुन्दरी,
नज़र आ कर अब शह मेरी चाकरी।

दिवानी तेरी मुशतरी नार है,
सो शाबाश कहने की मुँज ठार है।

क्या काम यो मैं यहाँ में संचार[5],
मेरे बख़्त अब शाह तेरी नज़र।

तुजे बात यो शह कह्या जाय ना,
वले बाज़ कये भी रह्या जाय ना।

कहे तो न होता सो हुए काम सब,
कहे तो छुप्या भेद हुए फ़ाम सब।

---

१ पत्ता २ ज़ोर से ३ फल ४ हवा ५ संचार कर।

बशारत[1] याफतन[2] शाह व रुख़सत शुदन[3] अज़ महताब *

पड़्या शाह नामा हो ख़ुश चाव सूँ,
अंखियाँ पर रख्या लेके भो भाव सूँ।

कह्या काम यकायक यूँ क्यों हुआ,
जो अक्ल अथा वो सो अब यों हुआ।

हरेक मुश्किल आसान करता है वो,
के क़ादिर है क़ुदरत जो धरता है वो।

किया शुक्र सजदे कूँ कर तार का,
के तूँ दिल भुलाया है इस नार का।

जो लुब्दी है वो नार यूँ मुंज उपर,
सो मैं क्या सकूँगा तेरा शुक्र कर।

जो साबित क़दम आशिक़ है नार का,
ख़ुशी होय ग़म इस कूँ संसार का।

के जाँ बाज़ आशिक़ जुकोई पाक है,
मुराद उसके पावाँ तलें ख़ाक है।

बख़्त बख़्तवर आज ग़ालिब हुआ,
के मतलूब जो था सो तालिब हुआ।

कह्या शाह उस नार महताब कूँ,
के "जाने कूँ दे अब रज़ा मुंज कूँ।

रह्या तुज सूँ ली दीस यक ठार मिल,
सो ज्यूँ यार सेती अछे यार मिल।

जो इस नार के ताईं आता न मैं,
तुजे छोड़ कर याँ ते जाता न मैं।

---

१ खुश ख़बरी २ पाना ३ होना।

* शाह का ख़ुशख़बरी पाना और महताब के पास से रुख़सत होना।

तेरा प्यार मुंज पर अहै ऐ परी,
के मुंज सूँ तूँ ली आदमीत करी।

अजब तुज ते देख्या हूँ ख़ूबाई मैं,
न हो सक सूँ तेरा सो उतराई मैं।

अतारद बुलाया मुंजे बेग अताल,
के पंत देखती तुज सुधन हस्त चाल।

बशारत[1] नवी आज पाया हूँ मैं,
इसी काम कूँ याँ लग आया हूँ मैं।

रज़ा दे तूँ ख़ुशनद हो कर मुंजे,
के तूँ है परी है तेरा डर मुंजे।

दखन ते जो इस ठार अंपड्या हूँ मैं,
तेरे हात में आके सँपड्या हूँ मैं।"

कही शह "नको बोल यो बात तूँ,
पुचान्या है आख़िर मुंज इस धात तूँ।

यती वे अदब कर नको जान मुँज,
के मैं दास तेरी हूँ तूँ मान मुँज।

मेरी बात सच जान शह तूँ पत्याय,
के ख़ूबाँ ते हरगिज़ बुराई न आय।

नहीं ख़ूबी उस जो बुराई करे,
कुवां खोदे पर क़ाज अपै डूब मरे।

भले होर बुरे में फरक़ है शहा,
बुरा ख़ूब होर ख़ूब ना हुए बुरा।

जो कम ज़ात उस ते वफ़ा नईं होता,
असीलाँ[2] ते हरगिज़ ख़ता नईं होता।

---

१ सुसमाचार २ शीलवान।

बुराई के या खूबी यो वो च है,
असील होर कमज़ात में यो च है।

मना करने नईं तुज कूँ सकती हूँ मैं,
जो रहेगा तो मिन्नत सूँ रकती हूँ मैं।

अपी हो तुजे क्यों कहूँ मैं के जा,
अगर जायगा शह तो तेरा रज़ा।"

कहे शह के "जाना मुंजे है ज़रूर,
जो ना जासूँ तो काम पड़ता है दूर।

मुँजे एक तिल उस बिन आराम नईं,
रहने का यहाँ अब मेरा काम नईं।"

सुलक्खन सकी चंचली माहताब,
सो दी शाह कूँ यो फिर आकर जवाब।

"संगात आंती अँपड़ाती शह तुज घर,
जो अचता न मा-बाप का मुंज कूँ डर।

तेरी बाँदी हूँ मैं मुंजे ना बिसार,
तूँ जाता है दे कुच मुंजे यादगार।"

कह्या शह के "मैं ली गुम्या तुज संग,
तू क्या मंगती है सो मेरे पास मंग।"

कही खुश हो हंस कर के हंसमुक परी,
"तेरे हात की शाह अंगुश्तरी।"

अंगूठी निशाँ उस दिए शाह ने,
रखी जीव कह उस कूँ उस माह ने।

जो शह कह के "दे तूँ बी कुच मुंज निशान,
के तुज याद करता अछूँ ऐ सुजान।

जेता खुश अथा आशनाई ते मैं,
उता नाखुश हूँ इस जुदाई ते मैं।

कहाँ ते के यो आशनाई हुई,
के इस धात आखर जुदाई हुई।

रख्या नईं है किस यक जिन्स आसमाँ,
के अव्वल बहार होर आख़िर खि़ज़ाँ।

मिसल जग में मशहूर यो जम अहै,
के हरेक ख़ुशी के पछें ग़म अहै।

बिछोहा अछे जाँ अछे मिल वो यार,
के मस्ती जहाँ है वहाँ है खुमार।

यकस का यकस कूँ जो लाग्या परान,
तो अछता यकस का यकस कन निशान।

यकस की निशानी कूँ यक देक कर,
करे याद यकस कूँ यक ऐ सुन्दर।

निशानी की तू कुच हाज़त नहीं,
वले रस्म ज़ाहर नहीं यूँ कहीं।

न बिसरे कधीं यार के तईं वो यार,
मुहब्बत अछे जिस कने यादगार।

पिरत का रविश तो अहै इस वज़ा,
तू देती है या नईं देती क्या रज़ा।

जुदाई अज़ महताब

कही शह मेरा जियू तेरा अहै,
के जीव ते पियारा तूँ मेरा अहै।

सकी दी सका आपने हात का,
के तासीर था इस में ली धात का।

जो सिक्का रखे वो अपस पास जम,
न देखे कधीं दुख दरद होर ग़म।

सदा मुल्क होर माल सूँ शाद अछै,
दुनियाँ के बलायाँ ते आज़ाद अछै।

जो देखी के शह है बिथर[1] लश्करी,
तुरंग बाद पा[2] पेश कश की परी।

सूरज ज्यूँ झमकता अथा सुम[3] उसे,
के किरनाँ से बालाँ के थी दुम उसे।

हरेक नाल उसका सो ज्यूँ परस था,
के अपी सुलक्खन तुरंग सरस था।

सो उस अस्व[4] रहवाल खुश चाल कूँ,
सितारे पिरोए थे हर बाल कूँ।

शहंशाह का दिल मोत जमा था,
के वे बाट में रात कूँ शमा था।

तुरंग खूब खुश शक्ल वो असल है,
के हैदर के दुलदुल[5] केरा नसल है।

किस्सा यूँ हुआ जो रज़ा शाह मंग,
बिदा उस परी सूँ किए छोड़ संग।

---

१ बड़ा २ हवा की तरह तेज ३ उदाहरण ४ घोड़ा, ५ हजरत अली का घोड़ा।

रुबाई

दुनिया के सो लोगाँ में वफा दिसता नईं,
धुंड देखी जिता बाज जफ़ा दिसता नईं।

बे महर ज़नी[1] आदम है इस सूँ सकी,
दिल बाँदने में कुच नफ़ा दिसता नईं।

---
1 जाति।

खाना शुदन शाह ब सूबे मुशतरी

हुए लोग फिर मुस्तैद ठार-ठार,
सो यक ठार मिल आए सब बाँद भार।

के शह जाते इस मह की यारी के तईं,
तुरंग बाद पा ल्याईं सारी के तईं।

हुआ उस तुरंग के उपर शह सवार,
के शह फूल होर खंग बाद बहार।

दिसे शाह यूँ बाद पा[1] के उपर,
मगर हंस चड्या है हुमा[2] के उपर।

चले शह बंगाले कधन चाव सूँ,
सो ख़ुशहाल हँसते भो भाव सूँ।

लिए खान मिर्रीख़[3] कों शह संगात,
के आशिक़ अथे वो दोनों एक धात।

दोनो इश्क़ की बाट जाते अथे,
यकसका सो वक्त यक गुमाते अथे।

जो उस शहर के शाह नज़दीक आय,
ख़बर इस अतारद कने यूँ बताय।

के आया हूँ मैं अपने लोगाँ सूँ याँ,
मुँजे तूँ कह्या था सो वो क़ौल काँ।

गया सब फ़िराक़ अब के आया विसाल,
बुला बेग इस इन कूँ तूँ मुँज अताल।

जो शातीर[4] शह का दिया यो ख़बर,
अतारद सरासर सुन्या कान धर।

---

१ तेज़ (घोड़े पर) २ एक पक्षी; जिस पर इस पक्षी की छाया पड़ती है वह सौभाग्यशाली और धनी हो जाता है ३ मंगल नक्षत्र, यहाँ नाम है ४ संवाद दाता।

गया दौड़ता मुश्तरी शाह कन,
के "आया है याँ अब कुतुबशाह सजन।

तेरा मक़सद ऐ नार हासिल हुआ,
पियारा पिया तुज सूँ वासिल हुआ।

के मिन्नत तूँ करती थी जिस काम कूँ,
हुआ है वो सब काम अब जान तूँ।

नको बोल रुक मुंज उपर औ सुघर,
कह्या हूँ तुजे मैं सभी खोल कर।"

कही नार उस कूँ "के शह काँ अहै,
निशानी मुंजे दे तूँ वो जाँ अहै।

के मैं सर सूँ चल वाँ तलक जाऊँगी,
अपी मैं यहाँ शाह कूँ ल्याऊँगी।

आवर्दन[1] मुश्तरी मुहम्मद कुली राबा महल[2]

सुलक्खन सुघड़ चंचल अवतार नार,
सँवारी महल आपना ठार-ठार ।

उतम ज़ात पद्मन पर्यां हूर सॉं,
चंचल अचपल्याँ शोख़ मनहर सकियाँ ।

सुराही प्याले दे हाताँ में मस्त,
खडियाँ की करन चाकरी धन दुरस्त ।

सरासर घर अपना सकी सुन्दरी,
भोंत धात दे ज़ेब जन्नत करी ।

सँवारी सुधन पंत भू धात सूँ,
जो ज़र बफ़्त[3] अतलस[4] व क़िमख़ाब[5] सूँ ।

चड़ावा सुरग[6] पर किया वो महल,
के हूराँ सो वाँ मोहनियाँ है चंचल ।

सो कूच्याँ[7] मने शहर के धन दो धीर,
बिछाइ मश्क जाफ़राँ[8] होर अबीर ।

सिंगारी नगर यूँ सुन्दर गुन भरी,
के असमान ते ख़ूब हुई धर तरी ।

छजे होर महल अँगन होर सब नगर,
हरेक ठार वो नार सिंगार कर ।

संगात अपने अपनियाँ ले महरम[9] सकियाँ,
के दम नमने थियाँ सो वो हमदम सकियाँ ।

सहेलियाँ सूँ सहती अथी यूँ सुधन,
के ज्यूँ सरो अछे एक बिच फूल बन ।

---

१ लाना २ मुश्तरी का मुहम्मद कुली को राबा महल में लाना ३, ४, ५ वस्त्रों के प्रकार ६ स्वर्ग ७ गलियाँ ८ केसर ९ भावों को जाननेवाला ।

सखियाँ सब सुधन सात हम दस्त थियाँ,
यकत ते सो यक उस वक्त मस्त थियाँ।

मंगाई तुरंग नाँवँ शबरंग उस,
के भाया अथा उसके तईं संग उस।

तुरंग तेज़ शबरंग कूँ ली चाव है,
के मा आग होर बाप सो बाव है।

हुई सार शबरंग तुरंग पर वों नार,
धुवे में अछें ज्यूँ झमकता अँगार।

पदम जगमगे जोत सूँ नाग पर,
के ताऊस बैठ्या मगर काग पर।

सो शबरंग तुरंग पर अछे नार ज्यूँ,
के मशाल दिपे रात अँधारी में ज्यूँ।

कुतुब सूँ मिलन मुश्तरी धन चली,
अतारद चितारे कूँ संगात ली।

येता शाह सूँ मिलने कूँ खुशहाल थी,
के खुश्याँ सूँ अपस में माती न थी।

जो शह कूँ खबर हुई के आती है धन,
सुलक्खन सखी छन्द भरी मन हरन।

इदर ते शहंशा उधर ते वो नार,
दोनों साद[1] वक्त आ मिले एक ठार।

गले लाय शह यूँ सुधन कूँ चिकल[2],
के न्हाट्या बिरह जल हो जग पंत निकल।

मुहम्मद कुतुब शाह होर वो सुन्दर,
हुए खुश एकस कूँ यक देख कर।

---

१ शुभ २ दबा कर।

सजन के उपर एक मन सूँ वो नार,
लाल हीरे मानिक मोती निसार।

जो शह पर रतन धन लगी वारने,
सो कुतसियाँ[1] लगे बहिश्त सिंगारने।

मिला हात में हात धन कन गंभीर,
चली शाह कूँ ले कर अपने मंधीर।

नवल शाह कूँ अपने घर में जो ल्याई,
तमाशा महल का चंचल सब दिखाई।

ग़ज़ल

प्यारा सेज पर आया प्यारा जीव ते प्यारा हो,
विरह मुंज दिल में ते निकल्या सो जीव उसास बारा हो।

बिरह की आग ते तन पर हरेक याक़ूत का दाना,
लग्या होले[2] ते थण्डा मुँज रह्या था जो अंगारा हो।

सकी मुख शह समद म्याने जो मनके में तरे थे,
अलक गल हात में ल कर परता तल इस में चारा हो।

अँख्याँ दो होर पूलकाँ तो च दुश्मनाँ हैं सब,
इधर ऐसी[3] असर शह का वहाँ अचता हमारा हो।

सूरज ख़ुश रंग सीस बी है किरन ज्यूँ मो क़लम ले कर,
सूरत शह की लिखन आया अतारद अब चितारा हो।

भवाँ दो ज्यूँ रहाँ होर अलक की कुंडलाँ जुज़माँ[4],
तिलक आयत है तिल मुतलक दिसे जय्यद[5] प्यारा हो।

सितारा बख़्त का मारा सूरज के बुर्ज़ में आया,
के झमक्या आज मेरे घर कुतुबशाह चाँद सारा हो।

---

१ फरिश्ते हूर आदि २ ओला ३ एक पैग़म्बर, जिन्हें रुहे अल्ला भी कहते हैं ४ मज़बूत
५ नेक, मनमोहक।

मुलाक़ात आशिक़ व माशूक़

चंचल कुतुब शह होर अचपल सुंधर,
दोनों बैठे मिल कर सो यक तख़्त पर।

रुकन[1] चार पाए हैं तख़्त आसमान,
के चन्द मुश्तरी है कुतुबशह सो भान।

यकस का लगे पूछने एक हाल,
यकस कूँ दिए यक जवाब होर सवाल।

सो बाताँ अवल कियाँ सभीं बोल कर,
कहे हाल अपना दोनो खोल कर।

पिरत काज की कार साज़ी किए,
अपस में अपै हात बाज़ी किए।

सुराही नुक़ल होर प्याला मँगाय,
अपी साक़ी हो शह कूँ धन मय पिलाय।

शराब उस मोत तुन्द होर तेज़ था,
अजब आब वो आतिश आमेज़[2] था।

फरिश्ताँ अगर आए आकास ते,
पड़े भुईं उपर मस्त हो बास ते।

जो चक बुन्द पीवे कोइ तो सीने कूँ लग,
उठे आग तलव्याँ ले तारूख़ तलग।

जो शह ताईं धन लाईं मद लाल कर,
के पानी करी आग कूँ गाल कर।

जो क़तरा सटे आग में एक कोय,
तो सिर पाँव लग आग जल राक होय।

---

१ स्तम्भ २ मिलना।

खसालत अजब गर्म धरते हैं शह,
के ऐसा शराब हज़म करते हैं शह।

के मैखार[1] पुखता है शह खाम नईं,
मद ऐसा पिने दुसरे का काम नईं।

सिफ्त यो जो शह बेखबर नईं होता,
जेता पीते बी कुच असर नईं होता।

दुरुस्त अछ हरेक बात गुफ्तार में,
खता खाए ना कार होर बार में।

प्यारी वो हो एक यूँ पीव सूँ,
के ज्यूँ दूद मिल कर अछे घीव[2] सूँ।

यक आरुस (?) होर एक सो शो अहै,
के धन शीरीं होर शाह खुसरो अहैं।

कुतुब शह सुधन यूँ वो ज़ेबा अछे,
के युसुफ़ सूँ मिल ज्यूँ जुलेखा अछे।

दिसे यूँ अधर बिच दसन झमकने,
के गौहर है सुन्ने के डुक्के मने।

सुधन के दसन समजो होने कूं आए,
खिज़ल हो रतन पानी मूँ का गंवाए।

अंचल स्याम तल यूँ झमकते गुहर,
के शबरात है आज धन के उपर।

दिसें तन रतन धन के मुख नूर अंगे,
के रोशन किए हैं दीवे सूर अंगे।

सुधन के दो कुच पा गुहर छाए हैं,
के पहराँ पे तारे उपर आए हैं।

---

१ शराबी २ घी।

सुधन नाक मिल यूँ है मुकडे के संग,
के पकड़्या है मूँ में बिचू कूँ भुवंग।

सो मुकडे पै याकूत जग देक के,
के अक़रब[1] केरे बुर्ज़ मिर्रीख़[2] है।

दिसें मांग मोत्याँ की बिच सीर में,
के दिसते हैं तारे मगर नीर में।

चंचल नैन यो धन के नईं ठारते,
के शातीर शह के तुलंग मारते।

सितारे महेंदी के हाताँ मने,
के गुल लाल रहे झड़के पाताँ मने।

येता कुछ धन शक धरती सुन्दर,
के बाताँ निकलत्याँ हैं टुकडे लेकर।

बिखर रे हैं कुन्तल पेशानी उपर,
के बादल पड़े टूट पानी उपर।

दिसें लाल लालक सूँधन की अँख्याँ,
के सीप्याँ अहें जानो शिंगारफ कियाँ।

अलक मिल धन गाल मक़बूल सूँ
के या नाग लुब्दया अहै फूल सूँ।

धड़ी सूँ दिसे यूँ दसन बात में,
के बिजलियाँ पडियाँ जाके ज़ल्मात में।

समद ते सभीं रूप रंग जल है ज्यूँ,
कँवल मुख की गरदन सो दंडल है ज्यूँ।

अँखियाँ पर भुँवाँ छन्द सूँ छाए हैं,
के तुरकाँ सिराँ पर तुर्रे लाए हैं।

---

१ वृश्चिक नक्षत्र २ एक ग्रह।

इधर हार फल फांक की भार वो, (?)
के नाज़ुक मुती[1] थी अहै नार वो।

अंगूठी में मावे कमर नार की,
नहीं कई दिसे जग में इस सार की।

के जिस का जो रोमावली नाँवँ है,
सुधन सिर की चोटी की वो छाँवँ है।

रही चोटी यूँ पीट पर छब सूँ आ,
पटी पर अछे ज्यूँ अलिफ सुल्स[2] का।

जवाहर जो पैने था धन तन मने,
जो अक्स उस सितारे हुए घन मने।

मुहब्बत सूँ शह मस्त हो दीदार के,
अधर चुँकते थे तिल तिल उस नार के।

सँपड़ कर सकी शाह की बात में,
अँपड़ देती थी जोबनाँ हात में।

नहवाँ लाते थे शह उसे ठार ठार,
उळस पड़ती थी हँस वो हँसमुख नार।

कधें गुड़[3] लेवे शाह वो माह कूँ
कधें माह वो गुड़ लेवे शाह कूँ।

मिठाई सूँ लब चार यूँ मिल अथे,
के हरगिज़ यकायक छुटते न थे।

सो शह धन ते खुशहाल उस वक्त थे,
के जोबन वो अलमास[4] थे सखत थे।

अपस में अपै बोसा कारी किए,
दोनों सूँ, सपत घाल यारी किए।

---

१ भोली २ उर्दू की एक प्रकार की लिखावट ३ चुम्बन ४ एक रत्न।

के दो में ते तिसरे को ना ठार होय,
जो तिसरा वहाँ जाये तो ख़ार होय।

अजब कुछ ख़ुशी होर अनन्द हज़[1] है वाँ,
सो आशिक़ व माशूक़ मिलते हैं जाँ।

हुए शाह जब मस्त अपी होर धन
किए मन उसे कुच का कुछ करन।

दोनों सर ख़ुश हो कर हुए बेख़बर,
उलू की ख़बर इस वज़ा सून कर।

अतारद मना आ किया शाह कूँ,
भोत धात सूँ पन्द[2] दिया शाह कूँ।

के "शह इश्क़ बाज़ी तूँ कर इस वसूल,
के तुज ते ख़ुदा ख़ुश अछे होर रसूल।

तेरा माल है तूँ उतावला न कर,
भुटे इतने कूँ अपसे बावल न कर।

लेजा उस कूँ फुसला के तूँ अपने घर,
बुला क़ाज़ी कूँ होर वहाँ अक़्द[3] कर।

जो टुक ख़ुश लगेगा तेरा घर उसे,
पछें क्या तूँ मँगता है सो कर उसे।"

कहे शह अतारद कूँ "शाबाश तुज,
के इस मस्ती में तूँ दिया पंद मुंज§।"

जो समजा के शह कूँ कह्या धात धात,
सुन्या शाह आख़िर अतारद की बात।

---

१ स्वाद २ नसीहत ३ निश्चय।
§ पाठान्तर है :—"तूँ दिया याद मुंज"

ग़ज़ल

तुज मुख के दरस का यो सूरज सो दरसनी है,
तुज नूर झमकने ते सब जग में रोशनी है।

ज़र तार तार के रूच पर गाल पर सुहाते,
या चांद के किनारे ख़ुश रंग चंदनी है।

दिल आशिक़ाँ के तिलतिल की की बारजत्ती (?) नई
क्या शोख़ चुलबली तूँ ग़म्ज्याँ[१] भरीं हती है।

काजल कज़ल सो भर के पलकाँ सो सिहर मंतर,
ग़मज़ा सो नैन तेरा सो का सो तिस अनी है।

बिरहे के दुख कटक में यूँ नेट कर रह्या मैं,
तू अपने आशिक़ाँ में सुघन मुंजे गिनी है।

---

१ नख़रे।

गुफ्तन मिरींख़ खाँ हाल ख़ुद रा[1] पेश मुहम्मद क़ुली[2]

शहंशा कूँ बोल्या वो मिरींख़ ख़ान,
के "तूँ जीव जब लग है चन्द चर्ख़ भान।

तेरा यार परसन हुआ शाह तुझ,
के तूँ सूर है होर मिल्या माह तुझ।

सदा मिल अछ इस धन सूँ दिनरात तूँ,
सदा ऐश कर शाह इस धात तूँ।

तुजे सुक आनन्द दायम अछो,
तेरा राज दुनिया में क़ायम अछो।

वले कुछ मेरे हाल पर रहम कर,
के तेरा हूँ मैं तूँ नको मुंज बिसर।

ग़ुलाम हो के अचता हूँ मैं तेरे पास,
किया हूँ भोत तेरी उमीद आस।

जो ल्याया है सात अपने इस ठार मुंझ,
करम कर मिला तूँ मेरा यार मुंझ।

दो बिछड़े जो याराँ मिले एक ठार,
मिलनहार[3] कूँ शह सवाब है अपार।

रुबाई

परदेसी हूँ परदेस में है ठार मुंज,
परदेसी हो रहना अहै ना चार मुंजे।

ताक़त अरे सब्र तूँ भी कुछ उपर्या नईं,
अब को मिलेगा कोव मेरा यार मुंजे।

---

१ को २ मिरींख़ का अपना हाल कहना, और मुहम्मद कुली के सामने अपने को पेश करना ३ मिलानेवाले को।

पड्या यो रुबाई भोत सोज़ सूँ,
कह्या "रूसो शमा दिल अफ़रोज़ सूँ।

के शाहा में सब तूँ शहंशाह है,
मेरे हाल ते शह तूँ आगाह है।

भलाई ले निपट इश्क की बात सूँ",
लग्या मिन्नताँ करने भो धात सूँ।

कहे शह के "नज़दीक है काम अताल,
के तुज सूँ मिले धन चन्दर जग उजाल।

मुंजे है तेरा हाल मालूम सब,
जो मिन्नत करे तूँ तो नई कुछ अजब।

के जग में चली है यो बात हर कहीं,
गर्ज़वन्द कूँ अक्ल अछती नहीं।

उतावल तूँ करता अहै क्या सबब,
सबूरी सेती काम होता है सब।

हर यक रंज पिछें राहत है सच तूँ जान,
हर यक दुख पछें सुख है मिरीख खान!

चमन म्थाने आ कर चुन्या फूल किन,
सो कांटे केरा ज़खम टुक खाए बिन।

बहार आख़िर है होर अवल सो दे,
जो ग़म देखे शादी उस अलबत्ता है।

सबूरी ते ख़ूबी है आख़िर न डर,
के लोगाँ कते हैं सबूरी सफ़र।

गुफ्तन अज़ मिरींख़ खाँ हाल कुतुबशाह पेश मुश्तरी[1]

कुतुब मुश्तरी कूँ कह्या सर बसर,
सो मिरींख़ का हाल सब खोल कर।

"मैं आशिक़ हूँ ज्यूँ तुझ नादान का,
अहै त्यूँ यो आशिक़ तेरी भान का।

तूँ ज़ुहरा सूँ कर राजवट[2] मिल कर,
मुराद इस बिचारे की हासील कर।

के आशिक़ का क़दर जाने है तूँ,
दर्द इश्क़ का सब पछाने है तूँ।

सुलक्खन सपूत है असद खान का,
यो मिरींख़ गुनवन्त भो मान का।

जो ज़ुहरा कूँ आशिक़ हो आता अथा,
सूली कुच दुंबाल ल्याता अथा।

क़ज़ा[3] आ नंगा कर उसे लुच[4] किया,
यो कुछ था उसे कुच का कुच किया।

पड़्या था पिरत पंत के घात में,
रह्या था सँपड़ देव के हात में।

इसे बाट में आते पाया हूँ मैं,
वहाँ ते छुड़ायाँ कूँ लाया हूँ मैं।

मेरे सात यक दिल सूँ आया है यो,
भोत आस उम्मीद लाया है यो।"

कही शाह कूँ माह सी वो सुन्दर,
के "यो काम है सहल कुछ ग़म न कर।

---

१ कुतुबशाह का मिरींख़ खाँ का हाल मुश्तरी को सुनाना २ शासन ३ हुकुम से ४ नंगा किया।

जो अव्वल ते मालूम अचता यो काम,
तो अब लग यो सब काम होता तमाम !

येती मेरी मिन्नत की[1] करता है तूँ ?
यदि देती हूँ भ्याव[2] कर दोनो कूँ।

जुकुच तूँ कहेगा सो कह मुंज कने,
के हाजत नहीं कुछ इसे पूछने।

अहै हुक्म इस का मेरे हात में,
के चलती है ज़ुहरा मेरी बात में।

यो काम इस सबब शाह करती जो हूँ,
के मंगता है मिर्रीख़ कूँ भोत तूँ।

---

१ क्यों २ विवाह।

मशवरत करदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह बा मुश्तरी[1]

शहंश कहे "ऐ सुलक्खन सुंधर,
चल आ जाएँ मिल कर दक्खन के इधर।

दक्खन सा नहीं ठार संसार में,
पंच फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।

दक्खन है नगीना अंगूठी है जग,
अंगूठी कूँ हुरमत[2] नगीना है लग।

दक्खन मुल्क कूँ धन अजब साज है,
के सब मुल्क सर होर दक्खन ताज है।

दक्खन कूँ जो देखेगी ऐ नार तूँ,
न करसी कधीं याद बंगाले कूँ।

दक्खन मुल्क मोतींच खासा अहै,
तिलंगाना इस का ख़ुलासा अहै।

कता हूँ होर यक बात भी मैं तुजे,
के वाजब अहै बोलना वो मुंजे।

नको जान इस कूँ हँसा खेल तूँ,
मेरी बात सुन धन नको ठेल तूँ।

के मिर्रीख कूँ अब बड़ाई देवें,
सो इस शहर की पादशाही देवें।

पछे भ्याव ज़ुहरा सूँ इसका करें,
दोनों कूँ मिलायाँ अनन्द सूँ धरें।

के मिर्रीख़ हमना ते खुशहाल अछे,
न यूँ त्यूँ के दिल जाँ बीं ख़ुशहाल अछे।

अगर आने मंगती है तूँ मेरे सात;
तो यो शहर सट होर सुन मेरी बात।

---

१ मुश्तरी से, मुहम्मद कुली का परामर्श करना २ प्रतिष्ठा।

यूँ क्या है मुल्क जो तुजे भावता,
यूँ क्या है जो खातिर तेरी आवता।

तुजे मैं वहाँ देवूँगा हाँ ऐ नार, *
सो उस धात के शहराँ† हज़ाराँ हज़ार।

दखन मुल्क वो कुछ अजब ठाँवँ है,
दखन में सो ऐसा हर यक गाँवँ है।

कही शाह खूबी तुमारी खुशी,
तुमारी खुशी सो हमारी खुशी।

तूँ मुँज सात इस धात चले न कर,
मुल्क वारूँ लक तेरी यक बात पर।

केता माल होर मुल्क दिखलाएगा,
मुल्क माल ते क्या मुँजे आएगा।

ग़र्ज़ है मेरा तुज सूँ ऐ शाह फहीम[१],
न कर ऐसी बाताँ सूँ तूँ दिल दोनीम[२]।

तुहीं मुँज मुल्क होर तुहीं माल है,
तुहीं मुँज लालन तुहीं लाल है।

शहाँ तबा नाजुक धरते अहैं,
के माशूक़ पर नाज़ करते अहैं।

मैं राज़ी हूँ इस काम कूँ जीव सूँ,
जुकुंच करते मँगता सो कर शाह तूँ।

के फाज़िल तुज ऐसा कहीं कोई नईं,
तेरी बात ते नईं हूँ खेरीर[*] नईं।

---

१ जानकारी रखनेवाल। २ टुकड़े।

* पाठान्तर है:—"जकुंच तूँ मंगे वाँ सो देवूँगा ऐ नार।"

† "सो उस धात शहराँ" ... ...

दादन मुहम्मद कुली कुतुबशाह मिरींख खाँ रा पादशाही बंगाला[1]

खबर लें अंबर पर के अख़्तर सते,
बड़ी साद शह देक महतर सते।

ख़ुदा के कनें ते मदद मंग लिए,
वज़ीराँ कूँ सब वाँ के हाज़िर किए।

सो मिरींख खाँ कूँ बुला भेज कर,
दिए शाही बिसला उसे तख़्त पर।

भितर भार हशम[2] लोग राज़ी हो आए,
दूरा ही बंगाले में इसकी फिराए।

पड्या पाँव वो शाह के आय कर,
हँसे ख़ुश हो इस कूँ गले लाय कर।

शहानी किए यो बड़ा काम शाह,
दिए इस कूँ मिरींख शह नाम शाह।

बंगला सो रहने उसे घर हुआ,
मुल्क सब मुक़र्रर उसी पर हुआ।

बजाँ ज़ुहरा के ताईं लक चाव कर,
दिए शाह मिरींख सूँ ब्याव कर।

हुआ ज़ुहरा कूँ देक मिरींख शाद,
ख़ुदा नें दिया उस कूँ उसका मुराद।

सो हुक्म इस मुल्क का सो धरने लग्या,
सुबह उठ दुआ शह कूँ करने लग्या।

---

१ मिरींख खाँ को मुहम्मद कुली का, बंगाल का शासन देना २ नौकर चाकर।

रसीदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह बा मुश्तरी पेश मादर व पिदर[1]

कुतुबशाह होर मुश्तरी शाह मिल,
दखन कूँ सो जाते हुए एक दिल।

मंगे उन दोनों इन दोनो कन विदा,
किए उन दोनों इन दोनों कूँ दुआ।

के मिर्रीख जुहरा जो अँपड़ाने आय,
मना शह किए होर उनों कूँ मनाय।

तुमीं दोनों याँ राज करते अछो,
हमीं जाते हैं महर धरते अछो।

के मुश्ताक़ होकर अछेंगे हमीं,
खबर भेजते जाव अपनी तुमीं।

जुकुच काम मक़सूद अछें होर बात,
सो लिख भेज देव आते जाते के हात।

कहे "तुज किए अब जो आधार हमीं,
ज़रूरत कूँ रहते हैं इस ठार हमीं।

रज़ा दे के तुज सात हमीं आयँगे,
बड़ा मरतबा इसते भी पायँगे।

सुबा उट शाह देखना तुज मुख *
नहीं कुच हमना भी इस ते बी सुख।

दीना होर दौलत[2] यो क्या काम आय,
जो साहब तुज ऐसा हमना छोड़ जाय।

खड़े रहे वो सब मिलके यक ठार पर,
अपस में अपै बात गुफ्तार कर।

---

१ माता पिता द्वारा प्रमत्त मुश्तरी को कुली कुतुबशाह का प्राप्त करना २ दीन-दौलत।

* पाठान्तर :—"सुबा कठ शाह का जो आ देखें सुख।"

दिलासा उनो दोनों कूँ ली दिऐ,
सो रुख शाह फर्खं दक्खन घर किए।

दिए खीमे[1] सहरा में शह कूच कर,
के फाडाँ अछें थीर जियूँ धर पर।

ज़मीं के उपर डेरे शह फिर दिए,
के दरया में झाज़ाँ कूँ लंगर दिए।

वहाँ ते सो ज्यूँ होर दिल शाद कर,
चले बस्त होर भाव[2] सब लाद कर।

थण्डी ठार शह देक उतरते अथे,
अनन्द ऐश इस धन सूँ करते अथे।

यकस कूँ लगा एक छाती सूँ दाठ,
दोनो ऐश करते अथे बाट-बाट।

रल्याँ सूँ दोनो मिल के रलते थे वो,
इसी धात सब बाट चलते थे वो।

बिरह का गिरह सब गँवा विस्ल पाय,
दखन की सो सरहद में शह बेग आय।

जो वैसे में माँ बाप पाये खबर,
के आता है फ़रज़न्द दलबन्द इधर।

भोत दिन पछें खुश हो कर आज कूँ,
अगे हो के ल्याने चले राज कूँ।

के शह भी सलामत ते फिर आए हैं,
संगात अपने उस नार कूँ लाए हैं।

जो शह दूर ते देखे मा बाप कूँ,
नज़ीक आए मिल मुश्तरी नार सूँ।

---

१ डेरे २ चीज, वस्तु।

पड़े पाँवँ मा बाप के शह नवल,
के है बहिश्त मा बाप के पाँवँ तल।

वो मा बाप कूँ शह गले ला लिए,
जो निर्जीव हुए थे सो फिर जीव दिए।

खिले फूल उम्मीद होर आस के,
पड़ी पाँव बहू ससर होर सास के।

मिले आज यक ठार बिछड़े सगे,
अपस में अपै पाँव पड़ने लगे।

गौहर बारे चौधेर ते शह उपर,
के मोतियाँ केरा मेहू पड्या धरत पर।

तमाशा देखन आए चौंफेर सब,
ग़नी हो रह्या आज कूँ शहर सब।

के सरहद पकड़ शाह के घर तलक,
सुन्ना गोद भर-भर लिया दान जग।

बिखेरे कई आज चौंधेर गुहर,
के निकले रतन भुई में के फूट कर।

दिए दान यूँ जग कूँ शह सीम[1] ज़र[2],
के रखने कूँ कईं ठार नईं धरत पर।

येते कुछ गुहर शाह बख़शीश करे,
के बादल उचाले समद सत भरे ¶।

"तेरा दान मशहूर हुआ शह यता,
के परवा सख्या समद सा सान्त का $।

---

१ चाँदी २ सोना।

पाठान्तर है :—¶ "न देख ठार खुशकी समद जा भरे"
$ "के आवे क़लम में न कहने किता।"

न देखा किने दान इस धात का,
के झड़ लाइ सुन्ने की बरसाँत का।"

वो मा बाप दोनो पकड़ बर मने,
ले कर आए इस शाह कूँ घर मने।

नगर में जा आया कुतुबशह नवल,
लगे बजने चौंधेर खुशियाँ के तबल।

शहर में सौ ईद आज लोगाँ किए,
घरे घर अनन्द काज लोगाँ किए।

लगे हाल अहवाल सब पूछने,
जो शह देखे थे सो कहे उन कने।

सो मा बाप शह धन हो कर एक दिल,
यो चारो रहे सुख सूँ यक ठार मिल।

दादन इब्राहीम कुतुबशाह बादशाही खुद ब मुहम्मद कुली कुतुबशाह[1]

ब्राहीम कुतुबशाह पर दुख भंजन,
के ल्याया जिने ज़ब्त में सब दखन।

किया शाह वो पादशाही अजब,
मुसलमाँ हुआ यो तेलंगाना सब।

सख़ावत में धन दान हातिम सुजान,
अदल में सो है ज्यूँ के नौ शेर वाँ।

सुर्या पान मावे रुमाल होर छतर,
तख़्त ताज सब साज मुस्तैद कर।

तख़्त जियू गगन गुन सूँ सम्पूर है,
के झिल्याँ सूँ करता छतर सूर है। §

देख्या फ़ाल मसहफ़[2] की आयात में,
पिनाया सिका शाह के हात में।

सँवार्या मोत छत्र सूँ शह सब शहर,
नजूम्याँ कूँ साअत साद पूछ कर।

दिया शाही अपनी कुतुबशाह कूँ,
के "बूड़ा हुआ मैं कर अब राज तूँ।

कुतुबशह कूँ शाही मुक़र्रर हुई,
के बाप होर बेटे में नहें कुछ दुई।

किते पादशाही किया नई है यूँ,
के करता अहै अब कुतुबशाह ज्यूँ।

बस्या शह के इन्साफ़ ते यूँ दखन,
के बसता है पानी ते ज्यूँ फूल बन।

---

१ इब्राहीम कुतुबशाह का अपनी बादशाही मुहम्मद कुली कुतुबशाह को देना २ कुरान। पाठान्तर है :—§ झलम बा जवाहर छतर सूर है।"

सो यूँ अदल अब शाह करता अहै,
के कोले[1] कूँ देख बाग डरता अहै।

जो शाहाँ अपस कूँ खोते अहैं,
खड़े खान सब डरते खाते अहैं।

शही ज्यूँ किए शाहे आली जनाब,
न दारा किया वों न अफ़रासियाब।

जो अचते तो अचते तेरे दार जम,
सिकन्दर फ़रींदू ज़हाक जिस्म।

शहंशाह ग़ाज़ी कुतुबशाह तूँ,
शहाँ सब सितारे के है माह तूँ।

अजब ताबिश है तुज मुक नूर कूँ,
के ताक़त नहीं देखने सूर कूँ।

खरक[2] बीच तुज म्यान मावे सहाब,
तुरंग आसमान होर नेज़ा[3] शहाब।

बुजे आग जलती तेरे हाक ते,
जंगल पकड़े बागाँ तेरी धाक ते।

तेरा अदल ऐसा है ऐ जग अधार,
के आग होर पानी अछे एक ठार।

तेरा अदल इन्साफ़ है जग उपर,
अगन नीर नित मिल रहे मद भितर।

मुहम्मद कुतुबशाह तुज नाँवँ है,
हुमा सो तेरे पाँवँ का छाँव है।

तूँ दानी तूँ ज्ञानी तूँ दातार है,
तूँ फ़ाज़िल तूँ कामिल तूँ औतार है।

---

१ गीदड़ २ तलवार ३ भाला।

तूँ ऐसा सख़ी है के तुज धर्म ते, †
दरिया ल्याय कफ़ मूँ उपर शर्म ते।

तूँ दरकश है हर एक सरकश उपर,
के ग़ालिब है ज्यूँ आग आतिश उपर।

तूँ ज्यूँ नूह[१] पाताल जल खा रहे,
धरत भाज़ अम्बर सो औज़ार है।

पौन[२] डोल अमोलक है लक साज़ का (?)
भौन लंगर इस बेब्दल भाज़ का।

जो भमकाय शह तूँ गुहर लाज ते,
अजब क्या जो समदर सुके लाज ते।

कहे हुदहुदाँ जा सुलेमान कूँ,
के शहदार आवे मंगन दान कूँ।

के शहदार ते गर जुकुछ दान पाय,
जनम पेट अपने हश्म सात खाय।

दिरम[३] सूर खोटा चले न कहीं,
के सिक्का कुतुबशाह का उस नहीं।

चतुर शाह गुनवन्त ज्ञानी है तूँ,
के हिकमत में लुक़मान सानी है तूँ।

अंगूठी सुलेमाँ की तुझ हात में,
के तासीर ईसा की तुझ बात में।

हर यक इल्म है शह तूँ माहर है सब,
छुपया राज़ तुज अंगे ज़ाहर है सब।

---

१ एक पौराणिक प्राणी २ हवा ३ तत्कालीन मुद्रा।
पाठान्तर है :—† तुज ऐसा सखी कोन है धर्म ते।"

बुरदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह विक़ारत मुश्तरी[1]

रतन ला संवारे मुकल महल,
सो मिरीख़[2] याकूत नीलम जुहल[3]।

अगन आसमाँ होर बादल सो फ़र्श,
के मँडवा सो कुर्सी छज्जा ज्यूँ है अर्श।

मुरस्सा[4] चड़्या तख़्त वाँ ल्याय कर,
सो उस तख़्त पर शह कूँ बिसलाय कर।

मिले दोस्ताँ आज चौंधेर ते,
अनन्द ऐश करते हैं भई सेर ते।

सो जलवा लगे देने सब शाह कूँ,
सुलक्खन सकी मुश्तरी माह सूँ।

ज़रीना किए सूर का क़रस[5] तोड़,
पिनाए रतन घन के तबले कूँ फोड़।

मशाला हो हूर आए जन्नत ते भुल,
के परदा है अस्मान तारे सो फल।

सो अस्मान कई दर सूँ यूँ जगमगे,
के फूलाँ के मँड़व्याँ[6] कूँ तारे लगे।

मिले कुतुब होर मुश्तरी एक ठार,
हुआ आज जग में अनन्द बेशुमार।

सो जिब्रैल क़ाज़ी हो वाँ आय कर,
फ़रिश्त्याँ कूँ महमान सब ल्याय कर।

बन्द्या मेहर उस नार नादान का,
सो हासिल जमीन होर अस्मान का।

---

१ कुमारी मुश्तरी को मुहम्मद कुली कुतुबशाह का ले जाना २ एक ग्रह, नक्षत्र ३ एक ग्रह ४ जड़ाऊ ५ मंडल ६ मंडप।

ज़मीं थी सो हुई आज ज्यूँ आसमाँ,
के है कुतुब होर मुश्तरी का क़िराँ।

अपस दिल कूँ सब दोस्त शादी दिए,
सो शह कूँ मुबारकबादी दिए।

सो शर शोर ग़ुल ग़ाल हुआ सब तमाम,
के जलवे केरा काम हुआ सब तमाम।

गए शाह आरूस[1] ख़िलवत मने,
लगे दोनो ऐश होर इशरत मने।

सो धन कूँ गले शाह लाने लगे,
यकस सूँ सो यक लट पटाने लगे।

घुँघट खोल बोसे लिए ज़ौक़[2] सूँ,
सो चोली के बन्द तोड़ सब सटे शौक़ सूँ।

कधें हात मूँ पर धरे लाज ते,
कधें कइ न कर सूँ इश्क़ आज ते।

कधें कइ नको आज छोड़ो सुबा[3],
कधें कइ के यो क्या तुमारा वज़ा।

लज्ज़त ऐसे कामाँ की वो पाई नईं,
कधें ऐसे दावाँ में वो आई नईं।

वो इस काम कूँ भोत कचवाती[4] थी,
सहेल्याँ मने न्हाट[5] कर जाती थी।

जो रहती लज्जत कुछ सकी पाएगी,
तो शह कूँ उने खींच कर लाएगी।

फिराने अथे हात शह ठार-ठार,
के थी शोख़ चंचल उतम ज़ात नार।

---

१ दूल्हन २ आनन्द ३ प्रातः ४ शरमाती ५ भाग कर।

येता तन अथा पाक साफ़ होर हनवार,
के हाताँ फिसलते थे बे अख्तियार।

के क्रिरमेजी[1] रेशम ते अंग नर्म था,
वख्त बेशर्म ख़्याल सो गर्म था।

कधें गुड़[2] देवे गोद में बैस कर,
कधें लेट जावे सितम बैस कर।

कधें पर्दे के आसरे जा छुपे,
कधें शह को सतमें पकड़ ले आये।

कधें शोर करती कधें ग़लबला,
कधें कइ अखण्ड हो कधें सो कला।

कधें कइ के सरदी ते तन सर्द है,
कधें लेवे भाना के सिर दर्द है।

कधें दिल के राज़ाँ कहे खोल कर,
कधें कई के किस्से उठे बोल कर।

कधें शह कूँ टुक लाये बाताँ मने,
कधें हात दे शह के हाताँ मने।

कधें देली गाल्याँ कधें दोस्ती,
हुई बेअदब शाह के फोस्ती।

गुसा नार का यूँ है इस नार में,
के ज्यूँ आग अछती है अंगार में।

लगी शाह कूँ तल-तल तपाने सकी,
के नईं देती टुक हात लाने सकी।

के इस काम कूँ भोत कच्चवाए है,
सहेल्याँ मने न्हाट कर आए है।

1 एक रंग 2 चुम्बन।

सकी* कूँ भोत छन्द सूँ सँपड़ाय कर,
दोरानाँ[1] की बन्दिश मने उस जकड़ ।

जो शह केली दबटे कुफ्ल ले तलार,
खुले धन के तबले सो लाल आए भार ।

सुघड़ शह सूँ संग्राम धन की अहै,
के याकूत दामन में भर ली अहै ।

शहंशा सुधन सेज पर आई थी,
सिराना जो था सो हुआ पाई न थी ।

सुहाते थे शह धन सूँ इस वक्त यूँ,
के हरनी कूँ ले बैटता बाग ज्यूँ ।

चल्या तंग कूँचे में शह का तुरंग,
हुआ सुस्त आख़िर के था टार तंग ।

लगी ठेंस उस होर हुआ लंग[2] पाय,
किया तंग कूचे मने आय जाय ।

खिल्या फूल तन+ का मदन बाव ते,
के खुश है वो संभोक के चाव तें ।

चंचल चुलबुला जो उठी शोर कर,
सिराना चल्या पायँती के उधर ।

पिरत का झुटन शह झुटे इस सूँ जब,
बिछाना हुआ बाँधराबोल सब ।

किए रात भो धात धन सात यकंग,
बजर के वो पाए बजर का पँलग ।

सुधन कूँ हिला कर प्रेम मद पिलाय,
भोत धात समजा उसे हात लाय ।

---

१ बड़प्पन (तेलुगु के दोरा से) २ लँगड़ा ।

पठान्तर :—* सुधन + धन ।

रही दोस्तन यूँ वो उस दोस्त सूँ,
के ज्यूँ मग़ज़ मिल कर अछे पोस्त सूँ।

सुहाती है धन शाह ख़ुश फ़ाम सूँ,
के गुमती है सीता मगर राम सूँ।

दुआ ख़्वास्तन मुहम्मद क़ुली क़ुतुबशाह[1]

इलाही मुंजे दे तेरा ध्यान तूँ,
सो दौलत हयात[2] होर ईमान तूँ।

इलाही गुन्हा ते झटक बार दे,
निराधार हूँ मुंज आधार दे।

इलाही तूँ हिस[3] दे हरेक काम में,
मेरा नाँवँ कर ख़ास होर आम में।

इलाही तूँ ख़ुशहाल रख मुंज जम[4],
दफ़े कर बला दुख दरद होर ग़म।

इलाही तूँ दुश्मन कूँ तलपट[5] कर,
बुर्यां कूँ दुनिया में ते सब चट कर।

इलाही तूँ दायम मुंजे शाद रख,
बलायाँ के बन्दाँ ते आज़ाद रख।

इलाही मेरा मर्त्तबा कर बुलन्द,
सदा दे मुंजे ऐश इशरत अनन्द।

इलाही मददगार तूँ है मुंजे,
मददगार हर ठार तूँ है मुंजे।

इलाही क़ुतुबशाह तेरा दास है,
क़ुतुबशाह बन्दे कूँ तुज आस है।

---

१ मुहम्मद क़ुली क़ुतुबशाह का प्रार्थना करना २ जीवन ३ जानकारी ४ सदा ५ नाश कर।

ख़ात्मा[1]

कुतुब मुश्तरी मैं जो बोल्या किताब,
सो हुई जग में रौशन के ज्यूँ आफ़ताब।

अवल होर आख़िर के कामाँ पछान,
दुनिया में रख्या हूँ मैं अपना निशान।

निशानी रखे बाज़ चारा नहीं,
के दायम कोई रहनहारा नहीं।

सुनार हो के सुन्ने के लफ़्ज़ा गढ़्या,
तिन मानी चुन-चुन उनन पर ज़ड़्या।

कता हूँ के यो खोल मक़सूद सब,
येता मैं मशक्क़त किया इस सबब।

के पढ़ कर इसे मुंज करें याद सब,
सदा काल मुंज ते अछे शाद सब।

जिने शेर बोल्या उसे क्या है ग़म,
के जीता अहै नाँवँ इस जग में जम।

तमाम इस किया दीस बारा मने,
सन यक हज़ार होर अठारा मने।

---

१ समाप्ति।

डाक्टर अब्दुल हक़ की अपनी प्रति के आधार पर प्रकाशित,
पृष्ठ १०४ के आगे का प्रक्षिप्त या अतिरिक्त अंश।

रुसतन शाहज़ादा अज़ तहलुके दरया[1]

खुदा के करम सूँ जो निकल्या बहार,
खिज़ाँ थे अलंग[2] जूँ चिकल्या पहाड़।

······कूँ छूप अगल ······हुआ,
सो राहत सूँ ग़म सब मुबदल[3] हुआ।

जो देख्या के यक झाड़ है खुश हवा,
न देखा सो मेवा दिस्या वाँ नवा।

... ...
... ...

······ तख़्ते पै भूकों सूँ खाने तपै,
वले इशतहा[4] साथ खाया अपै।

किया जूँ[5] की ······ ······
··· सब ज़फ़ायाँ[6] फ़रामोश तूँ।

भोतेक दिन जो गुज़रे थे जाँ कन्द में,
सो इस झाड़ तल जामता नन्द में।

······ ······वहाँ सोय कर,
आसूदा देख्या हुश्यार होय कर।

जहाज़ येक आता है कड़क्या[7] कूँ लग,
रह्या मुंतज़र खुश हो आये तलग।

लंगर दे के जूँ लोग निकले तमाम,
किया शाहज़ादा अंगे हो सलाम।

---

१ दरया के तूफ़ान से शाहज़ादे का छुटकारा पाना। २ अलग ३ बदलना ४ भूख ५ भू
६ जुल्म ७ किनारे।

अथा यक बड़ा उन मने की सतें,
जवाब उन दिया फिर अले[1] की सतें।

महरबान हो पीर पूछा हवाल,
"तूँ कोन है तेरा क्यूँ गुज़रता है हाल।

तुजे खाना पानी मिलता है क्यूँ,
यकेला गुमे क्यूँ तूँ कहे है सो त्यूँ।"

कह्या "हाल मेरा अगर तुम सुने,
इसी तिल में मरदूद कर मुज कने।

ये वाख़ाना[2] सोस्या[3] है कई इन्स व जिनें[4],
मशक्क़त[5] सूँ दरया में······आठ दिन।

मेरा बाप ताजिर[6] अथा महतशम[7],
न देख्या अछे कोइ दुनिया में कम।

के माल होर मता[8] उस कूँ बेहद अथा,
सौ कइ लाख तो ज़रबफ़्त[9] का···अथा।

जवाहर ख़ज़ीने में फ़ाज़िल अछे,
······ ······ ······ ·····अछे।

जो कश्ती में आते थे कइ लोक······,
न फ़हमे थे त्यूँ ज़याँ······।

यकायक क़ज़ा[10] आसमानी हुआ,
बला येक किश्ती तूफ़ानी हुआ।

के फुट भाज़ सब लोक वाँ डुब के गये,
यकेले हमी येक तख़्ते पै रहे।

सो माँ-बाप होर माल सब जाय को,
रह्या मैं दिगर[11] सूँ ये दुख पाय को।

---

१ 'तुम पर', सलाम के जवाब में कहना २ हाल ३ सहन किया ४ मनुष्य और भूत-प्रेत ५ मुसबित ६ सौदागर ७ बहुत बड़ा ८ दौलत ९ ज़रीन कपड़े १० भाग्य से ११ अकेला।

अलम[1] भोत खींचा दरया में यू तन,
गया ग़म निकल गुड़ जो देख्या तमन।"

कह्या हाल अपना जो इस पीर सूँ,
सुन्या पीर हैराँ हो दिलगीर सूँ।

कह्या "तुज यकेला याँ का गुमे,
अगर तू रहे तो रखेंगे हमें।"

कह्या अजिज़ सूँ फिर वो क़दमाँ कू चुम,
"करो मुज सरफ़राज़ मा-बाप हो तुम"।

......वह पीर उस जान कूँ टुक देख्या,
शफ़क्क़त[2] सूँ ख़िदमत में अपने रख्या।

.....सूँ उस के पकड़्या चरन,
लग्या खुश हो दिन रात ख़िदमत करन।

.... मिल अथा,
हरेक बात में भोत कामिल अथा।

.... घर कूँ,
चल्या पीर वाँ थे अपस शहर कूँ।

... ...
के उस शहर आँगे अथा रूद नील[3]

.... जा,
अदब सूँ था ख़िदमत में हर यक जा।

अंगूठी थी यक शाहज़ादे कने,
किया फ़िक्र यू क्या सबब मुज कने।

"ले जा तू सो बेच्या अंगूठी के तईं,
खर्च करके खाने को रोटी के तईं।"

---

१ रंज, दुःख २ मेहरबानी ३ मिस्र की नील नदी।

वो इस धात सूँ खुश धरे चाकरी,
अपस का अपै खा करे चाकरी।

कधीं खूब मेवा जो पाता अछे,
के आमिल[1] के तईं बल्के ल्याता अछे।

था उस धात दो साल हो कर बन्दा,
के आमिल था उस बाब थीं शर्मिन्दा।

कुच यू मर्द हमारा तो खाता नहीं,
यूँ उपकार उसका मैं तोड़ूँ कभी।

अगर कुच्छ आमिल जो देने को जाय,
शहज़ादा तो पावाँ उपर हात लाय।

के "बिलफ़ेल[2] तो कुछ नहीं अहतयाज[3],
मँगूँ तुज कने...... ....।

यू भाने सते कुच लेवे न वो,
के यक दिन...... ....।

के इस धात खिदमत मने चुफ़त[4] अछे,
... .।

सो तक़दीर चन्द रोज़ तो यूँ रख्या,
क़ज़ा... ....।

मँगे जिस कूँ अंपड़ाय मक़सूद कूँ,
वही ....।

शहज़ादा हो दिलगीर यक रोज़ सख़्त,
गया रूद[5] कड़के गुमाने वख़्त।

बुज़ुर्गी नदी देख्या दिल पो फ़हम,
तो यकबारगी दिल पै आया यू वहम।

---

१ मालिक २ इस वक्त ३ आवश्यकता ४ चालाक ५ नदी।

के या रब, कहाँ का ये पानी अहै,
मगर जग में अमान[१] सानी अहै।

यू चौड़ान डूँगाई यकसाँ दिखाय,
के इस शान अज़मत सूँ यू काँ थे आय।

बुजुर्गी यो हक़ ने हवेदा[२] किया,
वले किस ज़मीं पर यो पैदा किया।

के तौफ़ीक़[३] हक़ सात मुस्तैद हो,
सो जा देखना काँ थे नीचा है यो।

ये .... अगर राज़ मैं,
दो जग में अछूँ तो सर अफ़राज़[४] मैं।

यूँ विस्वास आया जो उस दिल उपर,
उठ्या वाँ ते रुख घर के मंजिल उपर।

रज़ा लेने आमिल के आया नज़ीक,
कह्या "मैं मँगूँ तुज कने यक भीक।

गुजरता है मुज़ दिल पे ये फ़सल नक़ल,
के देखूँ के इस रूद का काँ है असल?

रज़ा पाऊँ तो जाऊँ है मद्दुआ[५],
हरेक जा पै करता अछूँ तुज दुआ।"

सुन्या जूँ यो आमिल सो हैराँ हुआ,
बहुत हैफ़[६] खा कर पशेमाँ हुआ।

कह्या "तेरे दिल पर यू क्या खयाल,
न ले सर पै सितमी यू अमर[७] महाल[८]।

के तुज सीने कू ता दराज़ी है राह,
के मुश्किल मशक्क़त के सख़्त बद है राह।

---

१ एक राजा का नाम जो दर्या में बह गया था २ ज़ाहर ३ इरादा ४ सेवा में ५ इरादा ६ अफ़सोस ७ काम ८ मुश्किल।

तूँ काँ जाय मग़रिब अक़्ल ख़ाम है,
वाँ आदम तूँ जाने का नईं काम है।"

कह्या शाहज़ादा के "चारा नहीं,
यू दिल का तलब फिरन हारा नहीं।

के ना चार तुम मुज कूँ देना रज़ा,
न जानू के मुज सर पै क्या है क़ज़ा।

क़ज़ा तो फिरन हार नईं है कधीं,
बग़ैर रज़ा बिन चारा नहीं।

अगर होय रज़ा तो यू दिल शाद अछे,
नहीं तो मेरे दिल पे सो दाग़ अछे।

हरेक वज़ा कहता यू जीव जावना,
भला है जो तेरा रज़ा पावना।"

सो आमिल कह्या "है यो हिकमत अला[1],
जिधर मन मंगे जाव तुम बिस्मिल्ला[2]।

वो हिकमत ख़ुदा का वो आपै बुजे,
के सेहत सलामत ले जावे तुजे।

करूँ क्या मैं उपकार तेरे उपर,
तूँ लइ हक्क़ धरता है मेरे उपर।"

यूँ कह कर मँगाया सन्दूक आपना,
सो हिकमत सते खोल कर ढाँपना[3]।

---

१ ईश्वर २ शुरू करता है नाम अल्ला का ले कर ३ ढकन।

रज़ा गिरफतन शाहज़ादा अज़ आमिल बा हवस दीदन असल (रूद)[1]

तवक्कल[2] करा बाँद तोशा व ज़ाद[3],
रज़ा ले चल्या वो शाहज़ाद।

नदी के किनारे च जाता अछे,
मिले फल-फुलाली सो खाता अछे।

इसी धात सूँ जूँ चल्या चन्द रोज़,
न गुज़र्या सफ़र ······ ······ ।

सो इतने में जा येक बर में पड़्या,
न देख्या ······ पानी ······ ।

मिले घाँस भी खाने मँगता अथा,
इसी आस ······· ······ ··· ।

जो ऐसे में जा यक पड़्या देग में,
कह्या जीव जावेगा याँ बेग में।

न सकता था भूकों अंगे डग धरन,
लग्या हक़ के दरगह में नालिश करन।

मुनाजात[4] कीता ऐ परवरदिगार,
अगर मौत है मुज तो बेगी सूँ मार।

जो चन्द रोज़ बाक़ी अगर है हयात,
तो जाँ कुन्दनी[5] थे मुझे दे नजात।

के जूँ जूँ अज़ाबाँ यो सहता अछे,
वते अज़र्ज़[6] सतें सो कहता अछे।

सो रहमाँ कूँ यूँ आजज़ जब फ़हम हुआ,
उसी तल में राहिम कर अरहम[7] हुआ।

---

१ नदी की असलियत देखने के लिए शाहज़ादे का अपने मालिक से छुट्टी लेना २ ईश्वर पर विश्वास कर ३ सामान ४ ईश्वर से प्रार्थना करना ५ जान पर तकलीफ़ होना ६ आजिज़ी से ७ रहम।

कह्या शाहज़ादा अपस दिल में आन,
बहर हाल देखूँ यू चड़ कर ठिकान।

चड़्या जूँ वो ठीकान अत चाव सूँ,
मशक्क़त भोत पाके बनवास मूँ।

उपर चड हरेक घेर नज़र जब करे,
लगे दूर दिसने दरख़्ताँ हरे।

वो देख्या सो ख़ुश हो के दिल यूँ हिल्या,
के प्यासे कूँ जूँ आब-हैवान मिल्या।

रह्या था जो निर्जीव जीव फोड़ कर,
वो देख्या सो जीव पा चल्या दौड़ कर।

नज़ीक जाके देख्या सो जूँ बहिश्त था,
जो कुच जग में होना सो सब किश्त[1] था।

हरेक क़िस्म के वाँ थे मेवे लगे,
यता चुन के खाया जो जीव ना भगे।

वो मेवे नग़ज़[2] खा के पानी पिया,
सुक आराम पा कर हुआ ख़ुश जिया।

के मक़सूद[3] पाकर वो सन्तोस का,
लग्या सेर करने वो फिरदोस[4] का।

के जूँ सैर करता चल्या बाग़ सब,
म्याने कूँ आपड़्या सो देख्या अजब।

यक क़ता ज़मीं में जो कीता नज़र,
है सुन्ने के झाड़ों को जौहर का बर।

दरख़्ताँ दो सुन्ने के जोती दिसे,
के खू से उसे लाल मोती दिसे।

---

१ खेती २ खूब ३ विचार कर ४ फलों का बाग़।

ख़रीत्याँ[1] में जौहर किए थे जतन,
भितर थे झमकते थे सूरज नमन।

वो खू से जौहर येक पर नूर था,
नैन देखने उस कूँ माज़ूर था।

सो देख दिल मने भोत अचम्बा किया,
बर तोड़ देखूँ के आँवें गया।

के जूँ हत पसार्या वो यक तोड़ने,
नज़िक था जो यू काँप जीव छोड़ने।

भोत ज़ोर से आके उस गुदगुदी[2],
बसू धेरी सूँ बेताब होकर तदी[3]।

पड़्या वाँ जो इस धात बेसुद हो,
पड़े जो मलोल आपना बुद खो।

वहाँ थे हुश्यार हो के इस शर सतें,
किनारे गया था सो कर डर सतें।

के या रब, कह्या "क्या है यो मुअ्जिज़ा[4]?"
सो पाया था मैं नागहानी सज़ा।

किया शुक्र भोतेक बाँच्या के जान,
बहर-हाल फिरने लग्या गुलिस्तान।

जो वैसे में ग़ोग़ा उठा येक धीर,
के आता था यक बादशाह बा वज़ीर।

देख्या शहज़ादा जब वो दबदबा,
सो जा छुप के मार्या भ्ररप में दबा।

फराशाँ कूँ गोया रज़ा शह दिये,
हवा देख यक जा बिछाना किये।

---

१ थैलियों २ कँप कँपी ३ उसी वक़्त ४ गुप्त बात का ज़ाहर होना।

वहाँ शाह उतर्या अदिक ज़ौक़ सूँ,
वज़ीराँ वाँ मजलिस किए शौक़ सूँ।

लगे बात करने सो हर येक धात,
जो इतने मने शाह बोल्या यो बात।

के "लई दिन थे तुमना कूँ मैं पूछता,
के क्या हाल है करना मैं बूजता।

यू सुन्ने के झाड़ाँ यहाँ की हुये?
यू खूशे जवाहर के काँ थे हुये।

के मुँज दिल में लइ दिन थे यो वहम है,
न तुमना किसी कूँ तो यू फ़हम है।

के आया अहै मेरे दिल में सो आज,
न छोड़ूँगा तुमना यू फ़हमाए बाज।

वगर नईं तो मारूँ फ़रंग हात में,
के हर सात गरदन कूँ यक सात में।"

यू सुन कर वज़ीराँ गए हड़बड़ा,
था पुख़्ता यक इन में हुआ वो खड़ा।

के हुरमत[1] सूँ दायम जिया था उने,
बड़्याँ की जो ख़िदमत किया था उने।

अंधें हो किया शाह तईं वो अरज़,
"न था आज लग यो फ़हमने ग़रज़।

था तुज बाप दादे की ख़िदमत में जब,
तधाँ थे[2] यही झाड़ है यूँ च सब।

वले कोई आक़िल सूँ पूछा नहीं,
के यू पूछना किस कूँ सूज़ा नहीं।

---

१ इज़्ज़त २ तब से।

समजने यू तुज दिल पै आया है मौज[1],
रज़ा दे जो ढूंढे उसे चन्द रोज़।

यहाँ थे हमें सात मिल जाएँगे,
हरेक जा यू ढुंड कर खबर पाएंगे।

खबर पाएँ गर यूज़ है भाग हमन,
वगर नईं तो संपड़े हैं फ़र्ज़न्द व ज़न।"

के यू बात सुन शाह देता जवाब,
"खबर ल्याव तुम रास्ती सूँ शताब[2]।

अगर जाएँ तुम न्हाट ने की सबील[3],
सटूं सब के नहनवाद धाने में पेल[4]।"

उठ्या सब कूँ इस धात दे कर नहीब,
मँगा कर हवा सार तेज़ी रकीब।

गुसे सूँ चल्या शाह वईं ऊठ कर,
वज़ीराँ रहे वाँच सब रूठ कर।

फ़िक्र वन्द हो कर बिचारे सू मिल,
कहे शह बुराई पै रख्या है दिल।

नहीं फ़हमता बात यू खाम है,
पस इस सात जाने का क्या काम है?

यह कह कर खड़े रये वो सातो वज़ीर,
चले वाँ थे राज़ी हो सब येक धीर।

जूँ आँधं हुआ इन का दो डग गुज़र,
देखे छुप के बैठा यक आदम बशर।

सो पूछे के तूँ कौन है ऐ जवाँ?
रहे क्यूँ तूँ क्या काम करता है याँ?

---

१ इरादा २ जल्द ३ प्रयत्न ४ बालक।

बाज़ गश्तन वज़ीराँ व रफ़्तन शाहज़ादा पेश्तर[1]

के सातो वज़ीराँ तो इस जान कूँ,
दुआ भोत कर कर सो अस्मान कूँ।

हरेक बात का सब वो पा कर मुदा[2],
कते शाहज़ादे कूँ सातों विदा[3]।

वज़ीराँ फिरे पाके मक़सूद तो,
चल्या शाहज़ादा पकड़ रूद[4] तो।

चल्या जाय यकेला नदी के किनार,
अछे दश्त वीराँ अगर कोहसार।

के वले रूद कड़का इसी राह था,
निगहदार[5] हरेक ठार करतार था।

अगर कईं मिले गावँ तो पाय आश,
वगर नईं तो था घाँस पात च मुआश[6]।

ज़माने सतें भोत छुटने लग्या,
सो इस धात सूँ बाट कटने लग्या।

मशक्क़त जफ़ा बाट में भोत खेंच,
केतक दिन कूँ यक शहर देख्या सो वेंच।

चल्या ज़ौक़ सूँ देख कर वो नगर,
जूँ भूके कूँ नेमत मिल्या है मगर।

हुआ खुश भोत दिन के परदेस में,
पठा बिस्मिल्ला कह के उस बेस[7] में।

अजब इस शहर का सो मुरव्वत वस्या,
खड़ा एक जवान खूबसूरत दिस्या।

---

१ वज़ीरों का पलटना और शाहज़ादे के सामने जाना २ प्रशंसा ३ बिदा ४ नदी ५ निगाह रखनेवाला ६ ज़िन्दगी का सहारा ७ दरवाज़ा।

देख्या मुख उपर नूर जूँ सीम उस,
अँघें हो किया आके तसलीम उस।

मुसाफ़िर यू है कर मुहब्बत सूँ देक,
सो खुश खल्क़[1] सेतीं किया वो अलेक[2]।

कह्या तूँ याँ चन्द रोज़ महमान हो,
लिया महर सूँ हात में हात वो।

शहज़ादे मने देक हया होर शरम,
लग्या अत मुहब्बत सूँ यारी करम।

लेजा चाव सेतीं उसे बैसला,
सो महरम किया घर भितर पैसला।

तो पूछ्या के "काँ काँ किए है के गश्त,"
लग्या बोलने यो अपस सरगुज़श्त।

"निकल बाप सौदागरी तीन सौ मर[3],
उनो सब मुए तो हुआ मुज ये क़हर[4]।

सो भी बाट में मोत वाक़े देख्या,
सो आठ आठ दिन के जो फ़ाक़े देख्या।

मेरा दुःख होर कष्ट कह्या ना जाय,
के ग़ैर अज़ खुदा कोई मक़सद न पाय।

न जानूँ फ़लक का किता रूस था,
जो अँखूँ ज़फ़ायाँ फिरूँ सोसता।"

यू सुन हाल देख तलमलाया उसे,
बुरे खान पानी खिलाया उसे।

के जूँ खाना खा कर हुआ सावचीत,
देख्या सामने एक गुलवाड़ी[5] रीत।

---

१ स्वाभाविक, फिदरतन २ सलाम करना ३ मर्द, जबर्दस्ती ४ आफत ५ रथ (?)।

बँदे थे दो उस में जनावर दलैल,
के था येक गिद्ड़ा व दुसरा सो बैल।

वो दोनो मने हम ज़बानी हुआ,
देख्या शाहज़ादा तमाशा नवा।

यूँ गिदड़ा कता था जो उस बैल तैं,
के दायम मलूल[१] हो के अछता हूँ मैं।

कह्या वो "मेरा हाल ना पूछ तूँ,
मगर अक्ल धरता नहीं कूच तूँ।

के तेरे हज़ूरी च पाते हैं घांस,
ना भर पेट अदा यूँ निकाल्या है बांस।

जो उस हाल सेतीं भी नित लग जाएँ,
सो खांदे ये खांदे भाना गर लगाएँ।

खलासी नहीं उम्र में येक दिन,
सो मुज हाल पर ग़म गुज़रता कठिन।"

सुन्या जूँ के अहवाल यू सब वो खर,
कह्या सीक मैं सिकलाऊगाँ, यक हज़र।

नको खा तूँ कुच घाँस का जिन्स आज,
तो फ़हमेगा तुज दर्द कर ला इलाज।

के साहब यू सुन ना लेजावो कहे,
दो चार दिन तूँ आसूदा रहे।

हुआ बैल खुश जो हुनरहित चड़्या,
यू सुन शाहज़ादा समज हँस पड़्या।

जो घर की यू औरत ने हँसना सुन्या,
कती क्या जो तूँ मुज पै ऐवाँ चुन्या।

---

१ ग़मगीन, दुःखी।

कह्या शाहज़ादा ख़ुदा की तो सूँ[1],
झूटें, क्या सबब मैं तुमन पर हँसूँ ।

हँस्या घर की बात येक याद आके मुज,
तुमे तो नवाज़े बुला लाके मुज ।

यू सुन चुप रहे मर्द औरत तदी[2],
सुबा हुई पै यू ल्या ख़बर गावदी[3] ।

लिया बैल नई घाँस निस मुख मने,
मगर दर्द कुच आके है दुख मने ।

के साहब यूँ सुन कर हुआ अत चकोर,
कह्या पेरना बीज आज है ज़रूर ।

हमारे फ़लाँ यार कन जाव तुम,
यो गिदड़ा लेजा कर मंगो गाव तुम ।

कहो बैल बदलें तो गिदड़ा अहै,
सो ढोने को दो बराबर अहै ।

यू गिदड़ा लेजा देव लादेगा वो,
सो वो बैल लाकर तुमे नागर करो ।

के इस दिन था बीज पेरन फ़रज़,
जो साहब कह्या यूँ चलाई अरज़ ।

दिया गाव जिन ने के नफ़राँ कूँ इन,
फुकट का है गिदड़ा सो लादो दुगन ।

सो भेजे फिरा बैल कर ले धंधा,
लिया गिदड़े कूँ पागा में अपने बँदा ।

देख्या बैल कोठे में आया जो खर,
सो पूछा के तुज तईं ले गए थे किधर ।

---

१ क़सम, सौगन्द २ जब ३ जानवरों की देखरेख करनेवाला ।

वो गिदड़ा सो इस थी मशक़त यो सुस,
के धरता अथा बैल पर भोत उस।

बिचार्या अपस दिल मने फिक्र कर,
कह्या इस दग़ा देवँ यो ज़िक्र कर।

कह्या मुंज ले गए याँ थे वाँ बे गुज़न्द[1],
न था काम तो कुच के था ख़ुश अनन्द।

लेजा मुज यूँ छोड़े हरयाली भितर,
के खा खा जूँ लेड़ता था निहाली उपर।

उनों का सो जूँ बैल ल्या आँपड़ाय,
बज़ाँ इस हरियाली थे मुंज भार भाय।

सो तब बैल पूछा के मुंज बाब में,
धनी कुच कह्या ज़याँ होर लाब में।

सो गिदड़ा कह्या हुए मैं यू सुन्या,
के तुज बाब में अक्ल वो यूँ बुल्या।

दिया गावदी कूँ वो साहब जवाब,
तूँ दुबला मलालत थे ना होय ब्याब।

सुबा घाँस खा बल खूब होय भला,
वगर नईं तो परसूँ जो काटे गला।

अगर कोई क़स्साब[2] मांगे तो देव,
वगर नईं तो बाँत्याँ सूँ बीच बैल लेव।

यू सुन कर हो आजिज़ पड़्या इस के पाँवँ,
कह्या कुच सिका अब जो जीने का ठाँवँ।

सो गिदड़ा कह्या गर तूँ मँगता है खैर,
सुबा लग न रख घांस रखड़े[3] बग़ैर।

---

१ बिना कष्ट के २ बैल काटनेवाला ३ छोड़े बिना।

जो देख्या धनी घाँस जब तूँ चरे,
गया दर्द कर काटने तुज डरे।

यू सुन शाहज़ादे की बुद सब उठी,
सो हैरान हो हंसने लग्या मसकटी[1]।

हँसना देक होय मर्द औरत तो ज़ार,
वले यू तो हँसता था बेअख़्तयार।

गुस्से सूँ हुआ रंगा दुनो का ज़र्द,
कहे "क्या काम हंसता हमन पर यूँ मर्द ?"

कह्या शाहज़ादा खाला[2] खान[3] सवाँ (?)
नईं हंसता तुमन पर ना हो बदगुमाँ।

सो घर का धनी यूँ भोत ज़ट[4] हो,
तुमे क्या सबब पस हंसे-खोल को।

कह्या शाहज़ादा उसे हो बज़ीद[5],
के यू खोल कहना नहीं कुच मुफ़ीद।

तो इस शर्त सूँ तुज फ़हमाऊँ (मैं) लिक,
ना कह तूँ गर औरत जतारे[6] बलिक[7]।

किया शर्त औरत सूँ रखने मुभम[8],
मँग्या शाहज़ादा दवात होर क़लम।

न था इस के घर में क़लम होर दवात,
मँग्या सो होर कई थे औरत के हात।

वो ल्याने कूँ उठ कर जो मँगते चले,
जो रोटी पड़ी गोद में थे तलें।

यू दौड़ी जो हमसाये कन जा मँगे,
वो रोटी पड़ी जा कुत्ते के अँगे।

---

१ स्त्रियाँ २ खाला-मौसी ३ खाना (?) ४ बुरा होना, शठ ५ मजबूर करना ६ जानना ७ बल्के, यद्यपि ८ अस्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहना।

सो कुत्ता जो बैठा अथा अक मोंच,
तो इतने में मुर्ग़ा सट्या आके चोंच।

कुता देक हुश्यार हो के उठे तलक,
मुर्ग़ लेके रोटी गया वाँ थे तलक।

······रुट हो के कुत्ता यूँ कह्या,
न देख्या ऐसा मुर्ग़ मैं बेहया।

यू ककलूत सूँ क्यूँ सट्या आके मूँ,
बेशर्मी देखो इसकी किस हद लगूँ।

दिया जाब[1] फिर मुर्ग़ के सग नजिस[2],
है बेशर्म तूँ होर नमक खाय जिस।

अवल थे किते तुज ना पाक सग,
वले तेरे साहब में तेरी है रग।

तूँ कुत्ता अहै कुच नहीं तूज फ़ाम,
है साहब जो तेरा सो तुज थे है ख़ाम।

पूछ्या सग[3] के साहब मेरा क्यूँ है ख़ार[4],
सो मुर्ग़ा कह्या सुन अपैं हर्ज़ कार।

के कम अक़ल पन कई नमर्दी भले,
यू सुन बात औरत की पड़ते गले।

मुसाफ़िर मरे घर कने खोल राज़,
तो इस ख़ून······ ······होय दराज़।

यू सुन शाहज़ादे कूँ ख़न्दा[5] लग्या,
फिर उस जान के दिल कूँ दंदा लग्या।

हँस्या की तूँ सच कह बहाने यूँ छोड़,
सो औरत कूँ याँ थे दिया हूँ की दौड़ ?

---

१ जवाब, उत्तर २ बुरा, गंदा, अपवित्र ३ कुत्ता ४ ज़लील ५ हंसी।

देख्या शाहज़ादा जूँ इसका तलाश,
दिया इसकू सौगन्द न करना के फ़ाश।

कह्या येक दारू हुआ मुँज कूँ दस्त,
के थी वह सुलेमाँ खज़ीने[1] की वस्त।

वो दारू मैं खाया सो खुश तन हुआ,
ज़बाँ सब जनावर का रोशन हुआ।

कह्या बैल गिदड़ा किए यूँ बिचार,
सो इसके बदल में हँस्या था दो बार।

वहाँ थे कुत्ते कूँ उठ्या मुर्ग़ बोल,
सो क्यूँ ना हँसूँ बात सुन यू अमोल।

के मुर्ग़ा होर कुत्ता होर बैल होर खर[2],
कह्या इनके अहवाल[3] सब सरबसर।

......पशेमाँ हुआ मर्द अत,
समज मुज न था कर मंग्या माज़िरत[4]।

खुशहाली सूँ बैठे समज कर दो तन,
सो इतने मने ल्याय औरत लखन।

न था बात का कुच उसे यो समज,
मर्द तीन सौ लख देव कर लाई दहज।

कह्या मर्द ना पड़ गले रह तूँ चुप,
बजिद[5] देख उठ वो लिया खप-खप।

जो देख्या के बैठी ग़ोग़ा[6] समेत,
सो शान्याँ में दस पाँच खिंचा जो बेत।

कही जब वो चुरके लगे खूब दस,
बलागी न बोल्या तो इतना च बस।

---

१ खज़ाना २ गधा ३ हाल का बहुवचन ४ क्षमा मांगना ५ मजबूरी से ६ समूह।

देख्या शाहज़ादा अपड़ती है लत,
छुड़ाया जो आ दरमियाँ कर मिनत।

हरेक बात औरत की ना सुन अज़ीज़,
के उस अक्ल में नईं है अक्सर तमीज़।

चले मर्द औरत के घर के मने,
जो नुक़सान अछे उसके जम पैं मने।

न सुन बात औरत की बद हैं बरी,
अगर ख़ूब अछे बी शुक्र की छड़ी।

.... था शाहज़ादा वहाँ,
किया ख़ूब हिमानी[1] भर फिर वो जवाँ।

वहाँ थे गया शाहज़ादा तना,
कह्या अब मवाफ़िक़ नहीं याँ रहना।

ल्या चा खँ दिन सो उन थे रज़ा,
देखो काँ थे काँ लग ... ...।

---

१ थैली।

रफ्तन शाहज़ादा पैश आबिद व राह नमूदन ऊ[1]

चल्या शाहज़ादा वहाँ थे जो उट,
नदी के किनारे जो मारग थी टुट[2]।

के दिन रात चलता अछे बाट वो,
हरेक जा उलंगता[3] क़ल्ब घाट वो।

पड़्या जा कुबल यक जंगल मने,
न था पान बन भूक कूँ बल मने।

सो इस धात मुश्किल अथा चार माह,
मशक्क़त सूँ हर वज़ा चलता था राह।

फ़लक थे भोत सोसा महनत जफ़ा,
देख्या यक बयावाँ के था बासफ़ा[4]।

दिस्या उस में यक कोह नादिर निछल,
लगे झाड़ मेवे के हर जिन्स फल।

अथा कोह पर येक कुदरत सो ताक़,
किया उस मने येक आबिद विसाक़[5]।

सो वो देख कर शाहज़ादे का मन,
दुख्या के नमन था सो पकड़्या अमन।

बहुत अजिज़[6] सूँ जाके पकड़्या क़दम,
कह्या "देख दीदार[7] पाया हूँ दम।"

दुखिया शाहज़ादे कूँ आबिद अपैं,
नवाज़िश सूँ पूछा वो नाँवँ, अपैं।

के "तूँ कौन होर काँ ते आया है कह,
सो मुज आँख तल तूँ दिसे नस्ल[8] शह।"

---

१ शहजादे का आबिद से रास्ता पूछना २ किनारा ३ पार होना ४ साफ, पाक ५ रहता था, आश्रय था ६ आजिज़ी से ७ दर्शन करके ८ सन्तान।

कह्या शाहज़ादा "हुआ अब फ़क़ीर,
के मुज बाप था सख़्त ताजिर कबीर[1]।

उनो सब कूँ मार्या व रब[2] जलील,
व मुज दिल में बाया[3] देखूँ अस्ल नील।"

सुन्या शाहज़ादे ते आबिद यू हर्फ़,
कह्या "तूँ किया उम्र ग़ुर्बत में सर्फ़।

नको झूट कह तू मेरा पन्द है,
तूँ मशरिक़ केरे शह का फर्ज़न्द है।

दिया मुज हरेक बात का हक़ शरफ़[4],
भई तुज बिन न आवेगा कोई इस तरफ़।

देख्या जो करामात का है धनी,
पकड़ पाँवँ बोला "ऐ मुनअम[5] ग़नी[6]।

ख़ुदा तुज कूँ देता हरेक कशफ़े[7] राज़,
मुजे बाट दिखला के कर सरफ़राज़[8]।"

सो आबिद कह्या हक़ देवे तेरी दाद,
वले सुन कहे त्यूँ तूँ पावे मुराद।

यहाँ लग ज़मी ते सो आसान आय,
है अंगे दरया क्यूँ के जाने कूँ पाय।

अगर तूँ मँगे जाय दरया अलंग,
तो इस रूद कड़के[9] पै अछते कुलंग।

सो हरेक का है ऊँट के नाद[10] धड़,
तूँ ग़फ़लत सूँ जा उसके पाँवँ पकड़।

......पाँवँ पकड़ेगा उसके तो खींच,
चले लेते दरया उपर तुज कूँ बीच[11]।

---

१ बहुत बड़ा २ ईश्वर ३ विचार किया ४ इज़्ज़त का मिलना ५ धनी ६ सम्पन्न ७ जाहर करना ८ अहसान कर ९ किनारा १० तरह ११ वही।

वहाँ होय यू दरया का पानी कमीं,
सो पैलाड़[1] पौलाद[2] की है ज़मीं।

वहाँ थे बमहनत सूँ जावे हज़ार,
दिसे तुज रूपे की ज़मीं होर झाड़।

वहाँ थे भी ना छोड़ अगे[3] होना,
के जाँ लग अछे भुँई[4] झाड़ा सोना।

वो झाड़ाँ पै धरते यूँ मुर्ग़ आशियाँ[5],
अपस तें वाँ यूँ सट जो होना होय ज़ियाँ।

जूँ उलंगे[6] तूँ इतने मलालत[7] सेतीं,
शुक्र कर के अँपड़्या सलामत सेतीं।

दिसे टोक नादिर वाँ मैदाँ तुजे,
ख़ुशी होय हासिल बेपायाँ[8] तुजे।

वो मैदाँ में है येक गुम्बद बेनज़ीर,
के जिसमें थे बहता है क़ुदरत सूँ नीर।

तुरत जा नज़ीक जूँ के गुम्बज़ दिसे,
जैसे आरसी सफ्फ़[9] देवाँ[10] उसे।

के है इस मने येक कुबे[11] ज़रब,
यू चार नदियाँ जिसते काड़्या[12] है रब।

जो यक रूद नील होर दुसरा फ़ुरात[13],
सेयुम[14] दजल[15] चारुम सो जैहूँ[16] नपात।

नज़र जो पड़े वाँ के यू भेद, तुज,
सो हासिल हुआ जान उम्मीद तुज।

---

१ परे २ लोहा अर्थात् लोहे की तरह सख्त ३ आगे ४ भूमि ५ घोंसला ६ उलाँघ कर, बढ़े ७ कष्टों के बाद ८ अनन्त ९ छत १० बड़ा ११ गुम्बद १२ निकाला है १३ एक नदी १४ तीसरी १५ एक नदी १६ एक नदी।

....
....

....
....

....
......सूँ कर मुज कफ़न होर दफ़न।

......ज़ौक़ सूँ आप राह,
जिधर मन मँगे जा ख़ुदा की पनाह।

अगर ल्याय यू सब वसियत बजा,
तेरा होय हासिल नीयत बजा"।

सो आबिद कह्या सब उसे खोल यूँ,
लग्या शाहज़ादे कूँ माकूल यूँ।

हुनर वाट जाने का पाया वुने,
सो आबिद कने ख़ुश मुसराया[1] वुने।

के जिस वज़ा सूँ पन्द आबिद किया,
इसी पन्द सेतीं वहाँ लग गया।

अजब येक गुम्बज़ दिस्या औक तल,
जिसूँ चार तक़सीम हो बहता है जल।

दिस्या इस मने येक कुवा नफ़ीस,
किया फ़िक्र भतराँ[2] जाने कूँ पेश।

जो इसके भितर जब सट्या येक डग,
सो हातिफ़ कह्या याँ ते गर्दान पग।

यहाँ लग तूँ आया सो दिल नहीं भग्या,
जो कुब्वे[3] कने जावँ कर के लग्या।

---

१ मुस्कुराया २ बहुत ३ गुम्बद।

यू आसमान के चर्ख़ का याँ है कल,
तूँ जाने थे अलबत होएगा खलल।

······ख़ुश ल्या होर हुआ······,
······ ······ ······ ······ ।

किया पाक उस ठार कपड़े वो अंग,
दो रकात[1] किया ··· ··· ।

किया दाख नाखाँ खूशे में इस,
तो आबिद शरीक होय तोशे में इस।

इसी क़स्द सूँ आ किया वाँ मुक़ाम,
जे झाड़ाँ पै रई दो जनावर मदाम।

देख्या यक जनावर कूँ महकम क़वी[2],
वफ़्त फ़हम जाने का पकड्या तवी।

इधर मुर्ग़ चारे के तईं जो उड़्या,
के इस पाँवँ काँक हो कर चड़्या।

सलामत सूँ आया कर इतना गुज़र,
मगर था यू आबिद ज़बाँ का असर।

जूँ अंगे हुआ पाँच यू आसब[3] थें,
मिल्या येक बूढ़ा शेख वाँ ग़ैब थें।

कह्या यू सूँ [चुम] शाह के हात कूँ,
"भेज्या तुज कन आबिद मुलाक़ात कूँ।

दिया है यदी सेब तुज देव कर,
सूखा वेग दी रख नको लेव कर।

सख्या मुख में वो सेब ना फ़हम केद,
बग़ल थे वो खूशा[4] हुआ तब नापैद[5]।

---

१ नमाज़ पढ़ना २ मोटा-ताजा ३ जादू ४ गुच्छा ५ शैतान।

कह्या हँस के क़हकहे मैं इब्लीस[1] हूँ,
सो जन्नत थे आदम कूँ काड़्या देकूँ ।

के तुज हात अंगूर था भिश्त का,
यूँ देना दग़ा काम है मुझ ज़श्त का ।

दग़ा इस थे देता हूँ मालूम अछो,
तुमें खायँ होर मैं सो महरूम अछो ।

किया शाहज़ादा सो लान्नत बज़ाँ,
चल्या वाँ थे आबिद का मंजिल था ज़ाँ ।

देख्या बात सब सच्च है इस मौत का,
तो ल्याया वसीयत बजा फ़ौत का ।

सो इस क़ब्र का वाँ इमारत किया,
के रह तीन दिन इसकी ज़ियारत किया ।

---

१ शैतान ।

बाज़ गश्तन शाहज़ादा अज़ मग़रिब व सवार शुदन ब कश्ती[१]

दिया था जो तौफ़ीक़ उसे दादगर,
फिर्या शाहज़ादा तो इतना सफ़र।

कह्या अब कतारें बियाबान में,
हरेक हाल जाना अबादान[२] में।

इसी क़स्द दरया बँधारे चल्या,
नये कान नाचड़ तलारे चल्या।

सो तिस खाना पानी की शादी न थी,
कधीं इस पै मंज़िल की वादी न थी।

वहाँ के सो फिरते थे······नाग,
थे बकर्यां के कलबाँ नमन रीच्[३] बाग[४]।

हुँडें[५] बोरबच्चे[६] तो वाँ बेहिसाब,
हिरन दूज तई मारते थे······।

देख्या शाहज़ादा हराँ (?) गुदाज़[७],
मनाजात[८] केता के ऐ बेनियाज़[९]।

बलायाँ कब्ल में पड़्या हूँ सम्भाल,
मुजे इस बड़े शर थे बेगी निकाल।

सो कर क़स्द उस डरते बाहर हुआ,
वले जा यक ऐसा वाँ ज़ाहिर हुआ।

वाँ खाने न था कुच हरयाली बग़ैर,
कधीं झाड़ के पात सूँ होय सैर।

कधीं सई[१०] करने पै मछली मिले,
सो खुश होय नेमत जो सचली मिले।

---

१ शहज़ादे का मग़रिब से वापिस हो कर किश्ती में सवार होना २ आबादी में ३ रीछ ४ शेर ५ घूमें ६ चीता ७ डर जाना (?) ८ दुआ करना ९ ईश्वर के लिए, अर्थात् जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत न हो १० प्रयत्न।

कधीं भूक सूँ जीव होता ख़फ़ा,
सो इस धात यक माह सोस्या[1] जफ़ा[2] ।

जब इस हाल पर रहम कीता करीम,
भया लुत्फ़ का उस उपर तो नसीम[3] ।

सो मुश्किल जंगल था सो वाँ थे सर्या,
किनारा आ लग्या दीखने कूँ दर्या ।

जब इस का थण्डा बाव आने लग्या,
सो कड़के पै बैठा निझाने[4] लग्या ।

के था ख़ुश तमाशा वहाँ मौज कूँ,
हरेक जाके गोया लगें ओज कूँ ।

यकायक वो मौजाँ में किश्ती दिस्या,
कह्या ख़ुश हो अब मैं बहिश्ती दिस्या ।

वले यक हिकमत सूँ करना है फ़न,
ता हर क्यूँ ख़बरदार होएँ अनन[5] ।

बंबू यक पैदा वाँ सारा किया,
सो चादर उसे बँद फरारा किया ।

जो देखा के जाता जहज़ ज़ोर सूँ,
उचा यू हिलाने लग्या शोर सूँ ।

जहज़ में थे यक शख़्स दिख्या यू ढ़ाल,
सो बाज्याँ सो बोल्या यू क्या है मजाल ?

के ऐसे जंगल से देखो कोन अछे,
याँ क्यूँ ल्या सख्या इस कूँ गर दूँ[6] उसे ।

बहुत घाबरे हो के देखो सभीं,
भेजे कौन है देखो संबक[7] पतीं ।

---

१ गुज़रना, बीतना २ कष्ट ३ प्रातः कालीन पवन ४ झाँकना ५ प्रसन्न ६ भाग्य
७ छोटी किश्ती, नाव ।

संबक दौड़ आया जूँ कड़के उपर,
नज़ीक आ किये रहम लड़के उपर।

कहे कूँ है तूँ जो इस सीन मे,
यकेला है ऐसे जंगल बीच मे।

कह्या शाहज़ादा "इलाही मुजे,
फिरता यूँ खाही नखाही[1] मुजे।

वो क़ादर बग़ैर कौन कुदरत सके,
के मशरिक़ ते मुज ल्या मग़रिब रखे।

छुप्या कर अपन पादशाही नसब[2],
कह्या खोल काम काज गुज़रा सो सब।

मशक्क़त दर्या का जे था बाह में,
जूँ सोस्या[3] जफ़ायाँ[4] जंगल घाट में।"

वो याराँ सुने जूँ के चुन हाल उसे,
चले लेके संबक में तो घाल उसे।

हुए महरबाँ देक सुन व साज़ पर,
इज्ज़त से चढ़ाये उसे भाज़ पर।

सब उसमें थे सौदागराँ मुहतशम[5],
उनो जब सुने उसका महनत अलम।

कहे यू "खुदा का है हिकमत सगल,
के इस सीन[6] में यूँ फिरे कोई निकल।

महर आके सब दस्तगीरी करे,
सब बख़्शीश की खातिर नफ़ीरी[7] करे।

अपस में अपै किए हरेक का मता,
दिने छु-हिसा[8] उस जेता होय वेता।

१ बेकार ही, फिज़ूल २ बाप दादा की परम्परा को बताना ३ गुज़रा, बीता ४ मुसीबतें ५ बड़े-बड़े; धनी ६ वाक़यात ७ चाकरी ८ हिस्सा।

के जिस क़िस्म का जिन्स था जिस कने,
छो तक़्सीम गुन येक देवे विने।

किय शाह वो सब अपस सिलक में,
तो सार्यो थे फ़ाज़िल हुए मिल्क में।

यता माल हुआ ना सके कोई गिने,
सो घोड़े आरक़ी दिया हर कने।

के वो माल घोड़े सब अपने कर्या,
वो हुजरे[1] दिए थे सो उसमें धरया।

सो हासिल हुआ कर अपस मद्दुआ,
था दिन-रात इन सब कूँ करता दुआ।

के चन्द रोज़ मिल यूँ इनमें गुम्या,
जूँ खीश इनों का उनों में जम्या।

खुश्याँ सात यक माह करते अनन्द,
जो थे शाहज़ादे सूँ मिल सूद मन्द।

क़ज़ा आवाँ करने मंग्या आप बल,
हुआ चर्ख़ गरदिश सो सब पर कबल।

के यक रोज़ थे भ्काज़ मे सब ये यार,
जो दोपहर के वक़्त हुआ अन्दकार।

मेहूँ बाव सूँ मिलके चौफेर राद,
सो तूफ़ान अवल मौत था इसके बाद।

भोत ज़ोर सेतीं यूँ किश्ती उड़ी,
चली बाव पर जूँ के उड़ती गड़ी।

इसी धात सूँ सात दिन था अज़ाब,
फटा आठवें दिन जूँ किश्ती हबाब।

---

१ मकान का एक हिस्सा।

दरया पै उड़या था मू शीशे के नाद[1],
फटा फिर कूँ लग शीशे के नाद।

अजल का जो किश्ती कूँ तीर आ लग्या,
तो यक तिल ने कई लाख आलम डुब्या।

सभी ख़ल्क़ कूँ मौत मार्या गंडल,
वले शाहज़ादे की नईं थी अजल।

जहज़ फट डुबे सब किधर का किधर,
के दो चार गोते खा झाड़्या जो सर।

नज़िक था जो दम दाट करना फिरें,
जो इतने में देख्या यो घोड़े तिरें।

बहुत हात पग मार कीता ज़हत,
सख्या आके तो बेग घोड़े पै हत।

उमस सूँ चड़्या पीट पर इस लपक,
सो घोड़ा चल्या रुख़ जज़ीरे पै रक।

ले आया पहड़ पर ख़ुदा के हुकूम,
दो घोड़े अपैं आए बाज़े हो गूम।

के धरता है क़ुदरत वही ज़लजलाल[2],
जो हर यक बला थे रखे बेज़लाल[3]।

सके तल मने पादशाही बख़श,
रखे ख़ुश यकस कूँ के माही बख़श।

कभी आदमी तें दे माही ख़ुराक,
कभी होय माही सूँ आदम हलाक।

कज़ा कूँ फिर आने सकत नईं किसे,
के मछल्याँ कूदे सब कूँ काड़्या इसे।

---

१ समान २ ईश्वर ३ अवनतिराहित।

पहड़ पर चड्या शाहज़ादा खुश हो,
कह्या जी ऊन लग अब ये किश्ती नको।

कम कुल्ल अछे सार होय जो कोई,
मलग मौत की इस कह्या जाए डेई।

न जागा है कहीं न्हाटने दो क़दम,
कधीं अब न बैठूँ के खाया क़सम।

सवार शुदन शहज़ादा ब कोह के दुख़्तर पादशाह मग़रिब बूद

शफ़ख़त[1] सूँ जो उसकूँ देख्या अला,
बला सब गुज़र वक्त आया भला।

नज़ीक जा कर देख्या है जूँ कोह काफ़,
है उस पर जनावर कू चड़ना मुआफ़।

चल्या क़स्द[2] कर जूँ कमरगाह लग,
के दस जा पै बैठ्या हर सू माँदा हो पग।

वाँ जागा दिस्या यक सफ़ा दार ख़ुश,
थे हर जिन्स के झाड़ पर बार[3] ख़ुश।

वो झाड़ाँ का मेवा सो खाया पेट भर,
कह्या "मैं याँ चन्द रोज़ हूँ ज़ौक़[4] कर।"

बहरहाल उस ठार गुमता अछे,
न कोई यार था उस जो हेता अछे।

पहड़[5] के किनारे तो दिन रात वो,
चलाता था मेवे पै औक़ात वो।

के जो रात होवे तो मोती च डरे,
मबादा[6] जनावर कोई ज़ाएँ[7] करे।

नमाशम[8] चढ़े देक ऊँचा दरख़्त,
बँदे डाल सूँ अपसें खोल सख़्त।

के चन्द रोज़ इस धात सूँ वाँ टिक्या,
सो मेवे खाने थे जीव उसका भाग्या[9]।

कहाँ लग यू मेवा सो खाना हिबे,
सो क्यूँ ना करूँ एक घोड़ा ज़िबे[10]।

---

१ महरबानी २ इरादा ३ फल ४ इच्छा से ५ पहाड़ ६ सन्देह, शायद ७ मारे, हमला करे ८ सायंकाल ९ थक गया १० जबा करना, काटना।

पकड़ यक घोड़े कूँ काड्या पछाड़,
कबाबाँ किया सब वो हीड़े[1] कूँ काड़ ।

के पत्थरयाँ उपर सब वो भून्या कबाब,
सो जो जीव मंगे तो वो खावे शिताब ।

कधीं फल-फलाली कधीं खा हड़ा,
रहे फाड़ पर इस वज़ा सूँ पड़ा ।

कह्या ऐ ज़माने अजूँ क्या है हट,
हूँ तनाही थे हो मुकद्दर निपट ।

अपस में अपैं कलकला[2] यूँ उठ्या,
के सुन जनावर का सीना फट्या ।

यू बिल्क्याँ[3] जफ़ा अपने कारी उपर,
किया रहम हक़ इसकी ज़ारी उपर ।

यू ना हो के मदत कूँ थोड़ाच था,
यू मग़रिब की बेटी का जो राच था ।

तो इस दिल में आया जो उपर चड़ूँ,
हरेक धर नज़र कर अक़ल कुच करूँ ।

उपर के ये मुज तईं पड़ेगा नज़र,
मोत दूर सूँ फाड़ जावे जिधर ।

चड़्या दिल मने रख यू उमीद व आस,
चल्या मुश्तरी रास ज़ुहरे के पास ।

मशक्क़त सेतीं जाके अपराल[4] अप,
कह्या क्या है देखूँ परे याँ मैं छुप ।

रौशन देक याँ का मुंजे आय बीम,
यो जागे पे अलबत्त है कुछ तो अज़ीम ।

---

१ गोशत, मांस २ शोर ३ चतुरता से ४ उपर की तरफ़ ।

यू कह कर बड़े झाड़ के पेड़ कन,
सो हैरान हो बैठ्या के क्यूँ रहे जून।

के मग़रिब की बेटी कूँ ··· ··· ···,
रख्या सीमुर्ग़ था ··· ··· ···।

वो हैवाँ जनावर क़ज़ा सूँ छुटे,
सितम लाके तक़दीर उसे याँ सँटे।

अन्देशे में था यू के क्यूँ होय नसीब,
सो इतने में ऊपर थे सट दी वो ऐब।

के जूँ सेब आ कर पड़्या गोद मे,
सो यूधा बरा हो लग्या सूदने।

कह्या झाड़ यू तो नहीं सेब का,
पड़्या क्यूँ यू ख़ूशा अजब ग़ैब का।

लग्या देखने झाड़ उपर रुख बाँद,
के डाल्याँ में यूँ थी अबर में (जूँ) चाँद।

सो इस माह रुख पर नज़र जब किया,
के निर्जीव था जीव आ तब जिया।

तो वो सेब ले कर उठ्या ऐश सूँ,
लग्या बात करने अपन ख़ीश सूँ।

खबर सीमुर्ग़ सुन्या जूँ यूँ जान,
कह्या "बोल किया ऐ नादाँ वाँ।

दीवानी तूँ आप कूँ वो नेकी किये,
के सीमुर्ग़ के आदमीं ल्यूँ जिये।

तूँ बालिग़[1] अहै पन नहीं तुज अक़ल,
है मुज नाद तूँ आदमी का नसल।

---

१ जवान युवक।

सुन अन्देश कर देख वज़ा आपका,
मुज कुच न निस्बत है इस बात्र का।"

सुनी शाहज़ादी ज्यूँ उसका बचन,
कही "तूँ कहे सुन न फ़ाम होय हमन।

नहीं जानती हूँ मैं आदमी सू कह्या,
ये तीन फ़ाम होता मुज तूँ कह्या।

मेरा अक़्ल इस त्रिन सो बूजा नहीं,
के सीमुर्ग़ तें जगमें दूजा नहीं।

जकुच तूँ कता सो दिसे झूट वो,
न हुई बात जो फ़हम है फूट वो।

मैं तुज तूँ सीमुर्ग़ की बिपता[1] नहीं,
....

तो सुन शाहज़ादा कह्या यूँ फ़िरा,
तुज ख़ूब समज्यावता हूँ घिरा।

.........जान सूरत है तूच,
बेजाने के तुमन अपस तईं न बूज।

कह्या एक भी सिकलाऊँगा तूंज पन्द,
के ताख़ूब मालूम हो उसका चमन्द।

सो पूछ्या के सच्च बोल ऐ सुन्धरी,
है हूर बहिश्त या इरम की परी।

कह तूँ कौन होर याँ रहे क्यूँ सदा,
मगर तुज सव्या घन उपर थे खुदा।

नको तूँ छुपा (मुठ) सेतीं बात कुच,
मुरादें व दिल ले करी मुँज लुच।

---

१ विपत्ति।

सुनी बात यू सब अपै हूज़ाद,
कही कौन है तूँ पूछे क्या मुराद।

के सेमुर्ग़ की मैं हूँ बेटी अमोल,
के तूँ कौन हौर याँ की आया है बोल ?

के सेमुर्ग़ आकर दुखावे तुजे,
छुपे ना अगर याँ तो खावे तुजे।

खबर सेमुर्ग़ का सुन्या जूँ यो जान,
कह्या बोल क्या ऐ नादान दान।

दीवानी हो तूँ आप कूँ इसकी गिने,
के "सेमुर्ग़ कईं आदमी त्यूँ जने।

तूँ बालिग़ अहै पन नहीं तुज अक़ल,
है मुज नाद तूँ आदमी का नसल।

सो अन्देश कर देख वज़ा आप का,
तुजे कुच न निस्बत है उस बाब का।"

सुनी शाहज़ादी जूँ इसके बचन,
कही "तूँ कहे सो न फ़ाम होय हमन।

नहीं जानती हूँ मैं अदमी सो क्या,
के नईं फ़ाम होता मुजे तूँ दिखा।

मेरा अक्ल इस बिन सो बूजा नहीं,
के सेमुर्ग़ थें जग में दूजा नहीं।

जो कुच तूँ कता सो दिसे झूट वो,
न होय बात जे फ़हम है फूट वो।

न निपजी तूँ सेमुर्ग़ के पेट थें,
न निकले कंचन कई लोहे कीट थें।

तो सुन शहज़ादा कह्या यूँ फिरा,
तुजे खूब समज्यावता हूँ धिरा

मेरे सार की जान सूरत है तुज,
वेगाने के नमने अपस तें न बूज।

कह्या यक भी सिकलावूँगा तुज पन्द,
के ताखूब मालूम होय इसका छन्द।

जो सेमुर्ग़ आवे तो दिलगीर अछ,
नज़ीक आ जो बैठे तो तक़दीर अछ।

सो कह तूँ अछी लग रही ज्यूँ ख़ुशहाल,
तमा गये पै यो जीव पाता मलाल।

के तनाही सूँ जीव मेरा ना रती
रहम सूँ मुजे ल्या दे एक आरसी

ता सूरत अपस का निभाती अछूँ,
वक़्त आप हर कयूँ गुमाती अछूँ।

यू भाने सेतीं तो मँगा अपना
के तू बात देख क्यूँ यो सच आपना,

वो ल्यावेगा जो आरसी तुज पास,
यू हम जिन्स का तो तूँ पावेगी बास।

कही आरसी क्या सो जानूँ न मैं,
मँगो क्यों के जिस तईं पछानूँ न मैं।

कह्या शाहज़ादा के तूँ चूप मंग,
तुजे ल्या के देने न करसी दरंग।

भई पूछा के सेमुर्ग़ आता है को
के वाजिब है छिपना वो आने के तो

कहीं "आवता है वो पहली घड़ी
अछे यक पहर मार तो लग दड़ी।

के यक पहर कूँ जो वो फिर जायगा,
तूँ ख़ुश फिरता दूसरी सबा अयगा।"

सुन्या शाहज़ादा जूँ यो सब बिचार,
बकत फ़हम करवाँ ते उतर्या तलार।

रह्या आके अव्वल जाँ जागा अथा,
वले इश्क़ इस धन का ··· ···।

वहाँ शाहज़ादी में था इज़्तराब,
के को आप मुज मुर्ग़ पाँऊँ जवाब।

थी इस फ़िक्र सेमुर्ग़ आया जो दौड़,
सुलेमान की चाकरी थें बहोड़[1]।

दिया मेवा हर जिन्स ल्या पेश सट,
वले यू कही त्यूँ थी दिलगी रज़ट।

जो देख्या के बैठी है मखमूल यो,
लग्या पूछने सुद अपस भूल वो।

के किस बात थे तू यू ग़मागीन है,
तूँ अलहक़ मुज ईमान होर दीन है।

अगर कुच तेरे दिल पे गुज़र्या है कह,
मुजे खुश न लगता नको यूँ तू रह।

कही शाहज़ादी मुजे याँ सो तुम,
यकेली सटे तो करे ग़म हुजम।

तुमे गये पै तनाही सूँ मैं मरूँ,
इसी थे यक आरदास[2] तुम सूँ करूँ।

मुजे ल्याके यक आरसी देव बस,
गुमे वक्त ता देखती रहूँ अपस।"

कह्या अगर तूँ मँगतीहै अलबत्ता सच,
इसी तिल में ल्या देऊँ खुशहाल अछ।

यू कह कर गया वाँ थे परवाज़ तो,
सो शहराँ धुँड्या फिर के कइ लाख गो।

---

१ लौटना, वापिस होना २ प्रार्थना।

शब्द-सूची

अक्द=निश्चय
अक़रब=वृश्चिक
अछता=रहता है
अछसी=रहेगा
अजज़=आज़िज़ी
अजल=सृष्टि; मौत
अजाँ=पश्चात्; बाद
अज़ीज़=प्रिय
अजीम=श्रेष्ठतम
अजूँ=अभी तक
अंझूँ=आँसू
अडनाँव=दूसरे नाम से
अता=अब, इतना
अताल=अभी
अथियाँ=थीं
अदल=न्याय
अंगे=आगे
अनन=प्रसन्न
अनीदार=बिछाने की चादर
अपड़ावने=पहुँचाने, पकड़ाने
अपराल=ऊपर की तरफ़
अफआल=क्रिया
अबद=प्रलय
अबलक़=मिश्री
अबलोच=मिश्री
अबादान=आबादी
अम्बा[illegible]=भरना
अम्बारियाँ=हाथी पर बाँधे जानेवाली
अम्बारी
अमद=ईश्वर
अम[illegible]=काम
अमल[illegible]=अच्छे काम
अमान=एक राजा का नाम जो नदी में
बह गया था
अभाल=बादल
अमोलक=अमूल्य
अयाँ=प्रकट
अरज़ों=रास्ता
अरडावता=तड़कता, पुकारता
अरवाह=आत्मा; रूह का बहुवचन
अर्श=ईश्वर का निवास स्थान
अरहम=रहम, कृपा
अलम=रंज, दुःख
अलमास=हीरा
अलहम्दुलिल्ला=सब तारीफ़ अल्ला के
लिए है
अला=ईश्वर
अली=उन्नतिशील
अलीम=जानकार
अलेक=सलाम
अलोनूर=बहुत ज्यादा प्रकाशवाला
अवचती=अच्छी लगती
अवलीच=अव्वल ही
असीर=क़ैदी, शिकार
असील=शीलवान
अहतयाज=आवश्यकता
अहमीर=लाल
अहल=अच्छा
अहवाल=हाल का बहुवचन
आजिज़=आज़िज़ी
आयत=कुरान की आयत
आमिल=आचरण करनेवाला
आमेज़=मिलना
आर=[illegible]

अरदास=प्रार्थना
आरूस=दुल्हन
आँव=आम
आशियाँ=घोंसला
आसेब=जादू
इताब=क्रोध
इबलीस=शैतान
इमाम=तसबी के समय फेरनेवाली माला के अन्त का एक लम्बा दाना
इरम=स्वर्ग
इल्हान=ध्वनि
इशतहा=भूख
इशरत=आनन्द
इस्म=नाम
उचालें=उठावें
उलंगता=पार होता
उलंगे=लांघ कर
उलाले=छाले, उत्साह
ऐन=आँख
ऐसी=एक पैगम्बर जिन्हें रूहे अल्ला भी कहते हैं
कऊँवा=कहलवा कर
ककर=कह कर
कचवाती=शरमाती
कज़ह=इन्द्र धनुष
कज़ा=तक़दीर, भाग्य
कड़कया=किनारा
कता=कहता
क़दर=भाग्य
कधन=अग्नि
कन=हर तरफ़
कन=से
कने=से
कब्ल=एक पक्षी

क़वी=शक्तिशाली
कबीर=बहुत बड़ा
क़य्यूस=क़ायम रहनेवाला
करतार=ईश्वर
करदन=करना
करम=कृपा
करम=मडल
क़रार=चैन
करीम=दाता, कृपालू
कल=बुद्धि
कलकला=शोर
कल्लाश=फ़क़ीर
कशफ़=प्रकट होना
क़स्द=इरादा
क़स्साब=बैल काटनेवाला
कह्हार=गालिब, सब से बढ़ कर क्रोधी
क़हर=क्रोध
कहक़शा=आकाशगंगा
क़ादिर=बनानेवाला
क़ाफ़=एक पहाड़
क़ाबिज़=परेशान करनेवाला
कामिल=अक़लमन्द
कार=काम
कालवे=नाले
कितल=थोड़ी देर में
किनें=किसे
किरमेज़ी=एक रंग
किश्त=खेती
की=क्यों, कहीं
कुतसी=हूर, अफसरा
कुदसी=परी, अफ़सरा
कुद्दूस-पवित्र
कुन्दनी=कष्ट होना
कुफ़्फ़ार=क़ाफिर का बहुवचन

कुबे=गुम्बद
कुमाश=स्वभाव के प्रकार
कुल=मिला कर
कुलंग=एक पक्षी
कुलाबरे-जंज़ीर
कुहतूर=तूर नामक पहाड़
कूँ=को
कून=भोजन
केरे=के पास
कोंद=दीवार
कोले-गीदड़
खज़ीने=ख़ज़ाना
खन्दा=हँसी
खन=खण्ड, पृथ्वी
खबीर=खबर रखनेवाला
खर=गधा
खरीत्याँ=थैलियाँ
खल्क=जनता
ख़लक़=ख़ुदा की पैदा की हुई चीज़ें
ख़लसत=स्वभाव
ख़लासी=छुटकारा
ख़लील=मित्र
ख्वान्दन=पढ़ना
खलसत=चरित्र
ख़ात्मा=समाप्त
ख़ामों=युवक का बहुवचन
ख़ार=दुःखी; ज़लील
ख़ारी=बदनामी
ख़ाला=मौसी
खिंग=घोड़ा
ख़िज़र=सिकन्दर की फौज का एक सिपाही
ख़िज़ाँ=पतझड़
ख़िलवत=एकान्त स्थान
ख़ीमे=डेरे
ख़ीश=आत्मीय
ख़ुम=बहुत
ख़ुमार=नशा
ख़ुर्रम=आनन्दित
ख़ुरश=दुःखी होना, गोली
ख़ुरसान=एक स्थान
ख़ुसरवी=बादशाही
ख़ुये=वीरता
ख़ूरेज़=ख़ून करनेवाला
ख़ूशा-गुच्छा
ख़ूसे=समूह
गज=हाथी
ग़ज़ब=क्रोध
गंज=ख़ज़ाना
ग़नी=सम्पन्न
गफ्फार=बख़शनेवाला
गफूर=बख़शनेवाला
ग़म्ज्यॉं=नखरे दिखाना
गर्क़=डूबा हुआ
गर्ज़बन्द=याचक
गर्ब=दरिद्र
गँवारा=भूला
गाँडे=गन्ना
गाब=गर्भ
गाल=गड़बड़
ग़ालिब=किसी को वश में करना
गावदी=गँवार
ग़ाशा=क़ालीन
गुज़न्द=बिना कष्ट के
गुड़=चुम्बन
गुदाज=डर जाना
गुफ्तन=कहना
गुल=फूल

गुलवाड़ी=रथ
गुश्तन=मुठभेड़
गुहर=मोती
गूँद=विचार करके
ग़ैब=गुप्त
गो=गेंद, गोला
ग़ोगा=शोर
गोहराँ=मोती
चक=ज़रा-सा
चिकल=दबा कर
चितार=उतार कर, चित्रित करके
चितारी=चित्रकार
चीला=तीर
चुक=थोड़ा
चुन=गिन कर
चुफत=चालाक
चुरगते=बोलते
चूक=त्रुटि
चौंफेर=चारों तरफ़
चौसार=हुश्यार
छन्द=धोखा, फरेब
छुर=छल
जट=शट, बुरा
जड़त=जड़ाऊ
जतारे=जानना
जपै=छिपे
जफ़ायाँ=ज़ुल्म
जब्बार=सख़्ती करनेवाला
जम=जामे जम, जमशीद
जन=सदा
ज़म-ज़म=मक्का के एक कुएँ का पवित्र
पानी
जय्यद=नेक, मनमोहक
ज़र=सोना
ज़रगराँ=सुनार
ज़रतीख़=ज़रीदार
जरबफ़त=जरीन कपड़ा
जलज़लाल=ईश्वर
जलाजल=एक मन्त्र
जलील=ईश्वर
जस=यश, कीर्ति
ज़हरा=एक नक्षत्र, एक गायिका का
नाम
जहाँगीर=संसार भर का विजेता
जाँ=जान
जाए=मारे, हमला किए
ज़ाद=सामान
ज़ाफरों=केसर
जाब=उत्तर, जवाब
जामे=जमा करनेवाला
ज़ार=कष्टदायक
जासी=जाएगा
जिबरील=एक फरिश्ता
ज़िबे=ज़बा करना, काटना
जिश्त=ख़राब
जुज़=पुस्तक
जुज़मा=मज़बूत
जुल्फक़ार=हज़रत अली की दो धारा
तलवार
जुहल=एक ग्रह, नक्षत्र
ज़ेब=जीभ
जेर दस्त=अधिकार में
जोड़ने=कड़ी
जोता=खोजता
जोता=रेगिस्तान
ज़ौक़=आनन्द
ज़ौक़=इच्छा, शौक़ से
झल=आग

झुंतळ्या=क्रोधित
झूटना=झूठ बोलना
झोरने=झेलने
टुट=किनारा
तक़वा=भरोसा
तक़वे=परहेज़गारी
तक़सीर=अपराध
तग़य्युर=बदल गया
तग़ाफ़ल=अनजान बन कर
तजल्ली=चमकनेवाला
तदी=तत्काल
तथाँ=तब से
तन्हाच=अकेला ही
तफ़लों=ढोल
तफ़ावत=फ़र्क़
तबक़=नव खण्ड
तबच=तश्तरी, किश्ती
तमा=तृष्णा
तर्ब=गाना
तलपट=नष्ट करना
तलासे=तलाश किए
तव्वाब=पश्चात्ताप को स्वीकार करने-
वाला
तवक्कल=ईश्वर पर विश्वास करना
तवाफ़=चक्कर करना
ताऊत=ताईद में
ताखीर=देरी
ताजिर=सौदागरी
ताज़ीम=खातिर तवाजो
तालीमखाना=मल्लशाला
तासीर=गुण
तूल=ज़ोर से
तेग़=तलवार
तौफ़ीक़=मदद, इरादा
थाँब=स्तंभ
दज्जाल=प्रलय के पूर्व आनेवाला
प्राणी विशेष
दबीर=कातिब; लिपिक
दंद=शत्रु
दंदी=शत्रु
दर=द्वार
दश्त=जंगल
दस्त=हाथ
दहन=दुख
दहलीज=चौखट
दाऊद=एक पैगम्बर
दाट=जल्दी
दाद=इन्साफ़
दायम=सदा
दिगर=अकेला
दिरम=कुतुबशाही वंश की तत्कालीन
मुद्रा
दिलबन्द=स्नेही
दिश्ट=नज़र
दीदार=दर्शन
दीस=दिन
दुम्बाल=पीछे पीछे
दुराही=हुकूमत, दुहाई, डौंडी
दुलदुल=हज़रतअली का घोड़ा
दूक=दुःख
देवाँ=बड़ा
दोनीम=टुकड़े
दोराना=बड़प्पन
धतरे=फ़रेब
धनक=चमकना
धरत=पृथ्वी
धात=प्रकार
धाँवँ=तरीक़ा

न्हाट=दौड़ कर
न्हास=दौड़ कर
नईं=नहीं
नख़्श=क्षमा करना
नख़्वाही=बेकार ही
नग्ज़=ख़ूब
नजिस=गंदा, अपवित्र
नदीम=मुसाहब, मित्र
नफ़र=सिपाही, सेवक
नफ़स=मित्र
नफ़ीरी=चाकरी
नमाशम=सायंकाल
नयाज़=नाज़ नखरे
नवाज़ूँगी=कृपा करूँगी
नस्ल=संतान
नसब=पारिवारिक परम्परा को बनाना
नसीम=प्रातःकालीन हवा
नहनवाद=बालक
नाजिल=देना
नातवानी=कमज़ोर
नाँद=तरह
नादनुक=प्यार से पालना
नाल=जूते के बराबर
नालबन्दी=कर देते हुए
नासिहाँ=नसीहत करनेवाला
निकबती=हिकमती
निकस=निशक्त
निगहदार=निगाह रखनेवाला
निझाने=झाँकने
निदा=आवाज़
निपंज=पैदाइश
निफ़ा=गौर से
निफ़ाक़=जुदाई
नियत=शोभायमान

निहाँ=गुप्त
नुक=थोड़ा सा
नूर=चमकदार
नूराँ=चमकनेवाला
नूह=आदम के बाद का दूसरा पैगम्बर
नेज़ा=भाला
नौखनी=नौ आसमान
नौखेज़=नया, नवीन
पखवे=गोद में
पत्या=भूतकाल की बातें
पत्यारा=विश्वास किया
पितयारा=विश्वास किया
पंजतन=पाँच
अली, मुहम्मद; फ़ातेमा, हसन और हुसेन
पंत=पूरा
पंद=शिक्षा, नसीहत
पलेटी=बदली
पशेमान=दुःखी
पा=हवा की तरह तेज़
पाड़=डाल कर
पातराँ=वैश्याएँ
पामाल=खराब चीज़ों को समाप्त कर देना
पिनाहाँ=गुप्त
पीक=उपज
पीरी=बुढ़ापा
पुंगडी=बच्चा
पैलाड़=परे
पौलाद=स्टील
फ़ड़े=पहाड़, पर्वत
फ़ज़ीहत=बुराई करना
फ़त्ताह=प्रकट करने वाला
फरंग=तलवार

फरह=शुभ
फ़ह्म=नया, शक
फहीम=जानकारी
फ़ाम=समझ, ज्ञान
फ़ाश=गुप्त बात का प्रकट होना
फाँसे=किरण
फितनी=उत्पत्ति
फेरोज=बहमनी शासक फेरोज़शाह
बक़ा=अमर
बख़्त=भाग्य
बख्शाये=क्षमा करे
बज्म=महफिल
बजकार=धृष्टता
बजिद्=मजबूरन
बजो=उस वक्त
बदी=आविष्कारक
बनी=जाति
बफ़त=वस्त्रों के प्रकार
बर्क़=बिजली
बर्ग=पत्ता
बर=पृथ्वी
बरस=अमूल्य
बलिक=यद्यपि
बशारत=खुश खबरी
बसर=आदमी
बसर=सिलसिले से
बसीर=देखनेवाला
बहर=दरया
बहरी=एक पक्षी
बहोड़=लौटना
बाई=बड़ा कुआ
बाज=तेरे सिवा, बिना
बातिन=गुप्त
बातिल्लुसिसहर=मन्त्र को तोड़ना

बाद=हवा
बाब=द्वार
बाया=विचार किया
बार=फल
बारा=हवा
बालिग़=युवक
बाव=बावली, पगली
बाव=हवा
बासफ़ा=पाक, पवित्र
बासिल=अन्नदाता
बिथर=बड़ा
बिर=चमकना
बिल्क्या=चतुरता से
बिलफेल=इस वक्त
बिस्मिल्ला=प्रारंभ अल्ला के नाम से
बुडप्पन=बुढ़ापा
बुरज=घर, क्षेत्र
बुराक=घोड़े और ऊँट की शक्ल का एक पशु जो बहुत तेज़ जाता है
बुलहसर=लालची
बेकम=मूर्ख
बेख़्त=बिना अभ्यास के
बेघात=कई प्रकार के
बेज़लाल=अवनति रहित
बेनियाज़ी=किसी के आगे हाथ न फैलानेवाला ईश्वर
बेपायाँ=अनन्त
बेस=दरवाज़ा, द्वार
बैट=बैठ
भ्याव=विवाह
भग्याँ=थक गया
भतराँ=बहुत
भान=बहन
भाव=चीज़, वस्तु

भिरकानें=फेंकने
भुईं=भूमि
भुली=भोली
भूमान=मर्यादा
मक़बात=प्रशंसा करना
मकर=ढोंग
मक़सूद=विचार करके; इच्छा से
मग़म=दुःखी (अरबी के मग़रम शब्द से)
मज़ाज़=मिज़ाज़ी; साधन
मज़ीद=ऊँची जात वाला
मतलूब=इच्छित वस्तु
मता=दौलत
मती=दृढ़
मद्दुआ=इच्छा
मन्धिर=मन्दिर
मनाजात=दुआ करना
मबही=सृजनहार
मबादा=शायद; सम्भवतः
मया=प्रेम, स्नेह, माया
मर्ग=मौत
मर=मर्द
मरजान=एक पेड़
मलक=फरिश्ता
मलालत=कष्टों के बाद
मलायक=फरिश्ता
मलून=शैतान
मलूल=दुःखी
मश्ताक=इच्छुक
मशक्क़त=मुसीबत
महतर=श्रेष्ठ
महतशम=बहुत बड़ा
महद=प्रशंसा
महर=प्रेम
महरम=जानकार, जिस से कोई बात गुप्त न हो
महशर=प्रलय
महाबत=धनी
महाल=मुश्किल, कठिन
माजिद=श्रेष्ठतम
माजिरत=क्षमा मांगना
माँदगी=बीमारी
मानी=बगदाद का प्रसिद्ध चित्रकार
माने=मना करनेवाला
माबूद=पैदा करनेवाला
मामूर=अपने काम में नियुक्त
मायावत=माया, ममता रखनेवाला
माराड्या=बाज़ार
मारिफत=इल्म, ज्ञान
माह=चाँद
माही=मछली
मिरीख़=मंगल तारा
मिश्क़=कस्तूरी
मिसकी=शान्त स्वभाव
मिहर=ममता
मुअख़्ख़र=अनन्त
मुजिज़ा=गुप्त बात
मुअम्मा=गुप्त
मुअल्ला=निराधार
मुअल्हिनम=गुरु
मुआश=जीवन का सहारा
मुइज़=इज्ज़त देनेवाला
मुए=मरे
मुसहफ़=कुरान
मुक़द्दम=अनादि
मुक़रब=इज्ज़तवाले
मुक़्क़सित=ताकतवर
मुक़सिम=बटवारा करनेवाला

मुगनी=निश्चिन्त
मुज़िल=जलील करनेवाला
मुजीब=दुआ को स्वीकार करने वाला
मुतरिब=गवैये
मुतीब=अमर
मुदा=प्रशंसा
मुदाम=सदा
मुनइम=नेकीदेनेवाला
मुनअम=धनी
मुनाजात=ईश्वर से प्रार्थना करना
मुबदल=बदलना
मुबम=अस्पष्ट शब्दों में कहना
मुमीत=मारने वाला
मुलम्मा=सोने का पानी
मुलाने=मुल्ला
मुवे=मृत
मुशारे=तरखा
मुस्तईद=तैयार
मुसताक़ी=आकाँक्षा रखना
मुस्तेज़ाब=स्वीकृत होना
मुसल्लम=पूरा
मुसल्ला=नमाज़ पढ़ने की दरी
मुहतशम=धनी
मुहरफ=आनन्दमयी
मुहसी=गिननेवाला
मुहिमिन=नज़र रखनेवाला
मुही=जीवित करनेवाला
मेराज़=सीढ़ी
मेंहू=इत्र
मैख्वार=शराबी
मोकला=खाली
मोद=तैयारी
मौज=लहरें
मौज=इरादा

मौतक़द=श्रद्धालू
यता=इतना
याफतन=पाना
युसुफ=मिश्र के एक पैगम्बर
रकात=नमाज़ पढ़ना
रगत=खून
रज़ा=इच्छा
रज़ाक़=अन्नदाता
रंजानता=रंजीदा करता
रब्त=सालीक़
रब=पालनहार
रमाल=ज्योतिष
रशीद=नेक राह पर चलने वाला
राँ=को
राजवट=राज पथ
राजोट=हुकुमत
राद=बिजली
राफ़े=उन्नति करने काला
रास्त=सत्य
रिज़्क़=रोज़ी
रीच=रीछ
रीज़=मैदान
रुकन=स्तम्भ
रुक़े=कागज़
रुच=इच्छा
रुस्तम=ईरान का एक वीर योद्धा
रुसवाई=बदनामी
रूद=नदी
रूफ=महरबान
रेज़्यों=कण, तिनका
ल्या=ले आया
ल्हवे=तलवार
लइ=बहुत
लई=चाँद के चारों ओर का घेरा

लक़ा=ऊँचा
लग=एक
लतीफ़=दूरदर्शी
लंग=लँगड़ा
लाफ़=झूठी प्रशंसा, अभिमान
लाले=एक फूल
ली=बहुत
लुक़मान=एक सर्वज्ञानी पैगम्बर
लुच=नगा
लुब्दाय=लुब्ध किया, मोहित करना
लोह=तख़्ती, स्लेट
वकद=अवस्था
वकद=ताकीद करना
वदूद=मित्र
वरद=खुश तबियत
वला=अच्छा फल लाएगा
वली=सहायक
वस्ल=मिलन
वसली=एक प्रकार का चिकना काग़ज़
वसाक=साथ
वहहाब=दाता
वही=ईश्वर की दी हुई जानकारी
वाख़ाना=हाल
वारिस=परम्परा को बनाए रखने वाला
वाहिद=एक
विपात=विपत्ती
विसाक़=आश्रित
वीच=वही
शफ़क़=प्राप्त होनी
शफ़क्क़त=महरबानी
शताब=जल्द
शादन=होना
शादीद=सब से ज्यादा करनेवाला
शफ़ाअत=ईश्वर की सिफारिश करने-वाला
शबाब=जवानी
शबिस्तान=संसार
शर्क=उत्तर दिशा
शर्जा=सिंह
शरजा=सिंह
शरफ़-इज्ज़त
शहबाज=बादशाह की तरह
शहाब=टूटता हुआ तारा
शातीर=संवाददाता
शाद=प्रसन्न
शाब=चमकनेवाला, (अरबी के शहाब शब्द से)
शाम=सीरिया देश
शिकम=पेट
शिताब=जल्दी
शिताल=जल्दी
शीर=दूध
शुआजत=वीरता
शुकूर=शुक्र गुज़ारों की इज्ज़त करने-वाला
शुजाअत=वीरता
सई=प्रयत्न
सँवर=फंसना
सकसी=सकेगा
सज़ावर=लायक़
सग=कुत्ता
सगट=एक साथ
सटती=फेंकती
सता=प्रशंसा
सत्तार=अपराध क्षमा करनेवाला
सद=प्रेम
संबक=छोटी किश्ती, नाव

सफ्क़=छत्त
सफ=जमात, गिरोह
सबील=प्रयत्न
सम=सम्मुख
समद=समुद्र
समा=आकाश
समी=श्रोता
समो=तालदेना
सरक=जाल
सरनविश्त=भाग्य का लिखा
सरअफ़राज=सेवा में
सरफ़राज़=दान; अहसान
सरू=सरोवर, सरु का वृक्ष
सरोदाँ=गायन
सलाम=रक्षक
सलासत=सुन्दर पद
सलीमी=नेकी
सवो=सौगन्ध
सहरा=रेगिस्तान
साकिन=निवास
साद=शुभ
सारने=अहसान मानना ज़रूरी है
सालिम=सब
सिफतें=गुण
सिफरील=एक फरिश्ता
सियासत=न्याय करके
सीन=घटनाएँ
सीम=चाँद
सुकिया=सुखी
सुखनगो=बात कहनेवाला
सुन्ना=सोना
सुंबला=एक नक्षत्र
सुम्बुल=एक फूल
सुम्बुलिस्तान=फूलों का बाग़

सुम=उदाहरण
सुल्स=उदाहरण (?) अच्छा
सुलेमान=एक पैगम्बर
सुर्ख़रु=खुश रहना
सूँ=सौगन्ध, क़सम
सूसन=पाना, प्राप्त करना
सेयुम=तीसरा
सोस्या=बीतना
सोसने=भोगने
सोसे=सहन किए
हई=अमर
हक़=ज़ाहिर बातिन की खबर रखने-वाला
हकीम=हुकुम करनेवाला
हज़=स्वाद
हँडे=घूमे
हफ्त=सात
हफ़नो=नया
हक़ीज़=नज़र रखनेवाला
हबीब=मित्र
हम=मुक़ाबले
हयात=जीवन
हरम=मकान का ज़नानी भाग
हलीम=ऊँची ज़ातवाला
हलीमी=कृपा
हवैदा=ज़ाहर
हश्म=क़िला; सेवक
हाजत=आवश्यकता
हातिफ=एक फरिश्ता जो गुप्त स्थान से आवाज़ देता है
हादी=मार्गदर्शक
हाफिज़=देखनेवाला
हाल=क्रोध
हिमानी=थैली

हिर्स=स्वार्थ
हिल्म=शान्ति
हिलम=दया
हिस=जानकारी
हीडे=मांस, गोश्त
हुच=एक पक्षी
हुजरे=मकान का एक हिस्सा
हुमा=एक पक्षी
हुरमत=इज्ज़त, प्रतिष्ठा
हैफ़=अफसोस
हैफी=अफसोस
होले=ओले